



तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

“
भिक्षु वाणी

जीव विमासी जोय तूं, विषय म राच गिवार।
थोड़ा सुखां रे कारण, मूरख घणा म हार।।

हे जीव! तू विचार कर देख, हे मूढ़!
विषय में आसक्त मत बन। थोड़े सुखों
के लिए बहुत सुखों को मत गवां।

- आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

● वर्ष 28 ● अंक 02 ● 12 अक्टूबर - 18 अक्टूबर 2026



प्रत्येक सोमवार

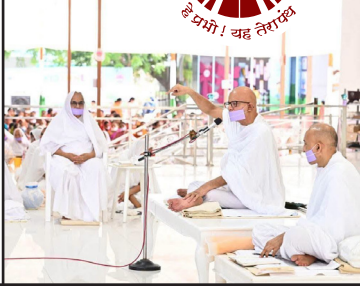
● प्रकाशन तिथि : 10-10-2026 ● पेज 20

₹ 10 रुपये



दुर्लभ है मनुष्य जन्म :
संयम और धर्म-श्रवण ही
है जीवन की असली पूँजी :
आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02



व्यापार में ईमानदारी और
परिवार में सहिष्णुता ही
है व्यावहारिक अहिंसा :
आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 20

Address
Here

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के तीसरे दिन 'साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस' पर पूज्यप्रवर का पावन पाथेय

“इंसान पहले इंसान, फिर हिंदू या मुसलमान”: आचार्यश्री महाश्रमण

TPF की 7वीं एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर्स कॉन्फ्रेंस में IAS कुलदीप रांका व वित्त मंत्रालय की डिप्टी सेक्रेटरी ने रखे विचार

लाडनू।

03 अक्टूबर, 2026

भगवान महावीर के प्रतिनिधि, शांतिदूत, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' के अंतर्गत तृतीय दिवस 'साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस' का गरिमामय आयोजन हुआ। इसके साथ ही तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) के तत्वावधान में सुधर्मा सभा भवन में 'सातवीं एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर्स कॉन्फ्रेंस' भी समायोजित हुई।

सत्य की खोज : विज्ञान और अध्यात्म का अनूठा संगम

१. स्वयं सत्य की खोज का आगमिक संदेश : पूज्यप्रवर ने मुख्य मंगल प्रवचन में आगमों का संदर्भ देते हुए फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है— 'स्वयं सत्य खोजें'। दूसरों की बात मानना अच्छा हो सकता है, परंतु स्वयं सत्य का साक्षात्कार करना सबसे ऊँची बात है। केवलज्ञान होने पर सब साक्षात् हो जाता है, परंतु वर्तमान में मति व श्रुत ज्ञान के सहारे यथार्थ को खोजने का प्रयास करना चाहिए।

“
गाय कोई भी हो दूध
सफेद है, पंथ कोई भी
हो खून लाल है।
इंसानियत ही मानव का
सबसे बड़ा धर्म है
-आचार्यश्री महाश्रमण

२. विज्ञान और अध्यात्म की समानता: पूज्यश्री ने फरमाया कि वैज्ञानिक भी यथार्थ की खोज करता है और धार्मिक जगत में भी यथार्थ का ही सर्वोच्च महत्त्व है। सत्य की खोज के धरातल पर विज्ञान और अध्यात्म एक-दूसरे के सहयोगी और पूरक बन सकते हैं। अध्यात्म जहाँ आत्म-कल्याण की बात करता है, वहीं विज्ञान में व्यावहारिक शोध होता है। सत्य की खोज के लिए मनुष्य का चिंतन आग्रह-हीन होना अनिवार्य है।

साम्प्रदायिक सौहार्द और गाय व रक्त का



**ईद पर मुस्लिम परिवार से गोचरी :
'नियम भी पूरे, मैत्री भी गहरी'!**

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने महाराष्ट्र (पिंपलनेर) प्रवास के दौरान ईद के पर्व पर मुस्लिम भाइयों से गोचरी (भिक्षा) ग्रहण कर सर्व-धर्म सम्भाव की मिसाल पेश की।

ईद पर आत्मीय निमंत्रण—

1. **महाराष्ट्र का प्रसंग :** महाराष्ट्र प्रवास के दौरान ईद के पर्व पर मुस्लिम भाइयों ने पूज्य आचार्य श्री को गोचरी के लिए अत्यंत भावपूर्ण और आत्मीयता से आमंत्रित किया।
2. **उदार दृष्टिकोण :** पूज्य प्रवर ने किसी भी प्रकार की संकीर्णता से ऊपर उठकर इस निमंत्रण को सहर्ष स्वीकार किया।

सिद्धांतों का पालन और समन्वय—

1. **शुद्धता का सिद्धांत :** आचार्य श्री ने स्पष्ट किया कि यदि भोजन पूर्णतः शुद्ध शाकाहारी है, तो किसी भी संप्रदाय के यहाँ से गोचरी लेने में कोई दोष नहीं है।
2. **मुनियों को निर्देश :** आचार्य प्रवर ने अपने मुनि वृंद को निर्देश दिया कि वे वहाँ से शुद्ध शाकाहारी गोचरी ग्रहण करें।

नियम भी सुरक्षित, मैत्री भी अटूट—

1. **संतुलन का संदेश :** आचार्य श्री ने बताया कि इस निर्णय से जैन धर्म के नियम भी पूर्णतः सुरक्षित रहते हैं और समाज में आपसी मैत्री व सौहार्द भाव भी सुदृढ़ होता है।

ऐतिहासिक दृष्टांत—

१. **अहिंसा व नैतिकता साझा दूध :** पूज्यप्रवर ने फरमाया कि दुनिया में अनेक धर्म और सम्प्रदाय हैं, जिनकी अपनी उपासना पद्धतियाँ हैं। परंतु अणुव्रत के सिद्धांत (ईमानदारी, प्रामाणिकता, अहिंसा) सार्वभौमिक हैं। पूज्यश्री ने अत्यंत प्रेरक दृष्टांत देते हुए फरमाया कि जैसे गाय अनेक रंगों

असंभव को संभव बनाता 'लाडनू दृष्टांत'

पूर्व और पश्चिम की ओर निकले साधु लाडनू में कैसे मिले? पूज्य गुरुदेव ने इस सुंदर उदाहरण से अध्यात्म और विज्ञान के बीच के अनोखे मेल को समझाया।

मुख्य बिंदु :

'लाडनू' का वो ऐतिहासिक दृष्टांत: जब विपरीत दिशाएँ एक हो गईं!

1. **दिशाओं का छलावा :** आचार्य श्री ने एक मर्मस्पर्शी उदाहरण देते हुए पूछा—यदि दो साधुओं में से एक को 'पूर्व' और दूसरे को 'पश्चिम' की ओर विहार करने का निर्देश मिले, तो सामान्य बुद्धि कहेगी कि वे जीवन भर कभी नहीं मिल सकते, क्योंकि उनके मार्ग एक-दूसरे से ठीक उल्टे हैं।
2. **मंज़िल की क्रांति (लाडनू का उदाहरण) :** लेकिन पूज्य गुरुदेव ने इस तर्क को पलटते हुए स्पष्ट किया कि यह धारणा तब पूरी तरह बदल जाती है जब गंतव्य तय हो! यदि पूर्व वाले साधु को भी 'लाडनू' पहुँचने को कहा जाए और पश्चिम वाले को भी 'लाडनू' ही जाना हो, तो अपनी-अपनी विपरीत दिशाओं में चलने के बावजूद दोनों अंततः एक ही बिंदु (लाडनू) पर आकर मिल जाएंगे!

अध्यात्म और विज्ञान का मेल: मार्ग अलग, लक्ष्य 'सत्य की खोज':

1. **समानता और असमानता:** आचार्य श्री ने स्पष्ट किया कि अध्यात्म और विज्ञान के बीच कहीं समानता है तो कहीं असमानता। यद्यपि दोनों की पद्धतियाँ और मार्ग अलग-अलग लग सकते हैं, किंतु यदि दोनों का अंतिम लक्ष्य 'सत्य की खोज' है, तो वे अंततः एक बिंदु पर अवश्य मिल सकते हैं।
2. **एक ही ध्येय:** जैसे विपरीत दिशाओं से चलने वाले साधु लाडनू पहुँचकर एक हो जाते हैं, वैसे ही विज्ञान और अध्यात्म भी सत्य के धरातल पर एक हो जाते हैं।

की हो सकती है परंतु उसका दूध हमेशा श्वेत ही होता है, और मनुष्य किसी भी जाति या सम्प्रदाय का

पड़ोसी सूँ रार अर भगवान सूँ प्यार? आचार्य श्री से सवाल—इंसान सूँ हेत बिना कीयाँ होवे भगती?

भगवान की भक्ति बहुत उत्तम है, पर पड़ोसी से झगड़ा और अशांति कैसी?

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरक पंक्तियों के माध्यम से इंसानियत, मैत्री और आपसी सौहार्द का अमर संदेश दिया:

**'क्या करेगा प्यार वह ईमान से,
क्या करेगा प्यार वह भगवान से।
जन्म लेकर गोद में इंसान की,
कर सका ना प्यार जो इंसान से।
इंसान से प्रेम और मैत्री का महत्व:**

1. **ईश्वर भक्ति उत्तम, पर व्यवहार भी ज़रूरी :** आचार्य श्री ने स्पष्ट किया कि भगवान की भक्ति करना बहुत अच्छी और उत्तम बात है, लेकिन अपने साथी इंसानों व पड़ोसी के साथ मित्रता न रखना या झगड़ा करना अनुचित है।
2. **व्यवहार की शुद्धता :** यदि कोई व्यक्ति एक तरफ भगवान की पूजा-अर्चना करता है और दूसरी तरफ समाज में अशांति फैलाता है या पड़ोसियों से लड़ता है, तो उसका आचरण धर्म के अनुकूल नहीं है।

इंसानियत ही सर्वोपरि धर्म —

1. **मानव जन्म की सार्थकता :** जो व्यक्ति इंसान के रूप में जन्म लेकर किसी इंसान के काम न आ सका या इंसान से प्रेम न कर सका, वह भला भगवान से क्या प्यार करेगा?
2. **मैत्री ही सच्ची पूजा :** आचार्य प्रवर ने फरमाया कि समाज में इंसानियत ही सर्वोपरि है और निष्काम मैत्री भाव ही जीवन का सच्चा आधार है।

हो उसका रक्त लाल ही होता है; ठीक उसी प्रकार अहिंसा और नैतिकता वह साझा दूध है जिससे जैन, सनातनी, मुस्लिम सभी सहमत हैं।

२. **पहले इंसान, फिर हिंदू या मुसलमान:** आचार्यश्री ने फरमाया कि धर्मगुरुओं का दायित्व है कि वे समाज को ईमानदारी और पारदर्शिता का मार्ग दिखाएँ। किसी का हक या संपत्ति हड़पने का प्रयास न हो। अणुव्रत का मूल संदेश भी यही है कि— 'इंसान पहले इंसान, फिर हिंदू या मुसलमान'।

सादा जीवन और उच्च विचार ही मानव जीवन का सच्चा श्रृंगार है। किसी भी ग्रंथ, पंथ या संत के पास कल्याणकारी बात मिले तो उसका आदर होना चाहिए।

(शेष पेज 17 पर)

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के चौथे दिन 'पर्यावरण शुद्धि दिवस' पर पूज्यप्रवर का आगमिक सम्बोधन

दुर्लभ है मनुष्य जन्म : संयम और धर्म-श्रवण ही है जीवन की असली पूँजी : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य प्रवर ने बिजली और पानी के विवेकपूर्ण उपयोग को बताया व्यावहारिक अहिंसा

लाडनू।

04 अक्टूबर, 2026

जन-जन के कल्याण में निरत, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' का चतुर्थ दिवस 'पर्यावरण शुद्धि दिवस' के रूप में सुधर्मा सभा भवन में अपार भावउल्लास के साथ आयोजित हुआ। इस पावन अवसर पर पूज्यप्रवर ने उत्तरज्झयणाणि आगम के पावन सूत्रों का आलम्बन लेते हुए समुपस्थित विशाल जन-समुदाय को अपनी ओजस्वी अमृत देशना प्रदान की।

उत्तरज्झयणाणि आगम: जीवन की चार अत्यंत दुर्लभ संपदाएँ—

१. मानुष्यत्व (दुर्लभ मनुष्य जन्म) : पूज्यप्रवर ने फरमाया कि इस संसार में चार चीजें अत्यंत दुर्लभ हैं—मानुष्यत्व, श्रुति (धर्म श्रवण), निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा, और संयम में पराक्रम। अनंत-अनंत काल से चौरासी लाख जीव योनियों में भटकते रहने के बाद भी अधिकांश जीवों को मनुष्य जन्म सुलभ नहीं होता। चारों गतियों में संज्ञी मनुष्य अत्यंत अल्प संख्या में हैं। आज हमें जो यह मनुष्य भव प्राप्त हुआ है, यह अनमोल और दुर्लभ अवसर है।

२. श्रुति (धर्म-श्रवण की सुलभता) : आचार्यश्री ने फरमाया कि मनुष्य जन्म मिलने के बाद दूसरी दुर्लभ बात है 'श्रुति' यानी सत्संग व धर्म का श्रवण। कई मनुष्य पंचेन्द्रिय होकर भी सुनने की क्षमता नहीं रखते, और जिनमें क्षमता है, वे भी प्रायः आलस्य, प्रमाद या संतों के प्रति अनासक्ति के कारण प्रवचन सुनने का लाभ नहीं उठा पाते।



सादा जीवन ही सच्चा श्रृंगार है; संसाधनों का अपव्यय बंद हो और अहिंसा व्यवहार में उतरे —आचार्यश्री महाश्रमण

साधु का व्याख्यान यदि एक घंटा भी सुन लिया जाए, तो उससे जीवन को सही दिशा और सर्वोत्तम पथ-दर्शन प्राप्त होता है। प्रवचन श्रवण से अनेक अनसुलझी जिज्ञासाओं का सहज और त्वरित समाधान प्राप्त हो जाता है।

३. श्रद्धा और संयम का पराक्रम : पूज्यश्री ने तीसरी दुर्लभ चीज 'श्रद्धा' को बताते हुए फरमाया कि निर्ग्रन्थ आगमों और वीतराग वाणी पर परम श्रद्धा होना सहज नहीं है। वहीं चौथी दुर्लभ बात संयम के पथ पर पराक्रम करना है। गृहस्थों में धर्म के प्रति श्रद्धा तो होती है, परंतु सांसारिक व पारिवारिक उत्तरदायित्वों और परिस्थितियों के कारण वे चाहकर भी पूर्ण संयमी जीवन नहीं जी

पाते। ऐसे में यदि किसी के भीतर श्रद्धा के साथ मुमुक्षुत्व भाव जागृत हो जाए और वह संयमी जीवन (दीक्षा) अंगीकार कर ले, तो यह महान सौभाग्य की बात है।

धर्म के दो रूप: काल-प्रतिबद्ध बनाम कालातीत धर्म—

१. समय और नियमों का विवेक: पूज्यप्रवर ने धर्म की अत्यंत सूक्ष्म और व्यावहारिक व्याख्या करते हुए फरमाया कि धर्म दो प्रकार का होता है—'काल-प्रतिबद्ध धर्म' और 'कालातीत धर्म'। सामायिक, पौषध, जप, स्वाध्याय आदि साधनाएँ काल-प्रतिबद्ध धर्म के अंतर्गत आती हैं, जिनके लिए एक निश्चित समय सीमा निर्धारित होती है।

२. जीवनभर आचरण में उतरने वाला कालातीत धर्म: आचार्यश्री ने स्पष्ट फरमाया कि कालातीत धर्म का पालन करने के लिए अलग से समय निकालने की कोई आवश्यकता नहीं होती। नशा-मुक्ति, मांसाहार का त्याग, असत्य और चोरी का सर्वथा त्याग—इन नैतिक नियमों का निष्ठापूर्वक पालन करना ही कालातीत धर्म है। यह चौबीसों घंटे मनुष्य

की जीवनशैली का हिस्सा बना रहता है। सामायिक का एक घंटा साधक को अनेक सावध (पाप) कार्यों और दुष्प्रवृत्तियों से सहज निवृत्त कर देता है।

पर्यावरण शुद्धि: अहिंसा का व्यावहारिक प्रयोग और साधु की पूँजी—

१. बिजली-पानी का संयम ही अहिंसा : पूज्यप्रवर ने 'पर्यावरण शुद्धि दिवस' के संदर्भ में फरमाया कि हमारे जीवन में अहिंसा, संयम और तप की त्रिवेणी निरंतर प्रवाहित होती रहनी चाहिए। अहिंसा की चेतना केवल बौद्धिक सिद्धांतों तक सीमित न रहकर दैनिक व्यवहार में स्पष्ट झलकनी चाहिए। बिजली और पानी का उपयोग अत्यंत संयमपूर्वक होना चाहिए; इनका थोड़ा-सा भी अपव्यय अहिंसा का अतिक्रमण है।

२. सादगीपूर्ण जीवन और साधु की असली पूँजी : पूज्यश्री ने फरमाया कि हमारी जीवनशैली सादगीपूर्ण होनी चाहिए। मनुष्य को बाहरी तड़क-भड़क, भौतिक पदार्थों की अंधी दौड़ और अपरिग्रह के विपरीत लालसाओं से बचना चाहिए।

आदेश एक, सस्पेंस अनेक 'गुलाब सती' का वो प्रेरक प्रसंग!

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'गुलाब सती' के बाल्यकाल से जुड़ा एक अत्यंत प्रेरक और शिक्षाप्रद प्रसंग फरमाते हुए जीवन में अनुशासन और आज्ञा-पालन का गहरा महत्व रेखांकित किया।

१. आज्ञा और अनुशासन की प्रतिमूर्ति : पूज्य प्रवर ने फरमाया कि गुलाब सती अपने बाल्यकाल से ही अद्भुत आज्ञा-पालन और अनुशासन का अनूठा उदाहरण थीं।

२. निष्ठा और समर्पण का प्रसंग: बाल्यकाल में जब उन्हें एक विशिष्ट स्थान पर बैठने का निर्देश दिया गया, तो उन्होंने पूर्ण निष्ठा के साथ उस आज्ञा का पालन किया। वे तब तक अपने स्थान से नहीं उठीं, जब तक कि उन्हें पुनः उठने का विशेष आदेश प्राप्त नहीं हुआ।

३. जीवन का महामंत्र : इस प्रसंग के माध्यम से आचार्यश्री ने संदेश दिया कि यदि बाल्यकाल से ही गुरुजनों एवं बड़ों की आज्ञाकारिता के संस्कार आ जाएं, तो व्यक्ति भविष्य में एक महान और विशिष्ट व्यक्तित्व के रूप में विकसित हो सकता है।

नवदीक्षित समणी वृंद की अंग्रेजी में प्रस्तुति व मासखमण तप—

१. वैश्विक भाषा में प्रवचन का सार : मुख्य मंगल प्रवचन के उपरांत पूज्य आचार्यश्री के विशेष निर्देशानुसार, विगत दो-तीन वर्षों में दीक्षित हुई नवदीक्षित समणी वृंद ने आज के सम्पूर्ण प्रवचन के मुख्य बिंदुओं का सार अत्यंत प्रभावी ढंग से २-३ मिनट में अंग्रेजी (English) भाषा में गुरुदेव के चरणों में प्रस्तुत किया, जिसे उपस्थित जनसमूह ने भूरी-भूरी सराहना प्रदान की।

२. मासखमण तप का प्रत्याख्यान : कार्यक्रम के दौरान जोधपुर निवासी हर्षिता किशोर मनोत ने पूज्य आचार्यश्री के श्रीमुख से २७ दिन की कठिन तपस्या (मासखमण) का भावपूर्ण प्रत्याख्यान (संकल्प) ग्रहण कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

'विवेगे धम्म माहिये' ओरल क्विज़ में अर्हम ग्रुप बना विजेता

टिटलागढ़।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार चातुर्मास 'विवेगे धम्म माहिये' विषय पर तेरापंथ महिला मंडल टिटलागढ़ के द्वारा ओरल क्विज़ प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन

किया गया। नमस्कार महामंत्र एवं मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

अध्यक्ष भावना जैन ने सभी का स्वागत करते हुए प्रतियोगी बहनों को शुभकामना दी। बहनों के चार ग्रुप बनाए गए थे: अर्हम

ग्रुप में तमन्ना और प्रिया, महाश्रमण ग्रुप में दीपिका और पूनम, भिक्षु ग्रुप में पायल और सोनू, महावीर ग्रुप में पूजा और लक्ष्मी। कुल आठ बहनों ने प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। यह प्रतियोगिता तीन राउंड में कराई गई - फर्स्ट राउंड क्वेश्चन आंसर, सेकंड राउंड सही-

गलत और थर्ड राउंड में कविता या अनुच्छेद के माध्यम से 50 से 100 शब्द के अंदर अपना आंसर देना था। महिला मंडल की मंत्री पूजा जैन ने सभी प्रतियोगियों को नियम समझाया एवं पूजा जैन ने बहुत सुंदर एवं व्यवस्थित तरीके से इस प्रतियोगिता को खिलाया।

बहनों ने पूरे उत्साह एवं उमंग से प्रतियोगिता में भाग लिया, बहनों की बहुत अच्छी तैयारी थी।

प्रतियोगिता की जज संतोष जैन एवं स्नेहा जैन थीं। कुशल संचालन एवं आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष बिंदिया जैन ने किया।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के छठे दिन 'अनुशासन दिवस' पर ज्योतिचरण की मंगल देशना

'अनुशासन में केवल कठोरता नहीं, करुणा और वात्सल्य का संगम भी ज़रूरी' : आचार्यश्री महाश्रमण

मुनि भरत कुमार जी ने किया मासखमण तप का प्रत्याख्यान

लाडनूँ।

06 अक्टूबर, 2026

लाडनूँ की पावन धरा पर स्थित जैन विश्व भारती परिसर में योगक्षेम वर्ष हेतु प्रवास कर रहे जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी आप्त पुरुषों की वाणी से चतुर्विध धर्मसंघ को अध्यात्म रस से आप्लावित कर रहे हैं।

'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' के अंतर्गत छठा दिन 'अनुशासन दिवस' के रूप में सुधर्मा सभा भवन में अपार भाव-उल्लास और गरिमा के साथ आयोजित हुआ।

स्वानुशासन और परानुशासन का संतुलन : लोकतंत्र व संविधान का मेरुदंड -

१. खुद अनुशासित होकर ही दूसरों को दे सकते हैं दिशा : पूज्यप्रवर ने मुख्य मंगल प्रवचन में फरमाया कि अनुशासन के दो प्रमुख आयाम होते हैं—एक आत्मानुशासन (स्वानुशासन/निज प्रशासन) और दूसरा परानुशासन। दूसरों पर अनुशासन करना उपयोगी हो सकता है, परंतु उसके लिए स्वयं का अनुशासित होना सर्वाधिक अपेक्षित है। जो व्यक्ति स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख सकता, वह दूसरों पर प्रभावी अनुशासन कैसे कर सकेगा? अनुशासन की शुरुआत सदैव स्वयं से होनी चाहिए।

२. संविधान, न्यायपालिका और निष्पक्षता : आचार्यश्री ने स्पष्ट फरमाया कि दुनिया की कोई भी शासन व्यवस्था हो—राजतंत्र हो या लोकतंत्र—सभी में अनुशासन अनिवार्य है। कर्तव्य और अनुशासन के बिना लोकतंत्र का देवता विनाश को प्राप्त हो सकता है। किसी भी देश या संस्था का संविधान उसका मेरुदंड (रीढ़ की हड्डी) होता है। न्यायपालिका और दंड संहिता लोगों की भलाई व व्यवस्था बनाए रखने के लिए होती हैं, अन्यथा अराजकता फैल

दूसरों पर शासन करने से पहले स्वयं को अनुशासित करना आवश्यक है

—आचार्यश्री महाश्रमण

सकती है। अनुशासन में निष्पक्षता, निर्लोभता, निर्भीकता और विवेक का होना अनिवार्य है ताकि नियम सबके लिए समान रहें।

तेरापंथ धर्मसंघ की अनुशासन परंपरा : कड़ाई के साथ करुणा और वात्सल्य—

१. आचार्य भिक्षु से चली आ रही स्वर्णिम परंपरा : आचार्यश्री ने फरमाया कि तेरापंथ धर्मसंघ में अनुशासन का क्रम आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु के समय से चला आ रहा है और आज भी निरंतर प्रवाहित हो रहा है। अनुशासन का अर्थ केवल कड़ाई नहीं, बल्कि उसके साथ करुणा और वात्सल्य भाव का पुट होना भी अत्यंत आवश्यक है।

२. एक आज्ञा में उच्च शिक्षित साधु-साध्वी : पूज्यश्री ने फरमाया कि हमारे धर्मसंघ में साधु-साध्वियों का जीवन पूर्ण अनुशासित है। कोई साधु-साध्वी या समणी कितनी भी उच्च शिक्षित हो, पीएचडी/डॉक्टरेट उपाधि धारक हो या प्रखर वक्ता हो—सभी एक ही अनुशासन और एक आचार्य की आज्ञा-निर्देश के अंतर्गत गतिमान रहते हैं।

गुरु की आज्ञा का पालन और परस्पर सहयोग हमारे संघ की बहुत बड़ी विशेषता है। 'परस्परपग्रहो जीवानाम्' का सूत्र हमारे लिए सुंदर मार्गदर्शक है। गृहस्थों को भी शांति व मृदुता के साथ मैत्रीपूर्ण अनुशासन का पालन करना चाहिए।

सूरजमल तापड़िया विद्यालय के विद्यार्थियों का संकल्प व संस्कृत भाषण:

१. छात्रों ने अंगीकार किए

अणुव्रत संकल्प : कार्यक्रम के अवसर पर सूरजमल तापड़िया संस्कृत विद्यालय के विद्यार्थी एवं शिक्षकगण उपस्थित रहे। विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर के चरणों में उपस्थित होकर नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति के अणुव्रत संकल्प स्वीकार किए।

२. संस्कृत में ओजस्वी सम्भाषण: विद्यालय के छात्र भैया देवेश वासु ने पूज्यश्री के समक्ष संस्कृत भाषा में अत्यंत प्रभावकारी और सुंदर भाषण प्रस्तुत किया।

ग्रंथ लोकार्पण, मासखमण तपस्या व 'बोधि सम्मान' अलंकरण—

१. पुस्तक का लोकार्पण : पाली निवासी विजय कृष्ण नाहर ने अपनी शोधपूर्ण कृति 'ज्योति पुरुष महर्षि जयाचार्य' पूज्य आचार्यश्री के चरणों में लोकार्पित की और अपने विचार व्यक्त किए।

२. मुनि श्री द्वारा मासखमण तप: सुधर्मा सभा में मुनि भरत कुमार जी ने पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से २७ दिन की तपस्या (मासखमण) का भावपूर्ण प्रत्याख्यान ग्रहण कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

३. 'बोधि सम्मान' (भंवरलाल कर्णावट फाउंडेशन, राजसमंद): स्वर्गीय भंवरलाल जी कर्णावट की स्मृति में स्थापित 'भंवरलाल कर्णावट फाउंडेशन, राजसमंद' द्वारा समाज के दो प्रतिष्ठित श्रावकों को 'बोधि सम्मान' से अलंकृत किया गया: पदमचंद पटावरी (राजसमंद): इन्हें 'बोधि सम्मान २०२५' से अलंकृत किया गया।

यह सम्मान उन्हें तेरापंथ धर्मसंघ में पाँच दशकों से अधिक के समर्पण, अभातेयुप (ABTYP) तथा अन्य संस्थागत सेवाओं के लिए प्रदान किया गया। विजय कृष्ण नाहर (पाली): इन्हें 'बोधि सम्मान २०२६' प्रदान किया गया। यह सम्मान उन्हें उनके साहित्य लेखन, इतिहास संरक्षण और विशेष रूप से तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यों पर लिखी शोधपूर्ण पुस्तकों के लिए दिया गया।



'जब मंच पर आचार्य तुलसी थे, और युवाचार्य ने सिखाया अनुशासन!' 'Discipline First! ...

पूज्य प्रवर ने पूज्य गुरुदेव तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के साथ बिताए संस्मरणों को याद करते हुए अनुशासन और मर्यादा के महत्व पर गहरा प्रकाश डाला।

१. अनुशासन और वात्सल्य का संगम: पूज्य प्रवर ने फरमाया कि आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी के व्यक्तित्व में अनुशासन के साथ-साथ अपार वात्सल्य, प्रेम और करुणा का अनूठा समन्वय था।

२. दिल्ली मर्यादा महोत्सव का प्रसंग: आचार्य श्री ने संस्मरण सुनाया कि दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम के दौरान जब पूज्य आचार्य श्री तुलसी मंच पर विराजमान थे, तब कुछ गृहस्थों द्वारा अनुशासनहीनता दिखने पर युवाचार्य महाप्रज्ञ जी ने शालीनता

किंतु दृढ़ता से टोकते हुए मंच से ही अनुशासित रहने का कड़ा संदेश दिया था।

३. संघ अनुशासन के लिए कठोर निर्णय : लाडनूँ के एक प्रसंग का उल्लेख करते हुए फरमाया कि संघ की मर्यादा बनाए रखने के लिए आचार्य महाप्रज्ञ जी ने नियम उल्लंघन पर एक साधु का संघ से संबंध विच्छेद तक कर दिया था।

४. संदेश: संघ में शिथिलता या अराजकता न आए, इसके लिए अनुशासन की डोर मजबूत होना अनिवार्य है। आचार्यों की कार्यशैली कोमल या कठोर हो सकती है, पर मूल उद्देश्य संघ की गरिमा और मर्यादा को सुरक्षित रखना ही होता है।

'परीक्षा में Cheating नहीं, Character चाहिए...

आचार्य प्रवर ने लकड़हारे और यक्ष के प्रेरक दृष्टांत के माध्यम से विद्यार्थियों को ईमानदारी और स्वाभिमान का पाठ पढ़ाया।

१. ईमानदारी की परीक्षा : जंगल में लकड़ियाँ काटने वाले एक बालक की कुल्हाड़ी नदी में गिर गई। रोते हुए बालक की मदद के लिए वृद्ध वेश में यक्ष प्रकट हुए। यक्ष ने पहले सोने और फिर चांदी की कुल्हाड़ी निकाली, लेकिन बालक ने उन्हें लेने से साफ इंकार कर दिया।

२. स्वाभिमान की मिसाल : जब यक्ष ने मूल लोहे की कुल्हाड़ी निकाली, तो बालक ने उसे पहचान लिया।

बालक की अटूट ईमानदारी से प्रसन्न होकर यक्ष ने सोने-चांदी की

कुल्हाड़ियाँ भी उसे देनी चाहीं, पर बालक ने कहा—'मैं केवल अपनी मेहनत की कमाई से ही गुजारा करूँगा।'

३. परीक्षा में नकल से बचें : आचार्य प्रवर ने विद्यार्थियों से कहा कि परीक्षा में नकल या किसी अनुचित साधन से अंक पाने के बजाय अपनी मेहनत और सच्चाई पर भरोसा रखें।

४. विद्यार्थियों को दिलाई ३ पावन प्रतिज्ञाएँ:

सद्भावना: सभी के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करना।

नैतिकता : जीवन में ईमानदारी का पालन करना।

नशामुक्ति : कभी भी किसी प्रकार के नशे का सेवन न करना।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के पाँचवें दिन 'नशा मुक्ति दिवस' पर पूज्य प्रवर की अमृत देशना

'धागा टूटे तो जुड़ जाए, जीवन टूटे तो नहीं': नशा छोड़ अपनाएँ अणुव्रत': आचार्यश्री महाश्रमण

मुनि नमिकुमार जी ने 44 की तपस्या का लिया प्रत्याख्यान



लाडनू।

05 अक्टूबर, 2026

भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अखंड परिव्राजक, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी आगम वाणी के माध्यम से जन-जन को आध्यात्मिक अभिसिंचन प्रदान कर रहे हैं। 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' के अंतर्गत आज पंचम दिवस पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में 'नशा मुक्ति दिवस' के रूप में सुधर्मा सभा भवन में गरिमायुक्त वातावरण के साथ समायोजित हुआ।

उत्तरज्ज्ञयणाणि आगमः जीवन-रूपी धागा और धर्माचरण की सक्षमता—

१. अनमोल जीवन और बुढ़ापे की लाचारी : पूज्यप्रवर ने मुख्य मंगल प्रवचन में फरमाया कि मनुष्य जीवन मिलना अत्यंत महत्वपूर्ण बात है, परंतु जीवन रूपी धागा यदि एक बार टूट जाए तो उसे दोबारा जोड़ना संभव नहीं है। यदि व्यक्ति वृद्धावस्था से ग्रस्त हो जाए तो उसका कोई त्राण नहीं रहता। जो युवावस्था में सबके आकर्षण का केंद्र था, वृद्धावस्था में उसे सेवा करने वाला मिलना भी कठिन हो जाता है।

२. तीन बाधाओं से पूर्व साध लें जीवन : शास्त्र का हवाला देते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि जब तक शरीर में सक्षमता है, तब तक धर्माचरण कर लेना चाहिए। शरीर की सक्षमता में

नशा आत्मा और परिवार दोनों का विनाशक है। यह मनुष्य को मूढ़ बनाकर पापाचार और दुर्गति में धकेलता है

—आचार्यश्री महाश्रमण

तीन मुख्य बाधाएँ हैं—बुढ़ापा, व्याधि (बीमारी) और इंद्रियहीनता। जब तक बुढ़ापा पीड़ित न करे, शरीर रोगग्रस्त न हो और इंद्रियाँ क्षीण न हों, उससे पूर्व ही धर्म, सेवा कार्य और लंबी आध्यात्मिक यात्राएँ कर लेनी चाहिए।

नशा मुक्ति दिवसः प्रमाद, पापकर्म और अणुव्रत का संकल्प—

१. नशा है आत्मा व परिवार का विनाशक : पूज्यश्री ने फरमाया कि नशा भी प्रमाद का ही एक उग्र रूप है। नशे की गिरफ्त में आने के बाद व्यक्ति मूढ़ (विवेकहीन) हो जाता है, जिससे वह पापाचार और दुर्गति के मार्ग पर चला जाता है।

नशे की जकड़न ऐसी बनती है कि व्यक्ति चाहकर भी इससे निकल नहीं पाता। नशा न केवल आत्मा का पतन करता है, बल्कि शारीरिक, आर्थिक और पारिवारिक तबाही का कारण बनता है।

२. अणुव्रत का नशा-मुक्त अभियान : आचार्यश्री ने परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी के योगदान का स्मरण

करते हुए फरमाया कि गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से जन-जन को संयम की प्रेरणा देकर नशा-मुक्त बनाया। अणुव्रत की संकल्पत्रयी (सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति) में भी नशामुक्ति प्रमुख है। जैन और अजैन—सभी को नशामुक्ति की ओर ध्यान देना चाहिए। गृहस्थों का जीवन पूर्णतः नशा-मुक्त और संयममय होना चाहिए।

चारित्रात्माओं को अप्रमाद की प्रेरणा व अतिथियों के विचार—

१. साधु जीवन में प्रमाद का स्थान नहीं : पूज्यप्रवर ने उपस्थित विशाल श्रमण-श्रमणी वृंद को सम्बोधित करते हुए फरमाया कि साधु जीवन में प्रमाद के लिए कोई स्थान नहीं है। साधु का समय स्वाध्याय, जप, ध्यान और परोपकार में बीतना चाहिए। जैसे दान से हाथ शोभित होते हैं, वैसे ही हाथ में आगम या ज्ञान का ग्रंथ होने से हाथ की शोभा बढ़ती है। इस दुर्लभ अवसर का लाभ उठाकर अप्रमाद की स्थिति को पुष्ट करना चाहिए।

२. अतिथियों के विचार : कार्यक्रम में लाडनू अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल बैद एवं सुभाष स्कूल के डायरेक्टर रामगोपाल मील ने पूज्यश्री के चरणों में अपने भावपूर्ण विचार रखे।

तपस्या का प्रत्याख्यान :

मुनि नमिकुमार जी द्वारा ४४ की तपस्याः पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से मुनि नमिकुमार जी ने ४४ की कठिन तपस्या का भावपूर्ण प्रत्याख्यान ग्रहण किया।

'मांग वेतन बढ़ाने की थी... और कटघरे में आ गया नशा!'

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने एक रोचक दृष्टांत के जरिए नशामुक्ति और आर्थिक स्वावलंबन का प्रेरक संदेश दिया।

१. मजदूरों की गुहार और समस्या: एक प्रभावशाली संत के प्रवचन के उपरांत कुछ मजदूर अपनी आर्थिक तंगी और गरीबी का रोना लेकर उनके पास पहुंचे। उन्होंने अपनी व्यथा सुनाते हुए कहा कि सरकार द्वारा मिलने वाला वेतन उनके परिवार के गुजारे के लिए बहुत कम है। मजदूरों ने संत से करबद्ध प्रार्थना की कि वे अपने प्रभाव का उपयोग कर सरकार से उनका वेतन बढ़वाने में मदद करें।

२. संत का तीखा प्रश्न और आईना: संत ने मजदूरों की बात को पूरी सहानुभूति से सुना और सच्चाई जानने के लिए उनसे एक सवाल किया—'क्या आपमें से कोई शराब, बीड़ी, सिगरेट या तंबाकू का सेवन करता है?' यह सुनते ही अधिकांश मजदूरों ने हाथ उठाकर स्वीकार किया कि वे इनमें से किसी न किसी नशे

के आदी हैं। इस पर संत ने उन्हें सच्चाई का आईना दिखाया।

३. गरीबी का असली कारण: संत ने स्पष्ट शब्दों में समझाया कि उनकी तंगी का मूल कारण कम वेतन नहीं, बल्कि उनकी अपनी बुरी आदतें हैं। जो पैसा वे दिन-रात पसीना बहाकर कमाते हैं, उसका एक बड़ा हिस्सा नशे और व्यसनो में बर्बाद कर देते हैं। यदि वे नशा करना छोड़ दें, तो उनकी आर्थिक स्थिति बिना वेतन बढ़ाए भी स्वतः सुधर जाएगी और उन्हें किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा।

४. आचार्य श्री का पावन संदेश: आचार्य प्रवर ने इस दृष्टांत के माध्यम से फरमाया कि नशा केवल स्वास्थ्य और परिवार को तबाह नहीं करता, बल्कि आर्थिक बर्बादी का भी सबसे बड़ा कारण बनता है। इंसान अक्सर खुद गलत आदतों से गरीबी को पालता है और दोष दूसरों पर मढ़ता है। जीवन में बदलाव लाने के लिए व्यक्ति को स्वयं अपनी आदतों, व्यसनो पर नियंत्रण पाना होगा।

जब 100% Correct Homework पर भी बालक रो पड़ा...

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने ईमानदारी और सच्चरित्रता के महत्व को रेखांकित करते हुए एक अत्यंत प्रेरणादायक दृष्टांत फरमाया।

१. शिक्षक का होमवर्क और पुरस्कार : दीपावली की छुट्टियों के बाद जब एक शिक्षक ने कॉपियाँ जाँचीं, तो एक बालक के सभी उत्तर बिल्कुल सही पाए गए। प्रसन्न होकर शिक्षक ने उसे कक्षा में पुरस्कार देने की घोषणा की।

२. बालक के आँसू और कड़वा सच : पुरस्कार की घोषणा सुनते ही वह बालक रोने लगा। उसने अत्यंत ईमानदारी से स्वीकार किया कि सारे उत्तर उसके स्वयं के थे, लेकिन एक सवाल न आने पर उसने अपने बड़े भाई की मदद

ली थी। उसने कहा कि वह इस पुरस्कार का सच्चा हकदार है या नहीं, इसका निर्णय शिक्षक स्वयं करें।

३. सच्चाई का सम्मान : बालक की निष्कलता और सच्चाई से अभिभूत होकर शिक्षक ने कहा—'अब मैं तुम्हें उत्तरों के लिए नहीं, बल्कि तुम्हारी इस अद्भुत ईमानदारी के लिए पुरस्कार दूंगा।'

४. आचार्यश्री का पावन संदेश: आचार्य प्रवर ने फरमाया कि जीवन में केवल सफलता या अंक (Marks) पाने की दौड़ में भागने के बजाय ईमानदारी और उच्च नैतिक मूल्यों को अपनाया कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। सच्चा सम्मान अंकों से नहीं, बल्कि सच्चरित्रता से मिलता है।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में

युवा शक्ति, संगठन के केंद्र 'युवालोक' का भव्य शुभारंभ

जयपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, उधना द्वारा युवाओं की ऊर्जा, संगठनात्मक गतिविधियों एवं रचनात्मक विचारों को एक सशक्त मंच प्रदान करने के उद्देश्य से नवनिर्मित 'युवालोक' का भव्य शुभारंभ तेरापंथ भवन, उधना में हुआ।

इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट की गरिमामय उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष गौरव एवं ऊर्जा प्रदान की।

कार्यक्रम को साध्वीश्री डॉ. परमयशजी ठाणा-4 का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। साध्वीश्री के मंगलमय सान्निध्य से 'युवालोक' का शुभारंभ आध्यात्मिक ऊर्जा एवं मंगलभावों से ओतप्रोत हो उठा। कार्यक्रम का शुभारंभ जैन संस्कार विधि के अनुसार संस्कारक अर्जुन मेडतवाल, दिनेंद्र चंडालिया,



नेमीचंद कावड़िया एवं अनिल सिंघवी द्वारा विधिवत मंत्रोच्चार एवं मंगलभावों के साथ संपन्न हुआ। जैन संस्कार विधि की पवित्रता एवं आध्यात्मिक वातावरण ने इस नवीन केंद्र के शुभारंभ को और अधिक मंगलमय बना दिया।

कार्यक्रम में अभातेयुप में उपाध्यक्ष-3 संदीप हिंगड़, सह संगठन मंत्री-1 विनय लिंगा, सह संगठन मंत्री-2 महेश परमार, तेरापंथ टाइम्स संपादक

जयेश मेहता, सरगम प्रवृत्ति सलाहकार सुनील चंडालिया एवं अर्पित नाहर सहित अभातेयुप परिवार की गरिमामय उपस्थिति रही।

इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष पवनजी मांडोट ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में 'युवालोक' को केवल एक भौतिक परिसर न मानकर युवाओं की ऊर्जा, चिंतन, संस्कार एवं संगठनात्मक विकास का केंद्र बनाने की प्रेरणा दी।



उन्होंने युवाओं को संगठन के प्रति समर्पित रहते हुए सेवा एवं सकारात्मक नेतृत्व के माध्यम से समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपनी प्रभावी भूमिका निभाने का आह्वान किया।

उधना शाखा प्रभारी कुलदीप कोठारी एवं परिषद अध्यक्ष मनीष कावड़िया ने भी अपने भावपूर्ण उद्बोधन के माध्यम से 'युवालोक' के निर्माण एवं शुभारंभ से जुड़े संकल्पों, सहयोग एवं भविष्य

की गतिविधियों पर अपने विचार व्यक्त किए।

'युवालोक' का यह शुभारंभ तेरापंथ युवक परिषद, उधना की संगठनात्मक यात्रा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। यह परिसर आने वाले समय में युवाओं के लिए विचारों का मंच, संस्कारों का केंद्र, सेवा का माध्यम और संगठन की नई ऊर्जा का आधार बने—इसी मंगलभाव के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

ABTYP की 'Mobile Blood Donation Van' का शुभारंभ

पुणे।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की ओर से रक्तदान सेवा को और अधिक व्यापक एवं सुलभ बनाने के उद्देश्य से तैयार की गई अत्याधुनिक 'ब्लड मोबाइल वैन' का शुभारंभ पुणे में जैन संस्कार विधि के साथ उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम का आयोजन अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के उपाध्यक्ष-चतुर्थ कमलेश भंसाली की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुंबई ब्लड बैंक कन्वीनर रौनक कोठारी की विशेष उपस्थिति रही। श्रमण संघ उपप्रवर्तक मुनि नरेश कुमारजी ने अपने मंगल उद्बोधन में रक्तदान एवं मानव सेवा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इस पहल को समाजोपयोगी और प्रेरणादायी बताया। कार्यक्रम के अंत में मुनि श्री द्वारा मंगल पाठ प्रदान किया गया। यह ब्लड मोबाइल वैन महाराष्ट्र की पुण्यनगरी पुणे स्थित महाराष्ट्र शासन संचालित कमला नेहरू अस्पताल के कै. मधुकर सखाराम बीडकर ब्लड सेंटर को विधिवत् सुपुर्द की गई। यह वैन रक्त संग्रह

अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित
वैन कमला नेहरू अस्पताल के बीडकर
ब्लड सेंटर को अर्पण

के लिए आवश्यक आधुनिक संसाधनों और सुविधाओं से पूरी तरह सुसज्जित है। इसके माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में जाकर रक्तदान शिविर आयोजित करने तथा जरूरतमंद मरीजों के लिए रक्त उपलब्ध कराने की मुहिम को और गति मिलेगी। कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य अतिथियों एवं समाजजनों ने मोबाइल वैन का अवलोकन किया और अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की इस सेवा पहल की सराहना की। कार्यक्रम में जैन संस्कार विधि की विशेष प्रस्तुति भी आकर्षण का केंद्र रही। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष, भिक्षु मेमोरियल ट्रस्ट अध्यक्ष, महिला मंडल मंत्री सहित विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

तेरापंथ युवक परिषद, पुणे के अध्यक्ष मनीष भंडारी ने सभी अतिथियों, पदाधिकारियों और सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक पद्धति है प्रेक्षाध्यान

कटिहार।

मुनि प्रशांत कुमार, मुनि कुमुद कुमार के सानिध्य में प्रेक्षा प्रशिक्षक मंजू सिपाणी (कोलकाता) के निर्देशन में तेरापंथ सभा कटिहार की ओर से प्रेक्षाध्यान कार्यशाला आयोजित हुई। कार्यशाला को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमार ने कहा - प्रेक्षाध्यान में जीवन विकास के प्रयोग है। ये आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक पद्धति है। इससे जीवन एवं विचारधारा में परिवर्तन आता है। इसमें उपदेश नहीं प्रयोग है। प्रेक्षाध्यान आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की देन है। उन्होंने वर्षों तक ध्यान के विविध प्रयोग करके गहरा अनुभव प्राप्त किया। आगम सूत्रों में अनेकों जगह ध्यान के बारे में तत्व

उपलब्ध थे उन्हें व्यवस्थित रूप देकर प्रेक्षाध्यान प्रणाली नाम दिया। वर्तमान में आसन, प्राणायाम को ही योग मान लिया जाता है वह तो सिर्फ प्रारम्भिक भूमिका है। ध्यान साधना का मूल उद्देश्य है आत्म साक्षात्कार करना। प्रयोग तो माध्यम है। वीतरागता की स्थिति को प्राप्त करना यह लक्ष्य होना चाहिए। आर्तध्यान, रौद्र ध्यान अशुभ ध्यान है।

धर्म ध्यान के माध्यम से शुक्ल ध्यान तक पहुंचना है। योग का अर्थ है जोड़ना। ध्यान के अनेक प्रयोग होते हैं। प्रेक्षा यानी देखना - भीतर में देखना। भीतर में जाने के लिए साधन है श्वास। ज्ञाता दृष्टा भाव से देखना सीखें जिससे भीतर में जागरूकता बढ़ती है। प्रेक्षाध्यान जीवन जीने की शैली

है। साधना का महत्वपूर्ण अंग है प्रेक्षाध्यान। प्रेक्षा प्रशिक्षक मंजू सिपाणी कोलकाता ने कहा - योगक्षेम के लिए प्रेक्षाध्यान आवश्यक उपक्रम है। इसके द्वारा हम अपने शरीर मन एवं भावों को मजबूत बना सकते हैं। प्रेक्षाध्यान का आधार राग द्वेष मुक्त होकर देखो।

अपने आप में आत्मा में स्थिर होना। इसके द्वारा समग्र जीवन का योगक्षेम कर सकते हैं। तेरापंथ सभा मंत्री राजकुमार पुगलिया ने बताया कि शिविरार्थियों ने प्रेक्षा गीत का संगान किया।

मुनिश्री ने ध्यान का प्रयोग करवाया। संयोजक राजेश पटवारी, सभा अध्यक्ष विमल बैगाणी ने विचार व्यक्त किए। अनिल बैद ने अपने अनुभव बताए।

भिक्षु भक्ति संध्या का संयुक्त आयोजन

सिलचर।

'भिक्षु भक्ति संध्या - भावांजलि 2.0' का भव्य एवं सफल आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम का संयुक्त आयोजन तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF), सिलचर एवं तेरापंथ युवक परिषद (TYP), सिलचर द्वारा किया गया, जिसमें जैन श्वेतांबर

तेरापंथी सभा, सिलचर एवं तेरापंथ महिला मंडल, सिलचर का सहयोग रहा। यह भक्तिमय आयोजन तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम एवं संस्थापक आचार्य, आचार्य भिक्षु स्वामी की स्मृति एवं उनके सिद्धांतों को समर्पित था। प्रसिद्ध श्रद्धानिष्ठ संगायक कमल सेठिया ने अपनी मधुर प्रस्तुतियों से उपस्थित श्रद्धालुओं को भक्ति रस में

डुबो दिया और भिक्षु स्वामी की आराधना से जोड़ दिया। कार्यक्रम में TPF के चेयरपर्सन - ऑर्गनाइजेशनल डेवलपमेंट प्रवीण सिरौहिया एवं TPF ईस्ट जोन-1 के अध्यक्ष राकेश सिंधी की गरिमामयी उपस्थिति रही। दोनों अतिथियों ने कार्यक्रम से पूर्व संगठनात्मक बैठक आयोजित कर टीम का मार्गदर्शन किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में आयोजित

SARGAM LITTLE CHAMPS – सुरों का महासंग्राम

उधना।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, उधना द्वारा परिषद के ऐतिहासिक एवं गौरवशाली सफर 'अविराम 35 – स्थापना से अनंत सफर की ओर' के अंतर्गत Sargam Little Champs – सुरों का महासंग्राम Semi Finale – 1 का आयोजन तेरापंथ भवन, उधना में किया गया। 'जहाँ सुरों को मंच मिला, प्रतिभाओं को पहचान मिली और नन्हे कलाकारों को मिला हौसलों का आसमान'

मंगलाचरण से हुआ शुभारंभ:

कार्यक्रम का शुभारंभ भजन मंडली द्वारा मंगलाचरण की मधुर एवं भक्तिमय प्रस्तुति से हुआ। इसके पश्चात कार्यक्रम को आध्यात्मिक गरिमा प्रदान करते हुए साध्वी डॉ. परमयशजी ठाणा-4 का सान्निध्य प्राप्त हुआ। साध्वीश्री ने अपने मंगल उद्बोधन के माध्यम से उपस्थित जनसमुदाय एवं प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया।

राष्ट्रीय नेतृत्व की विशेष उपस्थिति:

कार्यक्रम में आभातेयूप के राष्ट्रीय पदाधिकारियों की भी गरिमामयी उपस्थिति रही— राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट, उपाध्यक्ष-3 संदीप हिंगड़, उपाध्यक्ष-4 कमलेश भंसाली,



सह संगठन मंत्री-1 विनय लिंगा, सह संगठन मंत्री-2 महेश परमार। राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में नन्हे कलाकारों की प्रतिभा की सराहना करते हुए उन्हें निरंतर आगे बढ़ने एवं अपनी प्रतिभा को निखारने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके शब्दों ने प्रतिभागियों, अभिभावकों एवं उपस्थित समाजजनों में नई ऊर्जा का संचार किया।

देशभर से पहुँची 13 जोड़ियों ने सजाया मंच : Sargam Little Champs के इस सेमीफाइनल में पूरे भारतभर से 13 प्रतिभाशाली जोड़ियों ने सहभागिता की। नन्हे कलाकारों ने अपनी शानदार गायकी, आत्मविश्वास और मंचीय प्रस्तुति से उपस्थित दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

दो दिवसीय विशेष प्रशिक्षण :

कार्यक्रम से पूर्व प्रतिभागियों को बेहतर मंचीय प्रस्तुति के लिए विशेष प्रशिक्षण

प्रदान किया गया। ट्रेनर निलेश बापना ने दो दिनों तक सभी जोड़ियों को गायन, प्रस्तुति, मंच संचालन एवं परफॉर्मेंस से जुड़ी महत्वपूर्ण बारीकियों का प्रशिक्षण दिया।

13 में से 6 जोड़ियों ने भरी अगले चरण में उड़ान : कड़ी प्रतिस्पर्धा और शानदार प्रस्तुतियों के बीच 13 जोड़ियों में से 6 जोड़ियों का चयन आगामी चरण के लिए किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट एवं प्रबंधन मंडल द्वारा सभी जोड़ियों को मोमेंटो एवं सर्टिफिकेट प्रदान कर सम्मानित किया गया। यह सम्मान नन्हे कलाकारों के लिए केवल एक स्मृति नहीं, बल्कि उनके आगामी संगीत सफर के लिए प्रेरणा का प्रतीक बना। दानदाताओं एवं भामाशाहों का सम्मान इस आयोजन को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करने वाले सभी दानदाताओं एवं भामाशाहों के प्रति परिषद परिवार ने

कृतज्ञता व्यक्त की।

विशिष्ट उपस्थिति एवं सहयोग:

कार्यक्रम में Sargam प्रवृत्ति सलाहकार सुनील चंडालिया, प्रभारी निलेश टेबा, सह-प्रभारी रौनक सरणोट एवं हेमंत धाकड़ सहित आभातेयूप परिवार की गरिमामयी उपस्थिति रही। साथ ही आचार्य महाप्रज्ञ पुरस्कार से सम्मानित संजय सुराणा, युवा गौरव राजेश सुराणा, तेरापंथी सभा, तेरापंथी महिला मंडल, अणुव्रत समिति, TPF, ज्ञानशाला तथा उधना परिषद परिवार एवं समस्त श्रावक समाज की उल्लेखनीय सहभागिता रही।

मंच संचालन एवं एंकरिंग :

कार्यक्रम का संपूर्ण संचालन तेयुप उधना के मंत्री कमलेश डांगी द्वारा किया गया, जबकि कार्यक्रम की आकर्षक एवं ऊर्जावान एंकरिंग RJ राजुल ने अपने प्रभावशाली अंदाज में की।

अध्यक्षीय भावाभिव्यक्ति :

तेरापंथ युवक परिषद, उधना के अध्यक्ष मनीष कावड़िया ने कहा आयोजन की सफलता, प्रतिभागियों की मेहनत एवं परिषद परिवार के सामूहिक प्रयासों की सराहना की।

एक कार्यक्रम नहीं, प्रतिभाओं के सपनों का मंच:

Sargam Little Champs – Semi Finale 1 केवल एक प्रतियोगिता नहीं रही, बल्कि यह नन्ही प्रतिभाओं को मंच देने, उनके आत्मविश्वास को उड़ान देने और उनके सपनों को पहचान देने का एक सार्थक प्रयास बना।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट की गरिमामयी उपस्थिति, साध्वीश्री के मंगल आशीर्वाद, राष्ट्रीय पदाधिकारियों के मार्गदर्शन, अभिभावकों के उत्साह, प्रतिभागियों की मेहनत और परिषद परिवार के सामूहिक समर्पण ने इस आयोजन को 'अविराम 35' के यादगार अध्याय के रूप में स्थापित कर दिया।

ATDC उधना में अत्याधुनिक मशीन का लोकार्पण

उधना

सेवा – चिकित्सा – विश्वसनीयता के संकल्प को साकार करते हुए तेरापंथ युवक परिषद्, उधना द्वारा संचालित आचार्यतुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर (ATDC), उधना में 'अविराम 35 – स्थापना से अनंत सफर की ओर' के अंतर्गत स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक सुदृढ़ एवं आधुनिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया। आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, उधना में अत्याधुनिक SYSMEX XN-330 Automated Hematology Analyzer मशीन का भव्य लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया।

गरिमामयी उपस्थिति : इस गरिमामयी अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट की



विशेष गरिमामयी उपस्थिति रही। उनके साथ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-3 संदीप हिंगड़, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-4 कमलेश भंसाली, सह संगठन मंत्री-1 विनय लिंगा, सह संगठन मंत्री-2 महेश परमार एवं प्रवृत्ति सलाहकार सुनील चंडालिया सहित राष्ट्रीय प्रबंधन मंडल के सम्माननीय पदाधिकारी उपस्थित रहे, साथ ही तेरापंथ टाइम्स संपादक जयेश मेहता, उधना शाखा प्रभारी

कुलदीप कोठारी, सभा अध्यक्ष नेमीचंदजी पोरवाड़, बसंतिलाल नाहर, आभातेयूप परिवार एवं समाज के गणमान्यजन तथा तेरापंथ युवक परिषद् उधना के अध्यक्ष मनीष कावड़िया एवं उनकी पूरी टीम की गरिमामयी उपस्थिति रही।

जैन संस्कार विधि से हुआ भव्य लोकार्पण : कार्यक्रम का शुभारंभ जैन संस्कार विधि के मंगलमय

वातावरण में हुआ। संस्कारक के रूप में दिनेंद्र चंडालिया, नेमीचंद कावड़िया एवं कुशल चंडालिया उपस्थित रहे। जैन संस्कार विधि के मंगलमंत्रों के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट द्वारा SYSMEX XN-330 अत्याधुनिक मशीन का विधिवत लोकार्पण एवं अनावरण किया गया। यह मशीन ATDC की स्वास्थ्य के माध्यम से रक्त संबंधी परीक्षणों को और अधिक त्वरित, सटीक एवं विश्वसनीय बनाने में सहायता मिलेगी तथा आमजन को बेहतर डायग्नोस्टिक सेवाएं उपलब्ध कराने की ATDC की प्रतिबद्धता और मजबूत होगी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं प्रबंधन मंडल ने किया ATDC का अवलोकन: लोकार्पण समारोह के पश्चात राष्ट्रीय

अध्यक्ष पवन मांडोट एवं राष्ट्रीय प्रबंधन मंडल के सम्माननीय पदाधिकारियों ने आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का विस्तृत अवलोकन किया। इस दौरान ATDC प्रभारी रौनक श्रीश्रीमाल ने सेंटर की कार्यप्रणाली, उपलब्ध जांच सुविधाओं, आधुनिक चिकित्सा उपकरणों एवं जनहित में संचालित विभिन्न सेवाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की।

सेवा से समर्पण तक तकनीक से विश्वास तक : ATDC उधना में अत्याधुनिक SYSMEX XN-330 मशीन का यह लोकार्पण केवल एक नई मशीन का शुभारंभ नहीं, बल्कि स्वास्थ्य सेवाओं को आधुनिक तकनीक से जोड़ते हुए जन-जन को बेहतर एवं विश्वसनीय चिकित्सा सुविधा प्रदान करने की दिशा में एक और सार्थक कदम है।

आयम्बिल तप से सौ करोड़ वर्षों के अशुभ कर्म क्षीण होते हैं

रोहिणी।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रोहिणी में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी के सान्निध्य में आयम्बिल नवपद अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। आयम्बिल अनुष्ठान में 55 भाई-बहनों ने भाग लिया।

साध्वी श्री जी ने प्रवचन के दौरान नव-पद का विधिवत जप करवाय मैना सुन्दरी और श्रीपाल का ऐतिहासिक प्रसंग सुनाते हुए कहा कि जैन परम्परा में आयम्बिल का बहुत महत्व बताया गया है। द्वारिका नगरी जब तक यह तप चला सुरक्षित रही। यह स्वादविजय की साधना है। पांच इन्द्रियों में जिहवा पर कंट्रोल रखना कठिन साधना है। आयम्बिल तप से सौ करोड़ वर्षों के अशुभ कर्म क्षीण

होते हैं। वैसे इस महिने में आयम्बिल तप से स्वास्थ्य की दृष्टि से भी हितकर बताया गया है। आश्विन का महिना रक्त परिवर्तन का मौसम माना गया है प्रकृति में इस समय कुछ बदलाव होता है। ऐसे समय में खान-पान पर कंट्रोल हो तो सहज होने वाले दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है। जैन धर्म में तप के कई प्रकार हैं जिनमें आयम्बिल तप करना अपने आप में कठिन साधना है।

साध्वी श्री जी ने यह भी बताया कि नवपद का विधिवत जप सोने में सुहागा है। बहुत भाइयों ने तो पहली बार यह आयम्बिल किया और कइयों ने पूरे परिवार सहित तप-जय में सम्भागी बने। साध्वी सुरेखा जी, साध्वी मधुर लताजी ने अति श्रम से सबको प्रेरणा देकर इस अनुष्ठान में सम्भागी बनाया।

संक्षिप्त खबर

फिट युवा - हिट युवा कार्यक्रम का आयोजन

वसई। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद एवं किशोर मंडल, वसई के द्वारा अपने सभी सदस्यों को फिटनेस के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से तुंगेश्वर पहाड़ी पर ट्रेकिंग का आयोजन किया गया। स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के संदेश के साथ शुरू हुए इस कार्यक्रम में सभी साथियों में अति उत्सुकता देखने को मिली। किशोर एवं युवा साथियों को मिलाकर लगभग 35 सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। ट्रेकिंग के इस कार्यक्रम में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के संदेश के साथ ही सभी सक्रिय सदस्यों के द्वारा योगाभ्यास एवं भक्ति का भी आनंद लिया गया।

आयंबिल कर्म निर्जरा की साधना

इरोड। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में इरोड महिला मंडल ने सामूहिक आयंबिल तप का आयोजन तेरापंथ भवन में किया। आयंबिल शुरू करने से पहले साध्वी सोमयशजी ने सभी तपस्वियों को मंगल पाठ सुनाया और ॐ. अ. भी. रा. शि. को नमःका 11 बार जप करके शुरुआत करने की प्रेरणा दी और आयंबिल के आध्यात्मिक महत्व के बारे में बताया। कुल 23 भाई बहनों ने आयंबिल तप किया। और एक धान एक संकल्प एक दिन के अनुष्ठान को सफल बनाया।

परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन

पर्वत पाटिया। शासनश्री साध्वी मधुबाला जी ठाणा -5 के ऊर्जा पाथेय से एवं साध्वी सौभाग्य श्रीजी और साध्वी मंजुलयाश्री जी के अथक श्रम व समय नियोजन से महासती अंजना की संघर्षों की दास्तां प्रस्तुत कि गई कन्याओं एवं युवती बहनों द्वारा कार्यक्रम का प्रारंभ बिना आडंबर सादगी पूर्ण इस भाव यात्रा के मुख्य किरदार राजा प्रहलाद, रानी केतुमती के पुत्र पवन, और उनके मित्र प्रहस्त, राजा महेंद्र की पुत्री अंजना एवं उनकी मित्र बसंत माला के जीवन को बहुत ही सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया कन्याओं व बहनों ने पूरा सदन ओम अर्हम की ध्वनि से गूंज उठा। कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल कार्यकारिणी सदस्य बिंदु भंसाली व शिल्पा की भी विशेष उपस्थिति रही।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **गांधीनगर, दिल्ली।** लाडनू निवासी दिल्ली कृष्णानगर प्रवासी प्रकाश कुमार रजनी देवी बाफना के सुपौत्र व विनय-ज्योति बाफना के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक महेंद्र कुमार दुगड़ व महेंद्र कुमार श्यामसुखा ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानंद संपादित करवाया।

गृह प्रवेश

■ **कोलकाता।** अतुल बरड़िया, सुपुत्र कन्हैयालाल बरड़िया (सरदारशहर-साउथ कोलकाता), के नवीन निवास नटराज बिल्डिंग, लॉर्ड सिन्हा रोड, साउथ कोलकाता में जैन संस्कारक महेंद्र कुमार दुगड़ ने मंगल मंत्रोच्चार एवं विधिवत गृह प्रवेश समारोह संपन्न कराया।

'Make Your Mark' कांदिवली युवाओं की नई उड़ान

कांदिवली।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, कांदिवली द्वारा 'Make Your Mark' कार्यशाला का सफलतम आयोजन युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी श्री विद्यावतीजी 'द्वितीय ठाणा-5' के पावन सान्निध्य में तेरापंथ भवन कांदिवली में किया गया। साध्वी प्रियंवदाजी ने प्रेरणा देते हुए कहा- जीवन को तेजस्वी बनाने का लक्ष्य हो तो व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार आ सकता है। तेजस्विता लाने के लिए पहला सूत्र है हमारा चिंतन सम्यक् हो। सकारात्मक भावधारा होनी चाहिए नकारात्मक चिंतन एवं नकारात्मक व्यवहार से जीवन का

अवरोहण नहीं हो सकता। दूसरा सूत्र है- चरित्र अर्थात् आचरण अच्छा हो। सम्यक् आचरण से जीवन में निखार आता है। तीसरा सूत्र है - व्यवहार।

अपना व्यवहार शालिन हो व्यवहार में कुशलता हो। साध्वी श्रीजी ने कांदिवली तेरापंथ युवक परिषद को उत्साही एवं श्रमशील भी बताया।

कार्यशाला में अखिल मारू एवं मनीषा सेठिया ने सहभागियों को प्रभावी प्रशिक्षण प्रदान करते हुए बताया कि कैसे हम अपनी पहचान बनाए, कैसे अपनी छाप छोड़े, सोच नई, शुरुआत नई, आपका हुनर, आज का प्रयास, कल की पहचान, कुछ ऐसा करो, जो याद रह जाए, अपनी क्षमता को पहचानो तथा छोटी शुरुआत से कैसे बड़ा प्रभाव हो।

दीक्षांत समारोह का आयोजन राष्ट्रीय सहमंत्री अंकुर लुणिया की अध्यक्षता में हुआ। कांदिवली तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष आशीष श्रीश्रीमाल ने बताया कि इस ऐतिहासिक पहल को साकार करने में CPS National Trainer एवं कार्यशाला संयोजक विनीत सिंघवी के अथक प्रयास, समर्पण एवं नेतृत्व की विशेष भूमिका रही। उनके निरंतर प्रयासों से ही कांदिवली परिषद द्वारा एक नई एवं प्रेरणादायी पहल को साकार किया जा सका।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा मुंबई अध्यक्ष सुरेंद्र कोठारी, तेरापंथी सभा कांदिवली अध्यक्ष मीठालाल धाकड़, मंत्री विनोद कोठारी, TPF से कमल धारेवा, तेरापंथ युवक परिषद मंत्री विमल धाकड़ ने विनीत सिंघवी ने आभार व्यक्त किया।

लौकिक दान कर्तव्य, लोकोत्तर दान मुक्ति का मार्ग

मण्डिया, कर्नाटक।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला मण्डिया तेरापंथ युवक परिषद द्वारा तेरापंथ भवन के प्रांगण में आयोजित हुई। उपासिका ललिता बैद ने कहा की आचार्य श्री भिक्षु ने आचार क्रांति की, विचार क्रांति की। सही तत्व को गलत तरीके से पढ़ा

जाता है उसकी क्रांति की। जनमानस गलत अवधारणा में जी रहा था आचार्य श्री भिक्षु ने भगवान महावीर के सिद्धांतों को ही सम्यक रूप से प्रस्तुत किया। लौकिक लोकोत्तर की भेद रेखा को व्यक्त किया। उपासिका कांता लोढ़ा ने बताया कि सम्यक्त्व को कायम रखने के लिए दृष्टिकोण सही होना जरूरी है। स्वामी जी ने आगम वाणी के आधार पर विचार दर्शन, सिद्धांत प्रस्तुत किए। उनके

विचार अध्यात्मवादी थे।

आचार्य भिक्षु ने लौकिक लोकोत्तर के मिश्रण से व्यक्ति अज्ञानता में भटक कर मिथ्यात्व में जी रहा था। उन्होंने लौकिक लोकोत्तर की भेद रेखा का स्पष्ट चिंतन दिया। दान-दया का यथार्थ रूप बताते हुए कहा कि पाप के आचरण से अपनी आत्मा को बचाना दया है। लौकिक दान संसार का कर्तव्य है लोकोत्तर दान मुक्ति का मार्ग है।

TPF की प्रथम राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक आयोजित

लाडनू।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) की प्रथम राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक का आयोजन राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्प जैन पटवारी की अध्यक्षता में 3 अक्टूबर 2026 को तुलसी ऑडिटोरियम जैन विश्व भारती परिसर, लाडनू में किया गया। बैठक में राष्ट्रीय कार्यकारिणी के 104 सदस्यों ने सहभागिता दर्ज कराई। बैठक का शुभारंभ नवकार मंत्र के मंगल उच्चारण के साथ हुआ। इसके पश्चात कार्यकारिणी सदस्यों

की अनुपस्थिति का उल्लेख किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्प जैन पटवारी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए TPF के आगामी दो वर्षों के विजन 'Evolve, Scale and Serve' की रूपरेखा सामने रखी।

उन्होंने संगठन को नई सोच के साथ विकसित करने, सेवा एवं प्रोजेक्ट्स के प्रभाव को व्यापक स्तर तक पहुंचाने तथा TPF की गतिविधियों को और अधिक संगठित एवं प्रभावी बनाने पर जोर दिया। राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा संगठन की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई, जिसमें विभिन्न गतिविधियों

एवं कार्यों की जानकारी दी गई, साथ ही इस मीटिंग में राष्ट्रीय प्रबंधन मंडल की शत-प्रतिशत उपस्थिति रही। सभी प्रोजेक्ट चैयरमैन एवं संयोजकों ने अपने-अपने प्रोजेक्ट्स का प्रेजेंटेशन राष्ट्रीय कार्यकारिणी के समक्ष प्रस्तुत किया।

प्रस्तुतियों के दौरान प्रोजेक्ट्स के प्रभावी क्रियान्वयन, विस्तार एवं नए आयामों को लेकर सदस्यों ने अपने सुझाव भी दिए। मीटिंग का संचालन राष्ट्रीय सहमंत्री मोहित बैद, अभिनव जैन द्वारा तथा आभार ज्ञापन राष्ट्रीय सहमंत्री विक्रम कोठारी ने किया।

प्रशिक्षिकाएँ भावी पीढ़ी में संस्कारों के बीज संजोती हैं

गांधीनगर, बेंगलुरु।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा, गांधीनगर, बेंगलुरु के तत्वावधान में, आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी पावनप्रभा जी ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में विज्ञ, विशारद एवं स्नातक की ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं की लिखित परीक्षा का सफल आयोजन किया गया।

परीक्षा का शुभारंभ साध्वी पावनप्रभा जी के मंगल पाठ से हुआ। इस अवसर पर साध्वी उन्नतयशा जी, साध्वी आत्मयशा जी एवं साध्वी रम्यप्रभा जी का भी पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। दक्षिण कर्नाटक आंचलिक संयोजक विनोद कोठारी, सह आंचलिक सह

संयोजक सुरेश बरडिया सभाअध्यक्ष प्रकाश बाबेल की गरिमामयी उपस्थिति में प्रश्नपत्र खोला गया। इस लिखित परीक्षा में कुल 25 बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह परीक्षा प्रशिक्षिकाओं के ज्ञान, समर्पण एवं शिक्षण कौशल को परखने के साथ-साथ उनके आध्यात्मिक एवं बौद्धिक विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रही। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएँ भावी पीढ़ी में संस्कार, नैतिक मूल्यों एवं जैन दर्शन के बीज रोपित करने का महत्वपूर्ण दायित्व निभाती हैं। ऐसी परीक्षाएँ उनके ज्ञान को परिष्कृत करने, आत्मविश्वास बढ़ाने तथा ज्ञानशाला के शैक्षणिक स्तर को और अधिक सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

आध्यात्मिक क्रिकेट क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

इरोड।

तेरापंथ धर्म संघ के अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी सोमयशाजी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में आध्यात्मिक क्रिकेट क्विज प्रतियोगिता आयोजित हुई। साध्वी सोमयशा जी ने मंगल पाठ द्वारा शुभारंभ करवाया।

नौ तत्व, जैन धर्म, तीर्थंकरों से संबंधित और तेरापंथ धर्म संघ से जुड़े प्रश्नोत्तर का रोचक प्रस्तुतियों के

साथ ज्ञानवर्धक और आध्यात्मिकता की वृद्धि करने वाला कार्यक्रम रहा। टीम के नाम इस प्रकार रहे। अणुव्रत एसस, प्रेक्षा पायनियर्स, अहिंसा एवेंजर्स, संयम सुपरस्टार, योगक्षेम स्टार, स्वाध्याय स्कवैड, प्रति टीम में 6 कि संख्या से कुल छः टीमों में लगभग 36 प्रतिभागियों ने भाग लिया। महासभा के न्यासी नरेंद्र नखत निर्णायकगण रहे। स्वाध्याय स्कवैड की टीम विजयी रही। उपरोक्त जानकारी सभा के मीडिया प्रभारी सुरेश चौपड़ा द्वारा प्राप्त हुई।

बाल वैरागी से बने युग निर्माता : आचार्य कालूगणी

कांकरिया मणिनगर।

तेरापंथ भवन कांकरिया मणिनगर में शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में आचार्य श्री कालूगणी की वार्षिक पुण्यतिथि मनाई गई। साध्वी श्री आत्मा प्रभा जी ने बताया कि आचार्य कालूगणी जैन धर्म के श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के आठवें आचार्य थे। उनका जन्म: 15 फरवरी 1877 (विक्रमी संवत् 1933) को राजस्थान के छापर कस्बे में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री मूलचंद जी चोपड़ा और माता का नाम श्रीमती छोगानी था। बाल्यावस्था में ही, मात्र 10 वर्ष की आयु में, आपने अपनी माता

के साथ संवत् 1944 आश्विन शुक्ला तृतीया को पंचम आचार्य मगवागणी के पास दीक्षा ग्रहण की। आचार्य डालचंद जी द्वारा विक्रम संवत् 1966 में आपको बीदासर में तेरापंथ का अष्टम आचार्य नियुक्त किया गया।

आपके आचार्य काल में तेरापंथ धर्मसंघ का प्रचार-प्रसार दक्षिण भारत तक पहुँचा। आपने संस्कृत भाषा और जैन साहित्य के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान दिया। लगभग 27 वर्षों तक संघ का कुशल नेतृत्व करने के बाद, संवत् 1993 भाद्रपद मास की छठी को मेवाड़ के गंगापुर (भीलवाड़ा) में आपका महाप्रयाण हुआ। साध्वीवृंद द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया।

श्रावक जिनशासन का अभिन्न अंग सादगी और आस्था से जीए जीवन

उत्तर हावड़ा।

युगप्रदान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में उपनगर क्षेत्रीय श्रावक-श्राविका सम्मेलन (लिलुआ, बाली-बेलूड, उत्तरपाड़ा, हिन्दमोट, रिसड़ा) का आयोजन उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा योगक्षेम विहार के योगक्षेम सभागार में आयोजित किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महासभा के कोषाध्यक्ष मदनलाल मरोठी विशेष रूप से उपस्थित थे। प्रवचन सत्र के अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा श्रावक जिनशासन का अभिन्न अंग है। श्रावक वह होता है जो श्रमणों की उपासना करता है, जो श्रमशील है, विवेक संपन्न है और जो अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक व क्रियाशील है। श्रावक अपने दायित्व के प्रति जागरूक रहकर शासन की सेवा करे। श्रावक हिंसा, भोग, विलासिता, आडंबर, प्रदर्शन से मुक्त होकर स्वस्थ जीवन जीए। देव, गुरु, धर्म के प्रति आस्था रखे। धर्म से विमुख न बने, धर्म की आराधना करे, सादगी का जीवन जीए। संघ व संघपति के प्रति आस्था रखे। मुनि ने आगे कहा- संघ आश्वासन देने वाला है, संघ विश्वास है, संघ शीत घर

के समान है। संघ माता-पिता के समान है, इसलिए संघ की शरण ले। संघ को

क्षेत्रीय श्रावक-श्राविका सम्मेलन का आयोजन

छोड़ने वाला कभी सुखी नहीं होता है। हमें मनुष्य जन्म मिला है, जिनशासन मिला है, तेरापंथ धर्म संघ मिला है और आचार्य महाश्रमण जी जैसे गुरु मिले हैं। सच्ची आस्था, स्थिर श्रद्धा, उज्ज्वल आचार व्यवस्था, सर्वमान्य अनुशासन शैली, एक आचार्य का नेतृत्व ये तेरापंथ पांच घटक तत्व हैं। श्रावक आहार शुद्धि, व्यसनमुक्त का जीवन जीए। श्रावक हर परिस्थिति में समता संतुलित रहकर अपने क्षेत्रों में धार्मिक जागरण करते रहें, यही आध्यात्मिक मंगल कामना करता हूँ।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष संदीप डागा ने दिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के कोषाध्यक्ष मदनलाल मरोठी ने संगठन के महत्व व विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा- एक आचार्य, एक विधान, एक मर्यादा और एक अनुशासन — यही

हमारी संगठन की विशिष्ट पहचान है। हमारा दायित्व केवल नई पीढ़ी को संगठन से जोड़ना नहीं है, हमें उन्हें सहभागी व संस्कारी बनाना है।

आभार ज्ञापन सभा के मंत्री विनीत कोठारी ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने किया।

द्वितीय प्रशिक्षण सत्र में महासभा के कार्यकारिणी सदस्य व क्षेत्रीय प्रभारी नवीन दुगड़, उपासक महावीर प्रताप दुगड़, उपासक सुशील बाफणा ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण ज्ञान दिया। संचालन महावीर प्रताप दुगड़ ने किया।

तृतीय सत्र में उपनगरीय क्षेत्रों की संस्थाओं के पदाधिकारियों व सदस्यों ने अपने-अपने क्षेत्रों में चल रही गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। उपासिका चंद्रकांता पुगलिया ने अपने विचार व्यक्त किये। मुनि जिनेश कुमार जी व मुनि परमानंद जी ने धर्मसंघ की गतिविधियों, संस्कारों व परंपराओं की जानकारी प्रदान करते हुए गुरु दर्शन, पर्युषण पर्व की क्षेत्र में सम्यक आराधना व चारित्र आत्माओं की उपासना के संदर्भ में विविध प्रेरणाएं प्रदान कीं। इस सम्मेलन में लिलुआ, बाली-बेलूड, उत्तरपाड़ा, हिन्दमोट, कोननगर, रिसड़ा से लगभग 140 श्रावक-श्राविकाओं ने हिस्सा लिया।

तप से संभव है गृह शांति

उत्तर हावड़ा।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में प्रेम लता बैद के मासखमण तप का अभिनंदन समारोह योगक्षेम विहार के योगक्षेम सभागार में उत्तर हावड़ा जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा — धर्म जीवन का पाथेय है। व्यक्ति के पास धर्म रूपी पाथेय पास में होने से जीवन यात्रा का सफर सुखमय बन जाता है। धर्म का थोड़ा सा पालना भी महाभय से बचा लेता है।

धर्म का पथ है ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप अथवा दान, शील, तप, भावना। तप से आत्मा परिशुद्ध होती है। इंद्रियों और मन को वश में करना ही तप है। तप का मूल उद्देश्य जीवन जागरण,

आत्म शोधन और बंधन मुक्ति है। इसके साथ-साथ मानसिक एकाग्रता, इंद्रिय दमन, कषाय उपशमन और स्वभाव परिवर्तन ये बातें तपस्या द्वारा फलित होते हैं। तप से कर्म शांत होने में ग्रह शांति होती है।

तप के प्रभाव से अस्थिर वक्र ऋजु शैतान भगवान बन जाता है। तप वही

मासखमण तप अभिनंदन

कर सकता है जिसका मनोबल, धृतिबल व संहतन मजबूत होता है। जो तप में कषाय, विषय, आहार का त्याग होता है वह उपवास होता है। आसक्तियों को छोड़कर मांग को अस्वीकार करना तप है।

आज प्रेम लता बैद मासखमण तप का प्रत्याख्यान करने जा रही हैं। यह तपस्विनी श्राविका है। इनका यह छठा मासखमण तप है। इनके पति जुगराज बैद भी सेवाभावी व तपस्वी श्रावक हैं।

तपस्वी प्रेम लता बैद व बैद परिवार के प्रति खुब-खुब मंगल कामना।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण उत्तर हावड़ा जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष संदीप डागा ने दिया।

साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन मुख्य न्यासी जेठमल जी सामसुखा ने किया। इस अवसर पर बैद परिवार की बहनों ने तप अनुमोदना गीत का संगान किया। टॉलीगंज सभा के अध्यक्ष सुशील कोठारी ने तप अनुमोदना में अपने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन सभा मंत्री विनीत कोठारी ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने किया।

मुनि श्री द्वारा तपस्विनी प्रेम लता बैद को २७ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान करवाया गया। सभा द्वारा तपस्विनी बहन को साध्वी प्रमुखा श्री जी का संदेश भेंट किया गया।

नैतिकता का संदेश, संयम का संकल्प: 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' पर देश भर में उमड़ा अपार उत्साह!

क्षमा और मैत्री से ही संभव है सौहार्दपूर्ण समाज

दिल्ली।

भारत की राजधानी दिल्ली के विज्ञान भवन में भगवान महावीर मेमोरियल समिति एवं जैन महासभा, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'विश्व मैत्री एवं क्षमापना दिवस' समारोह में भारत के उपराष्ट्रपति श्री सी. पी. राधाकृष्णन जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। समारोह में बहुश्रुत मुनि उदित कुमारजी ने अणुव्रत भवन से लगभग ४ किमी का विहार कर विज्ञान भवन पहुंचकर अपना मंगल सान्निध्य प्रदान किया। इस अवसर पर पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया, भगवान महावीर मेमोरियल समिति के अध्यक्ष कन्हैया लाल जैन, जैन महासभा, दिल्ली के अध्यक्ष दिनेश दोषी जी सहित विभिन्न जैन परंपराओं के संत आचार्य श्री १०८ विशुद्ध सागरजी मुनिराज, उपाध्याय श्री रविंद्र मुनि जी एवं मुनिश्री तीर्थ निर्वाण विजय जी का भी सान्निध्य रहा। अपने प्रेरक उद्बोधन में बहुश्रुत मुनि उदित कुमारजी ने कहा कि जीवन में मतभेद हो

सकते हैं, लेकिन मनभेद नहीं होना चाहिए। विचारों में भिन्नता होना स्वाभाविक है, किंतु विचारों की भिन्नता को मन की दूरी नहीं बनने देना चाहिए। क्षमा और मैत्री ऐसी भावनाएं हैं, जो व्यक्ति से व्यक्ति को जोड़ती हैं तथा समाज में सौहार्द और आत्मीयता का वातावरण निर्मित करती हैं। मुनिश्री ने कहा कि क्षमा केवल शब्दों की

उपराष्ट्रपति श्री सी. पी. राधाकृष्णन की गरिमामयी उपस्थिति

अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि मन की निर्मलता का भाव है। जब हम अपने भीतर की कटुता और गांठों को समाप्त करते हैं, तभी वास्तविक मैत्री का विकास होता है। क्षमापना का भाव पर्व विशेष तक सीमित न रहकर हमारे दैनिक जीवन एवं व्यवहार का हिस्सा बने—यही इसकी सार्थकता है। उपराष्ट्रपति श्री सी. पी. राधाकृष्णन जी ने अपने संबोधन में क्षमा, अहिंसा एवं मैत्री के सार्वभौमिक संदेश को रेखांकित करते हुए इसे वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक बताया। संचालन सुनीता जैन ने किया।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत मनाया गया अहिंसा दिवस

गोरेगांव (मुंबई)।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत समिति मुंबई क्षेत्र गोरेगांव में उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत आज दूसरे दिन अहिंसा दिवस का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत गीत के संगान के साथ उपासक प्रखर वक्ता सुरेश ओस्तवाल ने की। पधारो सभी अतिथियों का एवं अणुव्रत परिवार और

पूरे समाज का स्वागत अणुव्रत संयोजक शांतिलाल बाफना ने किया। सभा अध्यक्ष सुभाष सिंघवी, मंत्री विनोद सिंघवी ने भी अपनी भावना व्यक्त की। मुख्य वक्ता के रूप में प्रवक्ता उपासक सुरेश ओस्तवाल ने अहिंसा दिवस पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बिशनदास गोयल (कलकत्ता) के जीवन का प्रेरणादायक घटनाक्रम सुनाकर सभी को प्रेरित किया। संचालन एवं आभार ज्ञापन विकास धाकड़ ने किया।

अनुशासन, संयम और सकारात्मकता से बनेगा सशक्त समाज

आमेट।

अणुव्रत समिति आमेट द्वारा 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' के छठे दिन तेरापंथ सभा भवन में अनुशासन दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अनुशासन के महत्व पर चर्चा करते हुए जीवन में इसे अपनाने का संदेश दिया गया। अध्यक्ष रेणु छाजेड़ ने कहा कि अनुशासन जीवन की सफलता की आधारशिला है। यह व्यक्ति में

समयबद्धता, आत्मसंयम, जिम्मेदारी और कर्तव्यनिष्ठा का विकास करता है। जीवन विज्ञान प्रभारी रितु ढिलीवाल ने अनुशासन को लक्ष्य प्राप्ति की प्रेरणा बताते हुए दैनिक जीवन में संयम और सकारात्मक सोच अपनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मंजू देवी हिरण, मंत्री संगीता चंडालिया सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

जहाँ पर्यावरण सुरक्षित वहीं संस्कृति सुरक्षित

उत्तर हावड़ा।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के चतुर्थ दिन 'पर्यावरण शुद्धि दिवस' का आयोजन अणुव्रत समिति, हावड़ा - कोलकाता द्वारा योगाक्षेम सभागार में किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष प्रताप सिंह दुगड़ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

इस अवसर पर उपस्थित धर्म सभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा पर्यावरण का अर्थ है जो

चारों ओर से घिरा हुआ। जहाँ पर्यावरण सुरक्षित है वहाँ संस्कृति सुरक्षित है और जहाँ संस्कृति सुरक्षित है वहाँ आनंद ही आनंद है। बदलते माहोल में पर्यावरण असुरक्षित होता जा रहा है। जल, जंगल, जमीन के दुरुपयोग से पर्यावरण प्रदूषण की और अधिक जटिल बना दिया है। जैन धर्म में छह जीव निकायों के संयम की बात कही गई है। प्राकृतिक उपहारों को दूषित व दुरुपयोग न करें। अणुव्रत का संकल्प 'पर्यावरण को प्रदूषित न करने का संकल्प' है। वैचारिक प्रदूषण से मुक्त बने। जैन साधु पर्यावरण का सच्चा मित्र होता है। अणुव्रत आंदोलन के द्वारा पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य किया जा रहा है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रताप सिंह दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए कहा - अणुविभा द्वारा 242 अणुव्रत समितियों व मंचों के माध्यम से अणुव्रत आचार संहिता को जन जन तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। अणुव्रत शब्द छोटा हो सकता है पर विचार बहुत बड़े हैं। हम पर्यावरण के प्रति जागरूक रहें।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष संदीप डागा ने दिया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री विनीत कोठारी ने व संचालन मुनि परमानंद ने किया।

अणुव्रत है मानवीय मूल्यों की सुरक्षा का आंदोलन

गोयल भवन।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या साध्वी राकेश कुमारी जी आदि ठाणा -४ के सान्निध्य में गोयल भवन में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का मंगल शुभारंभ हुआ। सप्ताह के प्रथम दिवस को 'अणुव्रत प्रेरणा दिवस' के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं द्वारा सामूहिक अणुव्रत संगान से हुआ।

क्षेत्र की अणुव्रत संयोजिका मोना नौलखा ने सभी का स्वागत करते हुए अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह की जानकारी दी। साध्वी राकेश कुमारी जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि जब विश्व हिंसा, युद्ध और अशांति के दौर से गुजर

रहा था तब गणाधिपति गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात कर मानवता को नैतिक जीवन की दिशा प्रदान की। अणुव्रत आंदोलन गरीब की झोपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक पहुँचा और राजनेताओं, साहित्यकारों, विद्वानों एवं वैज्ञानिकों सहित समाज के विभिन्न वर्गों को इससे जोड़ा। न्होंने कहा कि अणुव्रत मानवीय मूल्यों की सुरक्षा, स्वस्थ आचार-संहिता एवं स्वस्थ समाज के निर्माण का आंदोलन है। इसका उद्देश्य व्यक्ति के जीवन में प्रामाणिकता, नैतिकता एवं चरित्र-शुद्धि स्थापित करना है। लाखों लोगों ने अणुव्रत के संकल्पों को स्वीकार कर नशामुक्त एवं संयमित जीवन की ओर कदम बढ़ाए हैं। विद्यालयों एवं विभिन्न संस्थानों तक भी अणुव्रत का संदेश पहुँचा

है। साध्वीश्री जी ने अणुव्रत आंदोलन से जुड़े अपने कुछ संस्मरण भी साझा किए। अणुव्रत के साथ अहिंसा के महत्व को बताते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि अहिंसा धर्म की आधारशिला और विश्व बंधुत्व का मार्ग है। अहिंसा केवल किसी को शारीरिक कष्ट न पहुँचाने तक सीमित नहीं, बल्कि हमारी वाणी और व्यवहार में भी होनी चाहिए। कठोर शब्द एवं कटु व्यवहार भी संबंधों को आहत करते हैं। अहिंसा को जीवन में उतारने से परिवार, समाज और राष्ट्र में शांति एवं सौहार्द की भावना मजबूत होती है। इस संदर्भ में उन्होंने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के सूत्र चतुर्मास तथा डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से जुड़े प्रसंग का भी उल्लेख किया। रेखा कोठारी ने आभार ज्ञापन किया।

भगवान महावीर और महात्मा गांधी का अहिंसा मार्ग ही विश्व शांति का आधार

चेन्नई।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, चेन्नई की आयोजना में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत द्वितीय दिवस अहिंसा दिवस का कार्यक्रम चेन्नई महानगर के विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया गया। द्विप्लिकेन तेरापंथ भवन में अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि डॉ.

पुलकितकुमारजी ठाणा-2 एवं किलपाँक तेरापंथ भवन में साध्वी उदितयशाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में मंचीय कार्यक्रम हुए। मुनि डॉ. पुलकितकुमार जी ने कहा कि आज विश्व अहिंसा दिवस है। भगवान महावीर ने अहिंसा का महान संदेश दिया था। महात्मा गांधी ने वर्तमान परिदृश्य में उसे प्रचारित किया। साध्वी उदितयशाजी ने कहा कि अणुव्रत एक आचार संहिता है। साध्वी भव्ययशा ने बच्चों के साथ सभी को प्रामाणिकता

पूर्ण जीवन जीने का आह्वान किया। अध्यक्ष सुभद्रा लुणावत ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। माला कातरेला, मंत्री कुशल बाँठिया, उपाध्यक्ष स्वरूप चन्द्र दौती ने अपने विचार व्यक्त किए।

❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

— आचार्य श्री महाश्रमण



नैतिकता का संदेश, संयम का संकल्प: 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' पर देश भर में उमड़ा अपार उत्साह!

अणुव्रत है यूनिवर्सल धर्म, व्यक्ति सुधार से ही संभव है राष्ट्र सुधार

सूरत।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निर्देशन में अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत द्वारा 1 अक्टूबर से 7 अक्टूबर तक आयोजित किए जा रहे अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत तृतीय दिवस को तेरापंथ भवन, सिटी लाइट में 'सांप्रदायिक सौहार्द दिवस' के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के विद्वान शिष्य मुनि डॉ. मदन कुमार जी के पावन सान्निध्य में हुआ जिसमें विविध धर्म के धर्मगुरु या धर्म प्रवक्ता विशेष रूप से सनातन धर्म के पंडित राम प्रताप शुक्ला (चित्रकूट), ब्रह्माकुमारी से ब्रह्माकुमारी अवनी बहन, ईसाई संप्रदाय से फादर डेनिस एल्विस एमिस, मुस्लिम संप्रदाय से सूफी संत एम.ए. चिश्ती साहब, पारसी संप्रदाय से डॉ. मीनू परबिया साहब, आदि उपस्थित रहे एवं 'सामाजिक-राष्ट्रीय विकास में

सांप्रदायिक एकता की महत्ता' पर अपने विचारों को प्रस्तुत किया।

मुनि श्री ने अपने मुख्य सान्निध्य संबोधन में कहा कि सांप्रदायिक सौहार्द के बिना सामाजिक विकास संभव नहीं है। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी ने यूनिवर्सल धर्म - अणुव्रत प्रस्तुत किया, जो संयम, नैतिकता और मानवीय मूल्यों पर आधारित है। आचार्य तुलसी का अमर संदेश था—'ईसान पहले ईसान, फिर हिंदू या मुसलमान'। उन्होंने आगे कहा कि व्यक्ति सुधार से ही समाज और राष्ट्र का सुधार संभव है।

(प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय):

अवनी बहन ने कहा कि हमारा भीतरी स्वरूप आत्मा है, जो चैतन्य स्वरूप है। शांति और प्रेम ही आत्मा का सच्चा स्वधर्म है। सुख, शांति, प्रेम, आनंद, ज्ञान, पवित्रता और शक्ति—ये आत्मा के सात निजी गुण हैं। जब हम इन गुणों को आत्मसात कर लेते हैं, तो आंतरिक

व बाहरी अशांति समाप्त हो जाती है। हम सभी एक निराकार ईश्वर की संतान हैं; आत्मिक धरातल पर न कोई स्त्री है, न पुरुष, न हिंदू और न मुसलमान। सभी मनुष्य एक समान हैं।

पंडित रामप्रताप जी शुक्ला (चित्रकूट - सनातन धर्म):

पंडित जी ने कहा कि इस संसार में समस्त मानव एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। हमें एक गुलदस्ते की भांति मिल-जुलकर रहना चाहिए और आपसी भाईचारे को सुदृढ़ करना चाहिए। दूसरों को सुधारने के बजाय स्वयं को सुधारने का प्रयास करना श्रेयस्कर है। जब हम यह चाहते हैं कि कोई हमें न सताए, तो हमें भी दूसरों को किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुंचाना चाहिए। अपनी कमियों को दूर करने से ही जीवन सार्थक बनता है।

फादर डेनिस एल्विस एमिस (ईसाई संप्रदाय):

फादर डेनिस ने कहा कि वर्तमान में सांप्रदायिकता का दुरुपयोग लोगों के मन

में घृणा फैलाने के लिए किया जा रहा है। बाइबिल की सीख का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि हमें अनुशासन और शासन चलाने वालों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए ताकि सब शांतिपूर्ण जीवन जी सकें।

डॉ. मीनू परबिया (पारसी संप्रदाय):

डॉ. परबिया ने पारसी धर्म के तीन मूलभूत सिद्धांतों—मन, वचन और कर्म की शुद्धि पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मनुष्य धन कमाए, लेकिन व्यापार और व्यवहार में प्रामाणिकता व ईमानदारी अवश्य रखे।

सूफी संत एम. ए. चिश्ती साहब (मुस्लिम संप्रदाय):

चिश्ती साहब ने कहा कि वर्तमान समय में जब विश्व में अशांति और हिंसा का वातावरण है, तब मुनि श्री और अणुव्रत समिति द्वारा शांति का यह दीप जलाना अत्यंत सराहनीय व वंदनीय कार्य है। सूफी संत सदैव पैगंबर

साहब के अमन और भलाई के संदेश को आगे बढ़ाते हैं। अशांति का मुख्य कारण नकारात्मक दृष्टिकोण है, जबकि ईश्वर की रहमत सभी के लिए समान है। बाबा फरीद के प्रसंग का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि हमें कैची नहीं, सुई बनना चाहिए—जो काटने का नहीं, बल्कि दिलों को जोड़ने का कार्य करे। 32 दांतों के बीच जीभ की तरह हमें लचीलापन अपनाना चाहिए और कट्टरपंथ व हिंसा से दूर रहना चाहिए। भारत रूपी विशाल जहाज की रक्षा करना हम सभी की साझी जिम्मेदारी है।

मुनि संयम कुमार जी एवं मुनि कल्प कुमार जी उपस्थित रहे। अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के अध्यक्ष रत भलावत ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया एवं अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए पधारें हुए सभी धर्म गुरु / धर्म प्रवक्ताओं का स्वागत किया। कार्यक्रम का कुशल एवं प्रभावी संचालन 'अणुव्रत सेवी' एवं उपासक अर्जुन मेड़तवाल ने किया।

जीवन को संयमित और अनुशासित बनाने की आचार-संहिता है अणुव्रत

गुवाहाटी।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के विद्वान सुशिष्य मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' एवं सहवर्ती मुनि विकास कुमार जी के पावन सान्निध्य एवं अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के प्रथम दिवस को अणुव्रत प्रेरणा दिवस एवं अणुव्रत गीत महासंगान का आयोजन अणुव्रत समिति द्वारा श्रद्धा एवं उत्साह के साथ तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। कार्यक्रम का संयोजन सहमंत्री प्रथम डॉ. सारिका दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री के महामंत्रोच्चार के साथ हुआ।

मुनि आनंद कुमारजी 'कालू' ने अपने उद्बोधन में कहा कि अणुव्रत केवल कोई संकल्प नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक आचार-संहिता है। वर्तमान समय में मनुष्य के सामने अनेक प्रकार की चुनौतियां हैं। उन्होंने उपस्थित जनसमुदाय को अणुव्रत के संदेश को अपने जीवन

में उतारने तथा दूसरों तक पहुंचाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में मुनि विकास कुमारजी ने अणुव्रत गीत का महासंगान करवाया। समिति की मंत्री रंजना बरड़िया ने बताया कि अणुव्रत आचार संहिता का वाचन अणुविभा की कार्यकारिणी सदस्य एवं समिति के निवर्तमान अध्यक्ष बजरंग बैद एवं समिति के संरक्षक सदस्य कैलाश काबरा ने किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष संजय चौरड़िया (JTN प्रतिनिधि) ने अपने वक्तव्य में कहा कि अणुव्रत आज के समय में समाज को नैतिक दिशा देने वाला महत्वपूर्ण अभियान है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित स्थानीय वार्ड पार्षद प्रमोद स्वामी ने अणुव्रत समिति के कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम में उपस्थित श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के अध्यक्ष रितेश खटेड़, सभी संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने अणुव्रत के आदर्शों को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया।

नवकार विद्यालय में गूंजा 'संयम मय जीवन हो...'

जसोल।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी कुंदनप्रभाजी की प्रेरणा से सहवर्ती साध्वी विद्युतप्रभा जी व साध्वी किरणयशा जी के सानिध्य में स्थानीय नवकार माध्यमिक विद्यालय, जसोल प्रांगण में प्रातः 8 बजे प्रधानाचार्य किरण कोठारी की

अध्यक्षता में अणुव्रत महासंगान व अणुव्रत प्रेरणा दिवस मनाया गया। इंगरचंद बागरेचा ने अणुव्रत गीतिका का संगान व पूरे विद्यालय की ओर से अणुव्रत महासंगान 'संयम मय जीवन हो...' का संगान किया गया। साध्वीवृंद के प्रेरणा पाथेय के साथ ही अध्यक्ष महावीर सालेचा ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया, वहीं

निवर्तमान अध्यक्ष पारसमल गोलेछा ने विद्यार्थी अणुव्रत संकल्प-पत्र का वाचन व प्रधानाचार्य किरण कोठारी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

उमेशसिंह राठौड़ ने अणुव्रत की जानकारी दी। साथ ही अणुव्रत संकल्प-पत्र भरवाए गए और 04 अक्टूबर को 'नशामुक्त परिवार मैराथन 2026' में भाग लेने का निवेदन किया गया।

चेन्नई महानगर के 14 प्रमुख स्थानों पर गूंजा अणुव्रत गीत

चेन्नई।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, चेन्नई की आयोजना में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत प्रथम दिवस गुरुवार 01 अक्टूबर को अणुव्रत प्रेरणा दिवस एवं अणुव्रत गीत महासंगान का कार्यक्रम चेन्नई महानगर के 14 विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया गया।

ट्रिप्लिकेन तेरापंथ भवन में अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि डॉ. पुलकितकुमारजी ठाणा-2 एवं

3000 से अधिक विद्यार्थियों ने सामूहिक संगान से फैलाया संयम और सदाचार का संदेश

किलपॉक डोसी हाउस में साध्वी उदितयशाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में मंचीय कार्यक्रम हुए।

मुनि पुलकितकुमारजी ने कहा कि अणुव्रत जन-मन में चारित्र का निर्माण करता है। गुरुदेव आचार्य तुलसी ने 78 वर्ष पूर्व अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। गरीब की झोपड़ी से लेकर राष्ट्रपति तक

अणुव्रत आंदोलन से जुड़े हुए हैं। साध्वी उदितयशाजी ने कहा कि अणुव्रत आचार संहिता से सम्बद्ध व्यक्ति का जीवन वर्तमान के साथ भविष्य भी सुन्दर, सुव्यवस्थित बनाता है। अध्यक्षा सुभद्रा लुणावत ने स्वागत स्वर प्रस्तुत करते हुए अणुव्रत की उपयोगिता के बारे में बताया।

मंत्री कुशल बाँठिया ने आचार संहिता का वाचन किया। उपाध्यक्ष स्वरूप चन्द दाँती ने आभार व्यक्त किया। इस गीत महासंगान में लगभग 3000 से अधिक बालक-बालिकाओं के साथ अध्यापक, विद्यालय प्रशासन अधिकारी, श्रावक ने भाग लिया।

नैतिकता का संदेश, संयम का संकल्प: 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' पर देश भर में उमड़ा अपार उत्साह!

प्राणी मात्र के प्रति संयम रखना ही अहिंसा है

उत्तर हावड़ा।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमारजी ठाणा-3 के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का दूसरा दिन अहिंसा दिवस के रूप में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत समिति हावड़ा-कोलकाता द्वारा हर्षोल्लासपूर्वक योगक्षेम विहार के योगक्षेम सभागार में समायोजित हुआ। इस अवसर पर मुख्य वक्ता वैद्य राधेश्याम श्रीवास्तव थे। सभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमारजी ने कहा - प्राणी मात्र के प्रति संयम रखना ही अहिंसा है। अहिंसा प्राणी मात्र के लिए कल्याणकारी है। भगवान

महावीर अहिंसा के महान प्रयोक्ता थे, उन्होंने अहिंसा का जीवन जीया। महात्मा गांधी अहिंसा और सत्य के पुजारी थे। लाल बहादुर शास्त्री का जीवन सादगीमय था। व्यक्ति अहिंसा की शुरुआत स्वयं से करे। मुख्य वक्ता वैद्य राधेश्याम श्रीवास्तव ने अहिंसा विषय पर विचार व्यक्त किए। अणुविभा सोसायटी के मुख्य न्यासी रतन दुगड़ ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत समिति हावड़ा के युवा सदस्यों के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष दीपक नखत ने दिया। आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति कोलकाता के अध्यक्ष नवीन दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

विकट परिस्थितियों में चट्टान की भाँति अटल रहे आचार्य भिक्षु

रायसिंहनगर।

तेरापंथ धर्म संघ के आद्य प्रवर्तक संस्थापक आचार्य भिक्षु का महाप्रयाण दिवस भाद्रपद शुक्ल तेरस गुरुवार को रात्रि में तेरापंथ भवन में श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मनाया गया।

भजन संध्या 'एक शाम आचार्य भिक्षु के नाम' की शुरुआत 'श्रद्धा विनय समेत नमो अरहंताण' और समापन 'जय महावीर भगवान...' से हुआ। अंत में लोगस पाठ का उच्चारण किया गया। जैन श्वेतांबर

तेरापंथी सभा के प्रवक्ता जयदेव गोयल ने बताया कि तत्कालीन धर्म व्यवस्थाओं एवं कार्यों में आगम सम्मत मान्यताओं की खुली अवहेलना, शिथिलताओं व कमियों को देखकर आचार्य भिक्षु ने संघर्षों, कष्टों व कठिनाइयों को सहन करते हुए महान धर्म क्रांति की।

जन-जन को सही सत्य मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। तेरापंथ धर्म संघ के अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के नेतृत्व में धर्म संघ गरिमा में गौरवशाली कंचाइयों को छू रहा है।

व्रत और ध्यान का दुर्लभ संगम

बालोतरा।

प्रोफेसर डॉ. साध्वी मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में अणुव्रत समिति के तत्वावधान में तेरापंथ भवन, अमृत सभागार में अहिंसा दिवस मनाया गया एवं त्रिदिवसीय प्रेक्षा ध्यान शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रोफेसर डॉ. साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा - आज व्रत और ध्यान का शुभ संगम हो रहा है। भगवान महावीर ने सम्पूर्ण मानव जाति को अहिंसा का संदेश दिया। महात्मा

गांधी अहिंसा के परम पुजारी रहे हैं। युग पुरुष, युग नायक आचार्य तुलसी और प्रेक्षाप्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ ने मानवोत्थान के लिए अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान जैसे महान अवदान दिए। साध्वीश्री ने प्रेक्षाध्यान शिविराधियों को उपसंपदा स्वीकार करवाई व प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। तेरापंथ सभा अध्यक्ष राणमल फोलामेहता ने स्वागत भाषण किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व संचालक सुरंगी लाल सालेचा ने विचार प्रस्तुत

किए। मुम्बई से समागत उपासक एवं प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक शांतिलाल कोठारी एवं मीना साबड़ा ने विचारविम्व्यक्ति दी। इस अवसर पर तेरापंथ सभा उपाध्यक्ष ललित जीरावला, मंत्री मोहन लाल बाफना, सहमंत्री राजेश बाफना, जोधपुर शिक्षा विभाग के पूर्व निदेशक पृथ्वीराज दवे, अणुव्रत समिति अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा, उपाध्यक्ष कमल कुहाड़ सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ. साध्वी शौर्यप्रभाजी ने किया।

नैतिकता और मानवीय मूल्यों की रक्षा का आंदोलन है अणुव्रत

विलेपार्ले, मुंबई।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी राकेश कुमारी जी आदि ठाणा-४ के सान्निध्य में गोयल भवन में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का मंगल शुभारंभ हुआ। सप्ताह के प्रथम दिवस को 'अणुव्रत प्रेरणा दिवस' के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं द्वारा सामूहिक अणुव्रत संगान से हुआ। क्षेत्र की अणुव्रत संयोजिका मोना नौलखा ने सभी का स्वागत करते हुए अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह की जानकारी दी। साध्वी राकेश कुमारी जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि जब विश्व हिंसा, युद्ध और अशांति के दौर से गुजर रहा था तब गणाधिपति गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात कर मानवता को

नैतिक जीवन की दिशा प्रदान की। अणुव्रत आंदोलन गरीब की झोपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक पहुँचा और राजनेताओं, साहित्यकारों, विद्वानों एवं वैज्ञानिकों सहित समाज के विभिन्न वर्गों को इससे जोड़ा। उन्होंने कहा कि अणुव्रत मानवीय मूल्यों की सुरक्षा, स्वस्थ आचार-संहिता एवं स्वस्थ समाज के निर्माण का आंदोलन है। इसका उद्देश्य व्यक्ति के जीवन में प्रामाणिकता, नैतिकता एवं चरित्र-शुद्धि स्थापित करना है। लाखों लोगों ने अणुव्रत के संकल्पों को स्वीकार कर नशामुक्त एवं संयमित जीवन की ओर कदम बढ़ाए हैं। विद्यालयों एवं विभिन्न संस्थानों तक भी अणुव्रत का संदेश पहुँचा है। साध्वीश्री ने अणुव्रत आंदोलन से जुड़े अपने कुछ संस्मरण भी साझा किए। अणुव्रत के साथ अहिंसा के महत्व को बताते हुए साध्वीश्री ने कहा कि अहिंसा

धर्म की आधारशिला और विश्व बंधुत्व का मार्ग है। अहिंसा केवल किसी को शारीरिक कष्ट न पहुँचाने तक सीमित नहीं, बल्कि हमारी वाणी और व्यवहार में भी होनी चाहिए। कठोर शब्द एवं कटु व्यवहार भी संबंधों को आहत करते हैं। अहिंसा को जीवन में उतारने से परिवार, समाज और राष्ट्र में शांति एवं सौहार्द की भावना मजबूत होती है। इस संदर्भ में उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के सूरत चातुर्मास तथा डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से जुड़े प्रसंग का भी उल्लेख किया। इस अवसर पर दिलीप धींग ने 4 अक्टूबर को पर्यावरण दिवस के अंतर्गत आयोजित होने वाली मैराथॉन रैली की जानकारी दी। सीमा मेहता, रेखा कोठारी एवं मोना नौलखा ने अहिंसा पर अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। अंत में रेखा कोठारी ने आभार ज्ञापन किया।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह : अहिंसा दिवस

बाड़मेर।

अणुव्रत समिति बाड़मेर द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रामू बाई में अहिंसा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वीरचंद वडेरा, विशिष्ट अतिथि गौतम बोथरा तथा अध्यक्षता प्राचार्य शोभा दवे ने की। कार्यक्रम का कुशल नेतृत्व समिति अध्यक्ष पवन संखलेचा 'नमन' एवं संचालन डॉ गोवर्धन सिंह सोडा 'जहरीला' ने किया। शुरुआत में दीप प्रज्वलन, ज्योति सिंघवी

द्वारा अणुव्रत गीत तथा शकुंतला जैन द्वारा कविता प्रस्तुत की गई। अतिथियों ने अपने संबोधन में भगवान महावीर, महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री और आचार्य तुलसी के अहिंसा व संयम के सिद्धांतों को प्रासंगिक बताया। प्राचार्य शोभा देवी ने अनुव्रत के 11 नियमों को जीवन के लिए उपयोगी बताया।

कार्यक्रम में बच्चों का बहुमान किया गया तथा आभार वीराराम भुरटिया ने व्यक्त किया। सोशल मीडिया प्रभारी मुकेश बोथरा ने बताया कि अगला दिन सांप्रदायिक सद्भावना दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

'सुसंस्कारों का निर्माण आज की सर्वोपरि जरूरत

सिलचर।

अणुव्रत समिति जयपुर ने अणुविभा केन्द्र में मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' एवं मुनि संभव कुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट कार्यक्रम आयोजित किया। जिसमें जयपुर क्षेत्र की विभिन्न स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

मौके पर बड़ी संख्या में उपस्थित विद्यार्थी और अभिभावक जनों को सम्बोधित कर मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' ने कहा - अणुव्रत के कार्यक्रम नैतिक और चारित्रिक गुणों के संपोषक हैं। यह व्यक्ति सुधार से समाज सुधार का आंदोलन है। आदर्श परिवार और स्वस्थ समाज का निर्माण करना इसका मुख्य उद्देश्य

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट कार्यक्रम

है। उन्होंने कहा - आदर्श परिवार का आधार सुसंस्कार हैं। भावी पीढ़ी में सुसंस्कारों का निर्माण आज की सर्वोपरि जरूरत भी है। इस अवसर पर मुनिश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह 2026 के बेनर का अनावरण भी किया। इस अवसर पर गीत गायन, चित्रकला, निबंध लेखन, भाषण, कविता पाठ आदि विविध प्रतिस्पर्धाएं आयोजित हुईं। अन्त में विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोर्म, अणुव्रत समिति आदि के पदाधिकारियों सहित अनेक समाज जन उपस्थित थे।

विद्यार्थियों संग मनाया गया अहिंसा दिवस

जसोल। एस. वोहरा राजकीय

उच्च माध्यमिक विद्यालय जसोल में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का दूसरा दिवस अहिंसा दिवस का कार्यक्रम साध्वी विद्युतप्रभाजी व साध्वी चारित्रप्रभाजी के सान्निध्य में व प्रधानाचार्य विष्णुदास की अध्यक्षता में प्रातः 8.30 बजे विद्यालय प्रांगण में अणुव्रत समिति जसोल के तत्वावधान में विद्यार्थियों व शिक्षकों की उपस्थिति में मनाया गया। जिसमें अणुव्रत संकल्प-पत्र भरवाए गए। गांधी जयंती व लाल बहादुरशास्त्री जयंती पर प्रकाश डाला गया।

नैतिकता का संदेश, संयम का संकल्प: 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' पर देश भर में उमड़ा अपार उत्साह!

मानवता ही एकमात्र धर्म और संप्रदाय'

गंगाशहर।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी निर्देशित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का तृतीय दिवस सांप्रदायिक सौहार्द दिवस, अणुव्रत समिति गंगाशहर द्वारा बोथरा कन्या महाविद्यालय, गंगाशहर के प्रांगण में समणी निर्वाण प्रज्ञा जी एवं समणी चैतन्य प्रज्ञाजी के सानिध्य में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यक्रम प्रभारी राजेंद्र बोथरा द्वारा मंगलाचरण से किया गया। स्वागत एवं परिचय वक्तव्य बोथरा गल्स कॉलेज के प्रबंधक शांतिलाल बोथरा ने दिया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष करणी दान रांका ने विचार व्यक्त किए। समणी निर्वाणप्रज्ञा जी ने अपने मंगल पाथेय में कहा कि संप्रदाय सिर्फ एक है मानव संप्रदाय और इसका धर्म सिर्फ एक

है मानवता। आचार्य तुलसी का यही मिशन था। समिति के मंत्री एडवोकेट कन्हैयालाल बोथरा ने बताया कि समणी चैतन्य प्रज्ञाजी ने कहा कि हर संप्रदाय का उद्देश्य मानव को मानव से जोड़ना होना चाहिए। अणुव्रत समिति गंगाशहर के उपाध्यक्ष मनोज सेठिया, मनीष बाफना, कोषाध्यक्ष विजय बोथरा, भंवर सेठिया, भेरूदान सेठिया, हेमराज गुलगुलिया, ताराचंद गुलगुलिया, देवेंद्र बोथरा, पुखराज दुगड़, बछराज गुलगुलिया, दिलीप सिरौहिया, डालचंद बुच्चा, आशीष गर्ग, महिला विंग से संतोष बोथरा, शशि रांका, हेमा पारख सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री एडवोकेट कन्हैया लाल बोथरा ने किया एवं आभार ज्ञापन कार्यक्रम प्रभारी आशीष गर्ग ने किया।

अहिंसा दिवस पर प्रेरणादायी कार्यक्रम का आयोजन

बारडोली।

अणुव्रत समिति बारडोली द्वारा अणुविभा के निर्देशानुसार अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत अहिंसा दिवस के अवसर पर प्रेरणादायी कार्यक्रम का आयोजन सेंसेरिटी स्कूल में किया गया। जिसमें 250 बच्चों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में अणुव्रत समिति की संगठन मंत्री पायल चोरडिया ने एक सुंदर एवं प्रेरणादायी कहानी के माध्यम से विद्यार्थियों को अहिंसा का महत्व समझाया। उन्होंने बताया कि हमें अपने जीवन में अहिंसा का पालन करते हुए किसी भी जीव को

मन, वचन और कर्म से कष्ट नहीं पहुँचाना चाहिए। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता मीना मेहता ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए समझाया कि हमें अपने जीवन में अहिंसा को किस प्रकार अपनाना चाहिए तथा अपने शरीर, मन और व्यवहार को अहिंसात्मक जीवनशैली से कैसे सुरक्षित एवं संयमित रखा जा सकता है। उन्होंने बच्चों को अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति की अध्यक्षा अमृता कावडिया सहित अणुव्रत समिति की टीम एवं अन्य सदस्य उपस्थित रहे। प्रिंसिपल अमर सर एवं टीचर्स उन्नति बहन सभी टीचर्स के उपस्थित अच्छी रही।

संप्रदायवाद से ऊपर उठकर मानव सौहार्द स्थापित करना ही अणुव्रत का लक्ष्य

गुवाहाटी। अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के तृतीय दिवस को सांप्रदायिक सौहार्द दिवस पर अणुव्रत समिति गुवाहाटी द्वारा काटाबाड़ी स्थित स्कॉलर्स ग्लोबल स्कूल में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत गीत से हुई। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष संजय चौरडिया ने सांप्रदायिक सौहार्द पर अपने विचार रखे। स्कूल की प्राध्यापक नाजिरा

बेगम एवं स्कूल परिचालक रामेश्वर शर्मा का सम्मान समिति की ओर से किया गया। कार्यक्रम का संचालन समिति की संगठन मंत्री राखी बैंगानी ने किया व धन्यवाद ज्ञापन मंत्री रंजना बरडिया ने किया। इस अवसर पर समिति की उपाध्यक्ष सरोज बरडिया, सहमंत्री डॉ. सारिका दुगड़, सहमंत्री एवं उद्बोधन सप्ताह के मुख्य संयोजक राजकुमार भटेरा, कार्यकारिणी सदस्य निर्मल बैद उपस्थित रहे।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' के पांचवें दिन नशामुक्ति दिवस का आयोजन

आमेट।

नशामुक्ति दिवस - अणुव्रत समिति अणुव्रत समिति आमेट द्वारा 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' के पांचवें दिन नशामुक्ति दिवस का आयोजन पीएम राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय (मित्र मंडल परिसर, आमेट) में किया गया।

कार्यक्रम प्रधानाचार्य प्रकाश चन्द्र प्रजापत के निर्देशन में तथा प्राध्यापक जगदीश चन्द्र शर्मा की अध्यक्षता में हुआ। इसमें अणुव्रत समिति अध्यक्ष रेणु छाजेड़ विशिष्ट अतिथि एवं मुख्य वक्ता रहें। साथ ही अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ खंड अध्यक्ष मुकेश चन्द्र वैष्णव एवं बहादुर मीणा उपस्थित रहे।

मुख्य वक्ता रेणु छाजेड़ ने विद्यार्थियों को नशे के दुष्परिणामों की जानकारी देकर नशामुक्त जीवन की शपथ दिलाई। मुकेश चन्द्र वैष्णव और जगदीश चन्द्र शर्मा ने भी विद्यार्थियों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने व परिवार को नशामुक्त रखने हेतु प्रेरित किया। योगदान के लिए हितेश लौहार को सम्मानित किया गया।

नशा मुक्त परिवार महा मैराथन 'नया दौर - नयी दौड़' का आयोजन

सूरत।

नशा मुक्त परिवार महा मैराथन 'नया दौर - नयी दौड़' का आयोजन SVNIT सूरत एवं अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत द्वारा SVNIT कैम्पस में आयोजित किया गया।

नशा मुक्त परिवार मैराथन को SVNIT के डायरेक्टर प्रोफेसर अनुपम शुक्ला, सूरत मेयर माया बेन मांवानी, जिला कलेक्टर तेजस परमार, अणु विभा महामंत्री मनोज सिंघवी, अणुव्रत समिति

अध्यक्ष रतनलाल भलावत ने झंडी दिखाकर फ्लैग ऑफ किया ! लगभग

अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत एवं SVNIT सूरत द्वारा: नशा मुक्ति मैराथन

1500 युवकों ने इसमें हिस्सा लिया। गरिमामय उपस्थिति : SVNIT से के के सिंह, रजिस्ट्रार SVNIT, प्रोफेसर संजय पटेल एवं अणुविभा से पायल चोरडिया (संगठन मंत्री) अणुविभा राजेश सुराणा (रेड क्रॉस सोसायटी मेम्बर) संजय बोथरा (गुजरात प्रभारी

) आदि कार्यक्रम में उपस्थित रहे। अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत परामर्शक पदाधिकारी कार्यसमिति सदस्य एवं आस पास की सभा संस्था के अध्यक्ष मंत्री श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

3 और 5 किलोमीटर की दौड़ का आयोजन हुआ सभी प्रतिभागियों ने आनंद उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम में सभी पार्टिसिपेंट्स में नई ऊर्जा का संचार किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के मंत्री अनिल चौरडिया ने किया।

सशक्त पीढ़ी - नशा मुक्त परिवार

कोलकाता।

अणुव्रत विश्व भारती समिति के निर्देशन में अणुव्रत समिति, कोलकाता द्वारा 'हमारी पीढ़ी-सशक्त पीढ़ी-नशा मुक्त परिवार-नया दौर-नई दौड़' की भावना के साथ स्पवदे सफारी पार्क, रवींद्र सराबर में एक विशाल मैराथन दौड़ का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीत के संगान के साथ हुआ। कोलकाता समिति के अध्यक्ष नवीन दुगड़ ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अणुव्रत विश्व भारती

कोलकाता में उत्साहपूर्वक दौड़े 700 प्रतिभागी

के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रताप दुगड़, मुख्य न्यासी रतन दुगड़, प्रायोजक धर्मेन्द्र डागा, लायंस प्रेसिडेंट अरविंद डागा एवं विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों का स्वागत दुपट्टा पहनाकर किया गया। अपने संबोधन में नवीन दुगड़ ने कहा कि यह आयोजन केवल एक मैराथन दौड़ नहीं, बल्कि नशे व ड्रग एडिक्शन के विरुद्ध समाज को सकारात्मक दिशा

देने का एक सशक्त अभियान है। राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रताप दुगड़ ने कहा कि देश भर में अणुव्रत समितियां नशा मुक्त भारत के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। कार्यक्रम में लगभग 700 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया और ड्रग्स एडिक्शन के खिलाफ ऑनलाइन व ऑफलाइन शपथ (प्लेज) ली। प्रताप दुगड़ ने हरी झंडी दिखाकर मैराथन को रवाना किया। न्यासी रतन दुगड़, सहित तेरापंथी सभा, महिला मंडल, युवक परिषद व अन्य संस्थाओं के कार्यकर्ताओं की उल्लेखनीय उपस्थिति एवं सहयोग रहा।

'कौन बनेगा भिक्षु भक्त' प्रतियोगिता का आयोजन

ट्रिप्लिकेन।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के विद्वान सुशिष्य डॉ मुनि पुलकित कुमारजी के मंगल सानिध्य ट्रिप्लिकेन तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा कौन बनेगा भिक्षु भक्त प्रश्न मंच प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा प्रतियोगिताएं ज्ञान वृद्धि का माध्यम है। प्रतियोगिताओं के द्वारा श्रावक श्राविकाओं

में ज्ञान आराधना का विकास होता है। चातुर्मास प्रारंभ होने के साथ ही ज्ञानोत्सव के अंतर्गत अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। चातुर्मास काल में तपस्या का जितना महत्व है उतना ही महत्व ज्ञान आराधना का है। इस बार अनेक श्रावक श्राविकाओं ने प्रतियोगिताओं से जुड़कर ज्ञान का क्षयोपशम बढ़ाया है। ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व 25 बोल वर्ग पहलेली, तुलसी प्रतियोगिता, किसमें है कितना ज्ञान तथा दिमाग दौड़ाओ उत्तर

पाओ आदि अनेक प्रतियोगिताओं में श्रावक समाज ने ज्ञान अर्जन किया। नचिकेता मुनि आदित्य कुमार ने प्रतियोगिता में सम्मिलित सभी को आध्यात्मिक प्रेरणा दी। भिक्षु क्विज प्रतियोगिता का रोचक प्रभावी संचालन राजेश खटेड ने किया। ट्रिप्लिकेन महिला मंडल अध्यक्ष मंजू गेलड़ा ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजिका मधु चोरडिया एवं प्रति खांटेड के साथ ट्रिप्लिकेन महिला मण्डल से उपाध्यक्ष मोना सेठीया का श्रम रहा।

तप, जप और क्षमापना की पावन धारा: पर्युषण महापर्व पर आत्म-विशुद्धि के रंग में रंगा संपूर्ण तेरापंथ समाज!

पूरे पर्युषण काल में गूंजा महामंत्र नवकार

सैथिया।

पर्युषण महापर्व के पावन अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद, सैथिया द्वारा पूरे पर्युषण काल में अखंड नवकार मंत्र जाप का आयोजन श्रद्धा एवं भक्ति के साथ किया गया।

परिषद के सदस्यों एवं श्रद्धालुओं ने पूरे पर्युषण काल में निरंतर नवकार महामंत्र का जाप करते हुए इस आध्यात्मिक अनुष्ठान में सहभागिता निभाई। अखंड जाप के माध्यम से सभी ने संयम, साधना और आत्मचिंतन की भावना को जीवन में उतारने का प्रयास किया।

प्रवचन, प्रतियोगिता और सामायिक - धर्ममय बना शिरपुर

शिरपुर।

पूज्यप्रवर 'युगप्रधान' आचार्यश्री महाश्रमणजी की महती कृपा से महासभा द्वारा पर्युषण पर्व में धर्म-आराधना हेतु बेरीवली-मुंबई से प्रवक्ता उपासिका रतन बड़ाला एवं सहयोगी उपासिका चंदा धाकड़ धर्माधना कराने हेतु शिरपुर पधारे। उनके सानिध्य में पर्युषण पर्व के आठ दिनों का सुचारू रूप से आयोजन हुआ। उपासिकाओं ने काल चक्र, भगवान ऋषभदेव, भगवान महावीर के जीवन पर आधारित प्रवचन दिया। साथमें गणधर,

तेरापंथ का इतिहास एवं नव तत्व के बारे में जानकारी दी। रात्रिकालीन अर्हत् वंदना, प्रवचन के पश्चात प्रतियोगिता के माध्यम से अनेक अनेक जानकारी दी। सामायिक दिवस के उपलक्ष्य में तेरापंथ युवक परिषद, शिरपुर द्वारा अभिनव सामायिक का आयोजन हुआ। जप दिवस पर पूर्ण तेरापंथ समाज द्वारा 24 घंटे नवकार महामंत्र का अखंड जप किया पर्युषण में अठाई-1, पांच -2, तेल -4 और अनेक तपस्या हुई। अष्टप्रहरी पौषध -8, छहप्रहरी पौषध -1, चारप्रहरी पौषध -18 और साथ में संवर भी हुए।

तपस्या तेज, ओज व प्राणऊर्जा का संवर्धन करती है

अहमदाबाद।

साध्वी अणिमाश्री जी के सानिध्य में शाहीबाग तेरापंथ भवन में चन्द्रा देवी चोपड़ा ने तेहत्तर (73) दिन की तपस्या एवं रेखा कोठारी ने तीस (30) दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। विशाल परिषद ने 'ॐ अर्हम्' की हर्ष ध्वनि के साथ तपस्विनी बहनों के तप की अनुमोदना की। साध्वी अणिमाश्री जी ने परिषद को संबोधित करते हुए कहा - 'तपस्या वह संजीवनी बूटी है, जिससे भव-भ्रमण रुक जाता है। तपस्या तेज, ओज व प्राणऊर्जा का संवर्धन करने वाली है। तपस्या कर्म शरीर को तनु कर सकती है। तपस्या से तपस्वी का आभामंडल तेजोदीप्त बनता है। तपस्या सत्यं शिवं सुंदरं के भव्य महल में प्रविष्ट कराने वाला द्वार है। चातुर्मास तपस्या की सीजन है। जिनका क्षयोपशम प्रबल होता है, वो ही तप के रथ पर आरुढ़ होकर आत्मनगर की सैर करता है।'।

साध्वी श्री ने कहा - आत्मबल, मनोबल, संकल्पबल व परिवार के सहयोग-बल से ही तपस्वी तपस्या कर सकते हैं। साधु-साध्वियों की प्रेरणा भावों को गति प्रदान करती है। गुरु के आशीर्वाद व ऊर्जा से तपस्वी अपनी भावना को साकार करते हैं। चन्द्रादेवी चोपड़ा ने तेहत्तर दिन की तपस्या कर नए इतिहास का सृजन किया है। यह इनका ग्यारहवां मासखमण है। हम कामना करते हैं, ये और आगे बढ़ें। रेखा कोठारी का यह दूसरा मासखमण है। इनकी सासु-माँ शान्ता कोठारी ने दो सौ ग्यारह (211) दिन की तपस्या कर तेरापंथ में तप की स्वर्णिम ख्यात बनाई है। डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने मंच का कुशल व प्रभावी संचालन किया। साध्वी कणिकाश्री जी, डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी व साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने भावपूर्ण तप-गीत के द्वारा अनुमोदना की। सभाध्यक्ष राकेश सिपानी एवं महिला मंडल अध्यक्ष सुशीला खतंगने साध्वी प्रमुखश्री जी के संदेश का वाचन किया।

संयम, स्वाध्याय और सामायिक की त्रिवेणी

पीतमपुरा, दिल्ली।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की आज्ञा से पीतमपुरा, दिल्ली में चातुर्मासगत बहुश्रुत मुनि उदित कुमारजी स्वामी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व 2026 श्रद्धा एवं साधना के साथ संपन्न हुआ। आठों दिवसों में श्रावक-श्राविकाओं की उत्साहपूर्ण सहभागिता रही।

प्रथम दिवस — खाद्य संयम दिवस आहार में संयम एवं इंद्रिय-निग्रह की प्रेरणा देते हुए मुनिश्री ने कहा— 'भोजन आवश्यकता है, स्वाद तृष्णा। दोनों का अंतर समझना ही संयम है।'।

द्वितीय दिवस — स्वाध्याय दिवस मुनि उदित कुमार जी ने कहा— 'स्वाध्याय ग्रंथों को पढ़ना ही नहीं, स्वयं को पढ़ना भी है स्वाध्याय के माध्यम से आत्मचिंतन भी संभव है।'।

तृतीय दिवस — सामायिक दिवस आज मुनिश्री के सान्निध्य में अभिनव सामायिक का आयोजन हुआ, जिसके अंतर्गत करीब 568 अभिनव सामायिक हुई। मुनिश्री ने अभिनव सामायिक आराधना के माध्यम से समता एवं आत्मनिरीक्षण का संदेश दिया और कहा— 'सामायिक कुछ समय संसार से नहीं, स्वयं से जुड़ने का अवसर है।'।

चतुर्थ दिवस — वाणी संयम दिवस मुनिश्री ने कहा— 'शब्द जोड़ भी सकते हैं और तोड़ भी; इसलिए वाणी में विवेक आवश्यक है।' मुनिश्री ने मितभाषिता एवं मधुर वाणी के महत्व पर प्रकाश डाला।

पंचम दिवस — व्रत चेतना दिवस व्रतों के प्रति जागरूक करते हुए मुनिश्री ने कहा— 'व्रत बंधन नहीं, आत्मबल को जागृत करने वाला संकल्प है।'।

षष्ठ दिवस — जप दिवस जप के माध्यम से एकाग्रता एवं भावशुद्धि की प्रेरणा दी गई। मुनिश्री ने कहा— 'मंत्र के साथ जब मन जुड़ता है, तभी जप साधना बनता है।'।

सप्तम दिवस — ध्यान दिवस ध्यान के विविध प्रयोगों के माध्यम से अंतर्मुखी साधना की प्रेरणा देते हुए मुनिश्री ने कहा— 'ध्यान बाहर से भीतर की यात्रा है; यही आत्मजागरण का मार्ग है।'।

संवत्सरी महापर्व — क्षमा और आत्मावलोकन का पर्व संवत्सरी पर सामायिक, प्रतिक्रमण, तप एवं स्वाध्याय के माध्यम से आत्मावलोकन किया गया। मुनिश्री ने भगवान महावीर के जीवन-प्रसंगों से अहिंसा, संयम एवं क्षमा की प्रेरणा दी। मुनिश्री ने कहा— 'संवत्सरी दूसरों की भूल देखने से पहले स्वयं को देखने का अवसर है। क्षमा से मन का

वैर समाप्त होता है।'। संवत्सरी महापर्व के अवसर पर मुनि रम्य कुमार जी एवं मुनि ज्योतिर्मय कुमार जी ने भी विभिन्न विषयों पर उद्बोधन दिया।

क्षमापना दिवस

दिल्ली समाज की विभिन्न संस्थाओं की ओर से समाज के प्रति क्षमापना के भावों की अभिव्यक्ति दी गई इस समारोह में केंद्रीय संस्थानों के भी गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

ज्ञातव्य बिंदु

पर्युषण काल में अखंड जप में पीतमपुरा सहित शालीमार बाग, मानसरोवर गार्डन, कीर्ति नगर, त्रि नगर, शास्त्री नगर, उत्तर दिल्ली तेरापंथ महिला मंडल, अरिहंत नगर ने सहभागिता दर्ज की।

प्रतिदिन कार्यक्रम का मंगलाचरण जप का दायित्व संभालने वाली संस्थाओं की महिलाओं द्वारा हुआ। संवत्सरी पर खिलौनी देवी धर्मशाला परिसर में करीब १०८ पौषध हुए। 'विघ्न निवारण तेले' में ७६ तेले हुए, जिनमें 11 व्यक्तियों ने अठाई एवं आगे की तपस्या की ओर कदम बढ़ाया। प्रतिदिन श्रद्धालुओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। पर्युषण के इस आठ दिवस की व्यवस्थापन का कार्य श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा पीतमपुरा द्वारा संचालित किया गया।

तप, जप और मैत्री का संगम - पर्युषण

नागपुर।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा-नागपुर के तत्वावधान में नौ दिवसीय पर्युषण पर्व का आध्यात्मिक, ज्ञानवर्धक एवं साधनामय आयोजन किया गया। तेरापंथ धर्मसंघ के परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के निर्देशन एवं केंद्र से प्राप्त निर्देशानुसार उपासक गणपतलाल जैन एवं उपासक दिनेश बापना का विशेष मार्गदर्शन नागपुर श्रावक समाज को मिला।

पर्युषण पर्वाराधना में भगवान महावीर के जीवन चरित्र की व्याख्या एवं उनके तीर्थंकर बनने तक की यात्रा सहित विभिन्न धार्मिक विषयों की सरल एवं प्रभावशाली व्याख्या की। 9 दिन क्रमशः खाद्य संयम दिवस/ स्वाध्याय दिवस/ सामायिक दिवस/वाणी संयम दिवस/ व्रत चेतना दिवस/जप दिवस/ध्यान दिवस/संवत्सरी महापर्व के पश्चात मैत्री

दिवस का आयोजन हुआ। तपस्या के इस पावन क्रम में उपवास एवं विविध तप की आराधना करने वाले सभी तपस्वियों की हृदय से अनुमोदना की गई। तपस्वियों के आत्मबल, दृढ़ संकल्प एवं आध्यात्मिक साधना को नमन करते हुए समाजजनों ने उनके प्रति मंगलभावना व्यक्त की। उपासक जी ने गणाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी द्वारा दिए गए अणुव्रत अवदान के महत्व को तथा बारह व्रतों को सरलतापूर्वक समझाते हुए उन्होंने सभी को बारहव्रती बनने के लिए प्रेरित किया।

अनेक श्रावकों ने बारह व्रत के प्रति अपने संकल्प व्यक्त किये। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा दिए गए अवदान प्रेक्षा ध्यान का निरंतर प्रयोग करके किस प्रकार व्यक्ति अपने जीवन में शांति स्थापित कर सकता है इसकी प्रेरणा दी। एवं जप दिवस पर नमस्कार महामंत्र का अखंड जाप का क्रम भी चला।

पर्युषण पर्व पर धर्म आराधना की बहार

रेलमगरा (राजसमंद)।

वरिष्ठ उपासक रतनलाल लोढ़ा तथा सहयोगी उपासक तोलाराम छाजेड़ का रेलमगरा आगमन हुआ। पर्युषण पर्व के प्रथम दिन से ही रेलमगरा में धर्म आराधना, त्याग, तपस्या, स्वाध्याय एवं प्रवचन की ऐसी श्रृंखला शुरू हुई, जिससे पूरा वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत हो गया। उपासक रतनलाल लोढ़ा ने खाद्य संयम दिवस, स्वाध्याय दिवस, सामायिक दिवस, वाणी दिवस, व्रत चेतना दिवस एवं जप दिवस के अवसर पर विशेष प्रवचन देते हुए आत्म-जागरण, संयम और साधना का सारगर्भित संदेश दिया। उनके प्रेरणादायी प्रवचनों का श्रावक-श्राविकाओं पर विशेष प्रभाव देखने को मिल रहा है। साथ ही आजके दिन अपने मन के अंदर बेटी आत्मा को निर्मल बना आपस के वेर भाव को खत्म करना चाहिए। सायं कालीन प्रतिक्रमण में अच्छी उपस्थिति रही।

संक्षिप्त खबर

सुसंस्कारों का निर्माण आज की सर्वोपरि जरूरत

जयपुर। अणुव्रत समिति जयपुर ने अणुविभा केन्द्र में मुनि तत्त्व रचि जी 'तरुण' एवं मुनि संभव कुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट कार्यक्रम आयोजित किया। जिसमें जयपुर क्षेत्र की विभिन्न स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। मौके पर बड़ी संख्या में उपस्थित विद्यार्थी और अभिभावक जनों को सम्बोधित कर मुनि तत्त्व रचि जी 'तरुण' ने कहा - अणुव्रत के कार्यक्रम नैतिक और चारित्रिक गुणों के संपोषक हैं। यह व्यक्ति सुधार से समाज सुधार का आंदोलन है। आदर्श परिवार और स्वस्थ समाज का निर्माण करना इसका मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने कहा - आदर्श परिवार का आधार सुसंस्कार हैं। भावी पीढ़ी में सुसंस्कारों का निर्माण आज की सर्वोपरि जरूरत भी है। इस अवसर पर मुनिश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह 2026 के बेनर का अनावरण भी किया। इस अवसर पर गीत गायन, चित्रकला, निबंध लेखन, भाषण, कविता पाठ आदि विविध प्रतिस्पर्धाएं आयोजित हुईं। अन्त में विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। कार्यक्रम में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत समिति आदि के पदाधिकारियों सहित अनेक समाज जन उपस्थित थे।

गांधी जयंती पर लगाया निःशुल्क मधुमेह जांच शिविर

राजाजीनगर।

भारत देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जन्म जयंती के उपलक्ष में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर - श्रीरामपुरम द्वारा मरियापनपाल्या स्थित गायत्री देवी उद्यान में निःशुल्क मधुमेह जांच शिविर का आयोजन किया गया।

सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से शिविर की शुरुआत की गई, जिसमें कुल 79 सदस्यों ने परीक्षण करवाया और लगभग 47 लोगों में मधुमेह के लक्षण पाए गए। मधुमेह पीड़ितों को खान-पान में

मिठाई आदि का सीमित मात्रा में प्रयोग करने की सलाह दी गई। तेयुप सदस्यों ने जनमानस से वार्तालाप करते हुए ATDC द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाओं, डॉक्टरों की उपलब्धता आदि जानकारी से अवगत करवाया। स्थानीय लोगों ने तेयुप युवा साथियों द्वारा प्रदत्त सेवाओं की सराहना करते हुए धन्यवाद व्यक्त किया।

तेयुप राजाजीनगर से अध्यक्ष राजेश देरासरिया, जयंतिलाल गांधी, योगेश मेहता, जीतू मेहता, मुकेश नाहर, अभिषेक पीपाड़ा एवं महेंद्र मुथा ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं। ATDC स्टाफ धनुश्री का अथक श्रम नियोजित रहा।

108 दिवसीय तपस्या अभिनंदन समारोह

शाहदरा, दिल्ली।

आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती शासनश्री मुनि विमलकुमारजी स्वामी एवं विद्वान शिष्य मुनि अभिजीत कुमार के सान्निध्य में विशिष्ट तपस्वी बिमल बैद की 108 दिवसीय तपस्या के उपलक्ष्य में भव्य तप अभिनंदन समारोह का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा शाहदरा, दिल्ली के तत्वावधान में किया गया।

समारोह में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं एवं समाजजनों ने उपस्थित होकर तपस्वी बिमल बैद की तपस्या की अनुमोदना की तथा साधु-संतों का आशीर्वाद प्राप्त किया। मुनि

विमलकुमारजी स्वामी एवं मुनि अभिजीत कुमार जी ने तपस्या के आध्यात्मिक महत्व एवं लाभों पर प्रकाश डाला।

मुनि मधुरकुमारजी, मुनि अक्षयकुमारजी, मुनि धन्यकुमारजी एवं मुनि जागृतकुमारजी ने भी तप के आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में कन्या मंडल एवं महिला मंडल, पूर्वी दिल्ली द्वारा गीतिका के माध्यम से तपस्या की अनुमोदना की गई। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा शाहदरा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंधी एवं शाहदरा विधायक संजय गोयल ने अपने भाव व्यक्त किए। सभा के उपाध्यक्ष महावीर ने तप अनुमोदना पत्र का वाचन

किया, जबकि उपाध्यक्ष सुरेश भंसाली ने साध्वी प्रमुखा के संदेश का वाचन किया। समारोह में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड, अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष अशोक संचेती, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद से विनय लिंगा, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली के संगठन मंत्री संजय संचेती, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम से गौतम डूंगरवाल, ने अपने भाव प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन मुनि अक्षयकुमार जी ने किया। अंत में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, शाहदरा के मंत्री देवेन्द्र पुगालिया ने आभार व्यक्त किया।

'पैसों के लिफाफे से बड़ा है त्याग का उपहार'

गदग।

मुनि आलोक कुमार जी के सान्निध्य में गदग तेरापंथ भवन में कुसुम जीरावला का मासखमण के तपस्या का अभिनंदन समारोह रखा गया। डॉ मुनि आलोक कुमार जी ने कहा- आज का युग होटल का युग है जहां रसना पर कंट्रोल करना मुश्किल है। संवत्सरी के जाते ही होटल के दरवाजे पर भीड़ लग जाती है। साहस करके कुसुम जीरावला ने रसना पर कंट्रोल करते हुए मासखमण की तपस्या करके जीरावला कुल पर कलश चढ़ाया है।

गदग में इस बार चार चातुर्मास गतिमान हैं उसमें पहला मासखमण कुसुम जीरावला ने किया। मुनिश्री ने कहा की तपस्या के उपलक्ष में पैसों का लिफाफा ना देते हुए त्याग का लिफाफा दे। मुनि हिम कुमार जी ने कहा तपस्या करना आसान नहीं है। मुनिश्री उत्साह साहस व हिम्मत जागते हैं। साध्वीप्रमुखा श्री जी का संदेश गौतम जीरावला ने वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिम कुमार जी ने किया।

भव्य तप अभिनंदन समारोह

बेंगलुरु। गांधीनगर स्थित तेरापंथ सभा भवन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी पावनप्रभाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में मासखमण तप की अनुमोदना एवं तप अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में साध्वीश्री ने तप, त्याग एवं आत्मशुद्धि का प्रेरणादायी संदेश दिया। इसी दौरान साध्वीश्री ने कहा कि अपनी दुबली-पतली काया के बावजूद बहन नम्रता पितलिया ने दृढ़ आत्मबल, संकल्पबल एवं तप के प्रति समर्पण का परिचय देते हुए कठिन मासखमण तपस्या की आराधना की। साध्वी आत्मयशा, साध्वी उन्नतयशाजी एवं साध्वी रम्यप्रभाजी ने सामूहिक गीत का संगान कर तपस्विनी के तप की अनुमोदना की।

रक्तदान कर्तव्यम् का अविराम उत्साह

शिरपुर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्, शिरपुर द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव - रक्तदान कर्तव्यम् का आयोजन वाड़ी गांव में किया गया। इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद् के सभी सदस्य द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कैप का शुभारंभ किया गया। कैप में कुल 53 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ।

आद्यप्रवर्तक के चरणों में भावांजलि: चरमोत्सव पर देश भर में गूँजी भिक्षु-भक्ति और गुरु-समर्पण की पावन लहर!

आचार्य भिक्षु का जीवन था सत्य, साधना और स्वावलंबन की त्रिवेणी

पीतमपुरा, दिल्ली।

पीतमपुरा, दिल्ली स्थित खिलौनी देवी धर्मशाला में तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु का 224वाँ निर्वाण दिवस बहुश्रुत मुनिश्री उदित कुमारजी के पावन सान्निध्य में श्रद्धापूर्वक आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनि उदित कुमारजी ने आचार्यभिक्षु के बहुआयामी व्यक्तित्व को उजागर करते हुए कहा कि आचार्यभिक्षु का जीवन असाधारण प्रखरता, गहन साधना और दृढ़ आत्मबल का जीवन था। उनमें

ऐसी प्रखर बुद्धिमत्ता थी, जिसने सत्य को केवल विचार के स्तर पर नहीं, बल्कि जीवन की कसौटी पर पहचानने की दृष्टि दी। इसी दृष्टि के साथ वे अपनी साधना के प्रति अत्यंत जागरूक रहे और आत्मानुशासन को जीवन का आधार बनाया। उनका स्वावलंबी व्यक्तित्व इस बात का प्रमाण था कि आत्मकल्याण की यात्रा में साधक को अपने पुरुषार्थ और आत्मबल पर खड़ा होना पड़ता है। मुनिश्री ने कहा कि आचार्यभिक्षु की महानता केवल किसी नई आध्यात्मिक धारा के प्रवर्तन में नहीं थी, बल्कि उनके

चिंतन, निर्णय और आचरण की एकरूपता में थी। उन्होंने सत्य को जीवन का सर्वोच्च मूल्य मानकर उसे निर्भीकता से जिया। परिस्थितियाँ कितनी ही प्रतिकूल क्यों न हों, उनके संकल्प में शिथिलता नहीं आई।

यही कारण है कि उनका जीवन केवल इतिहास का एक अध्याय नहीं, बल्कि आज भी साधक के लिए आत्मजागरण, पुरुषार्थ और शुद्ध आचरण की जीवंत प्रेरणा बना हुआ है। इस अवसर पर श्लोक जैन ने भी मुनिश्री के सान्निध्य में ९ कि तपस्या का प्रत्याख्यान किया। कार्यक्रम का संचालन

पीतमपुरा सभा के मंत्री वीरेंद्र जैन ने किया। समापन संघगान के साथ हुआ। रात्रि में विशेष 'भिक्षु स्वरांजलि' का आयोजन होगा, जिसमें श्रद्धालुओं ने गीत, भजन एवं कविताओं के माध्यम से आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी श्रद्धा और भावनाएँ अभिव्यक्त करेंगे।

दीक्षार्थी जहान के संयम पथ की मंगलकामना : कार्यक्रम के द्वितीय चरण में दीक्षार्थी जहान के भावी संयम जीवन के प्रति मंगलकामना व्यक्त की गई। मुमुक्षु जहान बेताला की 18 जनवरी

2027 को लाडनूं में आचार्यश्री महाश्रमण जी के करकमलों से दीक्षा समारोह घोषित है। इस अवसर पर बहुश्रुत मुनि उदित कुमारजी ने उनके वैराग्य एवं संयम के भावों के प्रति मंगलकामना करते हुए भावी आध्यात्मिक जीवन के लिए शुभाशीष प्रदान किया। महासभा के उपाध्यक्षसंजय खटेड, दीक्षार्थी जहान के पिता प्रवीण बेताला आदि पारिवारिकजनों ने भी दीक्षार्थी की वैराग्य यात्रा में मुनिश्री के योगदान एवं मार्गदर्शन को स्मरण करते हुए अपने भाव व्यक्त किए।

नवरात्रि अनुष्ठान व्यक्ति को ऊर्जावान बनाता है

● मुनि कमल कुमार ●

तेरापंथ धर्मसंघ एक प्राणवान संघ है। इस धर्मसंघ में युगानुकूल आचार्य प्राप्त होते रहे हैं, जिससे धर्मसंघ उत्तरोत्तर विकासोन्मुख दिखाई दे रहा है। तेरापंथ संघ के प्रथम आचार्य भिक्षु हुए, जिन्होंने 'एक गुरु एक विधान' की जो व्यवस्था दी, वह सैकड़ों वर्षों के बाद भी व्यवस्थित चल रही है। इसी कारण धर्मसंघ का वर्चस्व बढ़ रहा है।

सैकड़ों साधु-साध्वी और लाखों श्रावक-श्राविका होते हुए भी सब गुरु-आज्ञा को ही जीवन-विकास का माध्यम मानते हैं। गुरु द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के ज्ञाता होते हैं। वे युगानुरूप धर्मसंघ में नये-नये आयामों का आविष्कार करते रहते हैं। हर आयाम अहिंसा, संयम, तप को बढ़ाने वाले होते हैं।

उन अनेक आयामों में एक आयाम है — नवरात्रि अनुष्ठान। आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी, दोनों ही प्रयोगधर्मा आचार्य हुए हैं। उन्होंने प्रवचनों के साथ प्रयोग प्रारंभ किये जिससे जीवन-रूपांतरण हो सके। प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान हो या नवरात्रि अनुष्ठान, ये सब प्रायोगिक हैं। नवरात्रि पर्व पर अक्सर देवी-अनुष्ठान का क्रम लंबे समय से चलता आ रहा है। उसमें धूप, दीप, फूल, फूल की ही नहीं, पशुबलि का क्रम भी चलता है। पूज्य गुरुदेव का चिंतन था कि जैन धर्म अहिंसा प्रधान धर्म है। जैन लोग पशुबलि तो अक्सर नहीं करते, परंतु फूल, फूल, धूप, दीप की भी हिंसा क्यों करें? हमारे धर्म में अनेक मंत्र हैं, उनका

स्मरण-जाप किया जाये। विविध प्रकार की तपस्याएँ हैं, उनका प्रयोग किया जाये जिससे हिंसा से बचाव हो सके। गुरुदेव ने एक व्यवस्थित अनुष्ठान का प्रारूप बनाया ही नहीं, उसका उन्होंने प्रयोग भी प्रारंभ किया। नवरात्रि के इस अनुष्ठान का सामूहिक प्रयोग चलता है। उसमें सैकड़ों लोग सहभागी बन रहे हैं। आचार्य श्री महाश्रमण जी स्वयं प्रवचन में ही नहीं, अन्य समय पर भी सामूहिक प्रयोग करवाते हैं। यह प्रयोग शुद्ध आध्यात्मिक है। अहिंसा, संयम और तप को बढ़ाने वाला है। इससे कर्मों की निर्जरा होती है। कर्म-निर्जरा आत्म-शुद्धि का उपाय है। जैसे-जैसे कर्मों की निर्जरा होगी, व्यक्ति स्वतः ऊर्जा-संपन्न बन जाएगा।

विवेक से ही परिवार में बनता है मैत्री और समता का वातावरण

विले पालें।

अखिल भारतीय महिला मंडल के निर्देशन अनुसार विले पालें महिला मंडल द्वारा अंधेरी महिला मंडल के साथ युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी राकेश कुमारी जी, साध्वी मलयविभा जी, साध्वी विपुलयशा जी एवं साध्वी चेतस्वीप्रभा जी के सान्निध्य में 'विवेक धर्मे माहिये' विषय पर आधारित विज्ञ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी राकेश कुमारी जी द्वारा नवकार मंत्र के उच्चारण से

'विवेक धर्मे माहिये' प्रतियोगिता

साधु-संतों के साथ-साथ गृहस्थ जीवन में भी विवेक अत्यंत आवश्यक है। विवेकपूर्ण व्यवहार से परिवार में मैत्री, करुणा, समता एवं अहिंसा का वातावरण निर्मित होता है। उन्होंने कहा कि विवेक केवल विचार नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला और जीवनशैली को सही दिशा देने वाला तत्व है। साध्वी श्री जी ने दैनिक जीवन में भी विवेक अपनाने की प्रेरणा देते हुए कहा कि रसोई में स्वच्छता, अनाज एवं सामग्री की सार-संभाल से लेकर घर में उपलब्ध वस्तुओं के उचित उपयोग तक जागरूकता आवश्यक है। आवश्यकता से अधिक संग्रह करने के

हुआ। प्रतियोगिता के लिए चार ग्रुप— विवेक, अहिंसा, दीक्षा एवं अपरिग्रह— बनाए गए। चारों ग्रुप से नारी लोक में प्रकाशित प्रश्नोत्तरों पर आधारित प्रश्न पूछे गए। साध्वी विपुलयशा जी ने प्रश्नोत्तरी का संचालन किया। इस अवसर पर साध्वी राकेश कुमारी जी ने कहा कि 'विवेक धर्मे माहिये' आगम का महत्वपूर्ण वाक्य है, जिसका अर्थ है—विवेक में ही धर्म है।

बजाय अपरिग्रह की भावना से अनावश्यक वस्तुओं को जरूरतमंदों तक पहुँचाना और उपलब्ध सामग्री की सार-संभाल करना भी विवेक का ही रूप है। विवेक परिवार में व्यवहार, साधु-संतों के प्रति विनय तथा समाज के प्रत्येक व्यक्ति के साथ मैत्रीपूर्ण आचरण करना सिखाता है। उन्होंने कहा कि विवेक आत्मकल्याण के मार्ग को प्रशस्त करता है।

आत्मा से आत्मा को देखने की वैज्ञानिक साधना है प्रेक्षाध्यान

कांदिवली।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्या शासनश्री साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' ठाणा 5 के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान दिवस के अवसर पर प्रेक्षाध्यान कार्यशाला आयोजित की गई। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। शासनश्री साध्वी विद्यावतीजी ने कहा - तेरापंथ धर्मसंघ के नवमें आचार्य

गुरुदेव तुलसी की प्रेरणा से आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन आगमों में यत्र तत्र उपलब्ध ध्यान पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन कर एक परिष्कृत वैज्ञानिक विधि का आविष्कार किया। उस पद्धति का नाम रखा गया प्रेक्षाध्यान। प्रेक्षा का अर्थ है विशेष रूप से देखना। आत्मा से आत्मा को देखना। साध्वी प्रियवंदाजी ने कहा - प्रेक्षाध्यान दिवस मनाने का उद्देश्य है जीवन एवं स्वभाव का रूपांतरण। पारसमल दुगड़

ने ध्यान की संक्षिप्त जानकारी देते हुए श्वास प्रेक्षा का प्रयोग करवाया व जीवनोपयोगी कई महत्वपूर्ण सूत्र भी बताये। शांतिलाल कोठारी ने प्रेक्षाध्यान को एक अनिवार्य अंग बताया।

विमला दुगड़ ने नमस्कार महामंत्र का रंग एवं चैतन्य केंद्रों के साथ ध्यान का प्रयोग करवाया। साध्वी प्रेरणाश्री ने प्रेक्षा गीत के द्वारा मंगलाचरण किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्रियवंदा जी ने किया।

नाट्य मंचन के ज़रिए समझाया कर्मों का अटूट सिद्धांत

तिरुपुर।

तेरापंथ युवक परिषद् तिरुपुर ने साध्वी सिद्धप्रभाजी ठाणा-4 के पावन चातुर्मास अवसर पर एक शिक्षाप्रद कार्यक्रम 'कर्मों की मार - यमराज के द्वार' का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ पवित्र गणोकार मंत्र के उच्चारण से हुआ। परिषद् अध्यक्ष मोहित बरडिया ने स्वागत भाषण दिया। साध्वी आस्था प्रभा ने भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत की। नाट्य प्रस्तुति में यमराज, चित्रगुप्त एवं अन्य पात्रों का अभिनय अत्यंत प्रभावशाली रहा।

साध्वी सिद्धप्रभाजी ने अपने संदेश में स्पष्ट किया कि आत्मा कर्मों से भी अधिक बलवान है। सही साधना और संयम से आत्मा कर्मों पर विजय प्राप्त कर सकती है। कार्यक्रम का संचालन परिषद् मंत्री अमन चोरडिया ने किया तथा सह मंत्री रजत बेंगानी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

संयम जीवन में गुरुदृष्टि की आराधना सर्वोपरि

सिरियारी।

आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान में मुनि सुरेशकुमारजी 'हरनावां' के सान्निध्य में दीक्षार्थी जहान बेताला सूरत का मंगल भावना का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनि सुरेशकुमारजी 'हरनावां' ने मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा - मानव जीवन में संयमी बनना सर्वश्रेष्ठ कार्य है। पूर्व अर्जित शुभ कर्मों के संयोग से चारित्र धर्म की प्राप्ति होती है। संयम जीवन में सेवा-समर्पण और अनुशासन के साथ गुरुदृष्टि की आराधना से जीवन सफल होता है। इस अवसर पर मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए संयम जीवन को उज्ज्वलतम बनाने की बात कही। मुनि चैतन्य कुमारजी 'अमन' ने संयम जीवन को श्रेष्ठ सर्वोत्तम बनाने में

अपनी श्रम और शक्ति का उपयोग करने तथा गुरुदृष्टि आराधना करने का लक्ष्य रखते हुए गीत का संगान किया। कार्यक्रम में दीक्षार्थी जहान बेताला ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रति आभार व्यक्त किया। मुनि गिरिशकुमारजी, मुनि अनुशासन कुमारजी, संस्थान के उपाध्यक्ष उत्तमचंद सुखलेचा, दीक्षार्थी की मातुश्री लताशा बेताला, खिंवाड़ा से सुरेश सोलंकी व्यवस्थापक महावीरसिंह ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस मौके पर बी. के. कल्याणसिंह, श्यामसुन्दर, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश परिहार आदि श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे। भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी की ओर से दीक्षार्थी जहान बेताला को दुपट्टा व भिक्षु चित्र प्रदान करते हुए बहुमान किया गया।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का हुआ आयोजन

पालघर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् एवं CPS Academy for Leadership and Excellence के संयुक्त मार्गदर्शन में तेरापंथ युवक परिषद्, एवं अणुव्रत समिति, पालघर द्वारा Personality Development Workshop - आयाम के अंतर्गत दिनांक 04 अक्टूबर 2026 को 'A Skill of Happiness - 6 Hour Life Changing Experience' कार्यशाला का सफल एवं प्रेरणादायी आयोजन किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन हित तलेसरा ने किया। तेरापंथ युवक परिषद्, पालघर के कर्मठ अध्यक्ष आकाश राठौड़ ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा CPS Academy के तीनों प्रशिक्षकों—जिनेश जैन, प्रीत खंडोर एवं संयम जैन—का परिचय कराया। कार्यशाला को तीन प्रभावी एवं गतिविधि-आधारित सत्रों में विभाजित किया गया। प्रथम सत्र में जिनेश जैन ने व्यक्तित्व विकास में Happiness Skill की

भूमिका को समझाते हुए विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभागियों को विषय से जोड़ा।

द्वितीय सत्र में संयम जैन ने Relationships एवं Work-Life Balance के माध्यम से जीवन के प्रत्येक क्षण को प्रसन्नता के साथ जीने तथा स्वयं को बेहतर ढंग से जानने पर प्रकाश डाला। उन्होंने रोचक एवं उपयोगी गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभागियों को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित किया।

तृतीय सत्र में प्रीत खंडोर ने Dreams को Goals में बदलने एवं मनचाहे लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में मार्गदर्शन दिया तथा प्रभावी Goal Setting Activity करवाई। कार्यशाला में लगभग 30 प्रतिभागियों ने सहभागिता की, कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सब-इंस्पेक्टर प्रकाश पाटिल उपस्थित रहे। तेरापंथ समाज की ओर से तेरापंथ सभा अध्यक्ष धर्मेस सिंघवी, मंत्री हितेश बादामिया, एवं उनकी कार्यकारिणी की गरिमामयी उपस्थिति रही। तेरापंथ युवक परिषद् से अध्यक्ष आकाश राठौड़, मंत्री विक्रम बाफना आदि उपस्थित रहे।



374 शाखा परिषदों में तेयुप विजयनगर का लहराया परचम

विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में आयोजित 60वें वार्षिक अधिवेशन “संवर्धनम्” में तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर को 374 शाखा परिषदों में सत्र 2025-26 में किए गए उत्कृष्ट कार्यों हेतु “सर्वश्रेष्ठ परिषद्” के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

तेयुप विजयनगर को सर्वश्रेष्ठ परिषद् के सम्मान के साथ-साथ विभिन्न आयामों में उत्कृष्ट कार्यों के लिए भी 10 सम्मान प्राप्त हुए, जिनमें सीपीएस जूनियर,

मधुरम्, एटीडीसी, तपोयज्ञ, तेरापंथ टास्क फोर्स, प्रकाशन, चौका सत्कार, युवालोक, सीपीएस नेशनल ट्रेनर वर्कशॉप एवं भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला प्रमुख रहे।

इस गौरवपूर्ण अवसर पर परिषद् के निवर्तमान अध्यक्ष विकास बांठिया, मंत्री योगेश पोरवाड़, गत कार्यकाल की सम्पूर्ण प्रबंध मंडल एवं कार्यसमिति, परामर्शक गण, निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा, शाखा प्रभारी डॉ. आलोक छाजेड़, पूर्व अध्यक्षगण एवं वर्तमान अध्यक्ष पवन बैद ने इस सम्मान को परिषद् से जुड़े सभी कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

लौकिक दान कर्तव्य, लोकोत्तर दान मुक्ति का मार्ग

मण्डिया, कर्नाटक।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्देशित भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला मण्डिया तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा तेरापंथ भवन के प्रांगण में आयोजित हुई। उपासिका ललिता बैद ने कहा की आचार्य श्री भिक्षु ने आचार क्रांति की, विचार क्रांति की। सही तत्व को गलत तरीके से पढ़ा जाता है उसकी क्रांति की। जनमानस गलत अवधारणा में जी रहा था आचार्य श्री भिक्षु ने भगवान महावीर के सिद्धांतों को ही सम्यक रूप से प्रस्तुत

किया। लौकिक लोकोत्तर की भेद रेखा को व्यक्त किया। उपासिक कांता लोढ़ा ने बताया कि सम्यक्त्व को कायम रखने के लिए दृष्टिकोण सही होना जरूरी है। स्वामी जी ने आगम वाणी के आधार पर विचार दर्शन, सिद्धांत प्रस्तुत किए। उनके विचार अध्यात्मवादी थे। आचार्यभिक्षु ने लौकिक लोकोत्तर के मिश्रण से व्यक्ति अज्ञानता में भटक कर मिथ्यात्व में जी रहा था। उन्होंने लौकिक लोकोत्तर की भेद रेखा का स्पष्ट चिंतन दिया। दान-दया का यथार्थ रूप बताते हुए कहा कि पाप के आचरण से अपनी आत्मा को बचाना दया है।

प्रेक्षाध्यान है आत्मा के अवलोकन का सशक्त माध्यम

रोहना।

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देश अनुसार एवं आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन प्रेरणा से प्रेक्षा वाहिनी के तत्वावधान में संवाहिका उषा जैन के नेतृत्व में 9वें प्रेक्षाध्यान दिवस का भव्य आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया जिसमें 20 साधकों ने भाग लिया।

इस अवसर पर सभा के निवर्तमान मंत्री सुभाष जैन ने बताया कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान का अवदान देकर लाखों लोगों को तनाव मुक्त जीवन जीने की कला सिखाई एवं भावनात्मक रूप से स्वस्थ किया।

प्रेक्षाध्यान आत्मा के अवलोकन का सशक्त माध्यम है।

इससे आत्मा और काया निर्मल और निरामय बनते हैं और कषाय एवं आवेश पर नियंत्रण किया जा सकता है तथा आधि व्याधि और उपाधि का क्षय होता है तथा चित्त एवं आत्मा की शुद्धि होती है।

इस अवसर पर प्रेक्षाध्यान के विभिन्न प्रयोग जिनमें कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा, दीर्घश्वास प्रेक्षा भी किए गए तथा आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का रिकॉर्डड प्रवचन भी श्रवण किया गया। इसके साथ त्रिपदी वंदना की गई एवं नौ भावनाओं का भी ध्यान किया गया।

‘Is Your Investment A Real Investment?’

केसिंगा।

स्थानीय तेरापंथ भवन, केसिंगा युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनिहिमांशुकुमार जी एवं मुनिहेमंत कुमार जी के पावन सान्निध्य में व्यक्तित्व एवं जीवन विकास से जुड़े महत्वपूर्ण विषय ‘Is Your Investment A Real Investment?’ पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में प्रतिभागियों को पारंपरिक निवेश से आगे बढ़कर स्वयं की क्षमताओं, ज्ञान, व्यक्तित्व एवं गुणों में निवेश करने की प्रेरणा दी गई। कार्यशाला की प्रशिक्षक दीपिका फुलफूगर (मदुरई) थीं। कार्यशाला की शुरुआत एक सहज लेकिन विचारणीय प्रश्न से हुई—यदि हमारे पास कुछ अतिरिक्त धनराशि उपलब्ध हो, तो हम उसका निवेश कहां करेंगे? इस प्रश्न पर प्रतिभागियों ने अपने-अपने विचार साझा किए। किसी ने गोल्ड में निवेश को उपयोगी बताया, तो किसी ने फिक्स्ड डिपॉजिट, जमीन-जायदाद, शेयर मार्केट आदि को बेहतर विकल्प बताया। प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं से स्पष्ट हुआ कि सामान्यतः

निवेश का अर्थ हमारे मन में धन को ऐसी जगह लगाना होता है, जहां भविष्य में उसका मूल्य बढ़ सके। इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कार्यशाला के मूल विषय की ओर प्रतिभागियों का ध्यान आकर्षित किया—क्या हम केवल धन को बढ़ाने के बारे में सोचते हैं, या स्वयं को बेहतर बनाने के लिए भी निवेश करते हैं? उन्होंने समझाया कि जीवन में सबसे महत्वपूर्ण निवेश केवल बैंक, बाजार, सोना अथवा संपत्ति में किया गया निवेश नहीं है, बल्कि स्वयं की क्षमताओं और व्यक्तित्व में किया गया निवेश भी उतना ही महत्वपूर्ण है। धन का निवेश हमें आर्थिक रूप से मजबूत बना सकता है, लेकिन ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास, अनुशासन, संवाद-कौशल और सकारात्मक सोच में किया गया निवेश व्यक्ति को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सक्षम बनाता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि यदि कोई व्यक्ति अपनी आय का एक छोटा हिस्सा किसी नई स्किल को सीखने, किसी अच्छे कोर्स में भाग लेने, किताबें पढ़ने अथवा अपने स्वास्थ्य और व्यक्तित्व के विकास पर खर्च करता है, तो उसका लाभ लंबे समय तक

प्राप्त हो सकता है। इसी प्रकार प्रतिदिन कुछ समय पढ़ने, नई भाषा सीखने, बेहतर संवाद करने, तकनीक समझने या अपनी किसी कमजोरी पर काम करने में लगाया गया समय भी वास्तव में स्वयं पर किया गया निवेश है। कार्यशाला में इस बात पर भी जोर दिया गया कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर कोई न कोई विशेष क्षमता या ‘स्ट्रेंथ’ मौजूद होती है। आवश्यकता इस बात की है कि व्यक्ति अपनी उस क्षमता को पहचाने, उस पर समय लगाए और उसे निरंतर विकसित करे। जैसे कोई व्यक्ति अच्छा वक्ता बनने की क्षमता रखता है, लेकिन यदि वह बोलने का अभ्यास नहीं करता तो उसकी वह क्षमता सीमित ही रह जाएगी। वहीं नियमित अभ्यास, अध्ययन और मंच पर बोलने के अवसर उसके आत्मविश्वास और प्रभावशीलता को कई गुना बढ़ा सकते हैं। मुनिश्री ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि व्यक्ति के पास कितनी संपत्ति है, यह महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ यह भी महत्वपूर्ण है कि उस संपत्ति का सदुपयोग किस प्रकार किया जा रहा है और स्वयं के निर्माण में कितना निवेश किया जा रहा है।

दृढ़ संकल्पबल से सधा कठिन मासखमण तप

बेंगलुरु।

गांधीनगर स्थित तेरापंथ सभा भवन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी पावनप्रभाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में मासखमण तप की अनुमोदना एवं तप अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में साध्वीश्री ने तप, त्याग एवं आत्मशुद्धि का प्रेरणादायी संदेश देते हुए रामायण की उक्ति के माध्यम से तपस्या एवं आध्यात्मिक साधना के महत्व को रेखांकित किया।

इसी दौरान साध्वी श्री जी ने कहा अपनी दुबली-पतली काया के बावजूद

तप आत्म शुद्धि का सोपान

बहन नम्रता पितलिया ने दृढ़ आत्मबल, संकल्पबल एवं तप के प्रति समर्पण का परिचय देते हुए कठिन मासखमण तपस्या की आराधना की।

इस अवसर पर बहन नम्रता पितलिया द्वारा की जा रही मासखमण तपस्या की विशेष अनुमोदना की गई। साध्वी आत्मयशोजी, साध्वी उन्नतयशोजी एवं साध्वी रम्यप्रभाजी ने सामूहिक गीत का संगान कर तपस्विनी के तप की अनुमोदना की। पारिवारिकजनों के साथ टी. दासरहल्ली महिला मंडल एवं तेरापंथ

सभा की ओर से भी तपस्या की अनुमोदना एवं उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने तपस्विनी के प्रति मंगलभाव व्यक्त किए। तेरापंथ सभा की ओर से मंत्री सुभाषचंद्र पोखरणा ने तप अभिनंदन पत्र का वाचन करते हुए मंगलकामना की कि यह तपस्या तपस्विनी के लिए कर्मों की निर्जरा, आत्मशुद्धि एवं आत्मकल्याण का माध्यम बने तथा उनके जीवन में आध्यात्मिक ऊर्जा, संयम एवं साधना की निरंतर वृद्धि हो। इस अवसर पर साध्वीप्रमुखाजी के संदेश का वाचन सभा सहमंत्री राजेंद्र बैद ने किया। संचालन सभा मंत्री सुभाषचंद्र पोखरणा ने किया।

सेवा, संगठन और संस्कार की त्रिवेणी तेयुप अग्रसर

दक्षिण मुंबई।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के 60वें राष्ट्रीय अधिवेशन ‘संवर्धनम्’ के अवसर पर जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् दक्षिण मुंबई को विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य एवं योगदान के लिए चार महत्वपूर्ण सम्मानों से सम्मानित किया गया। परिषद्

को FIT YUVA – HIT YUVA – Yoga Se Hoga 2.0 (2026–27) में उत्कृष्ट योगदान एवं सक्रिय सहभागिता के लिए सम्मान प्राप्त हुआ। इसके साथ ही नेत्रदान पखवाड़ा 2026–27 में परिषद् द्वारा किये गए उल्लेखनीय श्रम हेतु सम्मान प्राप्त हुआ। सत्र 2025–26 में विशाल श्रेणी (126 से 250 सदस्य) की परिषदों में संगठन के क्षेत्र में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर भी तेरापंथ युवक परिषद् दक्षिण मुंबई को सम्मानित किया गया।

वहीं सत्र 2026–27 में चौका सत्कार में परिषद् के योगदान के लिए भी सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद् दक्षिण मुंबई से अध्यक्ष सुमित सुराणा, निवर्तमान अध्यक्ष गिरीश सिसोदिया, मंत्री श्रेयांस मुनोत, कोषाध्यक्ष रौनक धाकड़, उपाध्यक्ष पूरण चपलोट एवं दर्शन डागलिया तथा संगठन मंत्री दीपक कच्छारा की उपस्थिति रही। यह जानकारी तेयुप दक्षिण मुंबई पूर्व अध्यक्ष नितेश धाकड़ ने दी।

कार्यकर्ता देव, गुरु, धर्म के प्रति समर्पित बने

गांधीनगर-बैंगलोर।

तेरापंथ समाज की सर्वोच्च संस्था शिरोमणि संस्था तेरापंथी महासभा ने लाडनू में महासभा प्रतिनिधि सम्मेलन में युग प्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सानिध्य में तेरापंथ सभा बैंगलोर को वर्ष 2025- 26 में उल्लेखनीय कार्य करने हेतु श्रेष्ठ तेरापंथी सभा से पुरस्कृत किया। इसलिए साध्वी पावनप्रभाजी के मंगलपाठ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी श्री जी ने कहा कि पारसमल के

नेतृत्व में पूरी टीम ने संगठित होकर सौहार्दपूर्ण वातावरण में गुरु दृष्टि की आराधना के साथ चरित्रात्माओं के इंगित के साथ तथा महासभा के निर्देशानुसार अच्छा कार्य किया, स्थानीय स्तर पर भी अनेकों समाज हित, आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक कार्य हेतु सभा ने अपना दायित्व निभाया संभवतः यही उनके मूल्यांकन का आधार बनता है। स्वागत वक्तव्य सभा अध्यक्ष प्रकाश बाबेल ने दिया। महासभा उपाध्यक्ष प्रकाश लोढ़ा ने धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन सुभाष पोखरणा ने किया।

पूर्वार्ध चातुर्मास का ऐतिहासिक समापन

पीतमपुरा।

बहुश्रुत मुनि उदित कुमारजी के उग्रसेन खिलौनी देवी धर्मशाला, पीतमपुरा में सम्पन्न पूर्वार्ध चातुर्मास का भावपूर्ण समापन मंगल भावना समारोह के साथ हुआ।

चातुर्मास के दौरान प्राप्त आध्यात्मिक प्रेरणा एवं मार्गदर्शन के प्रति समाज ने कृतज्ञता ज्ञापित की। मंगल भावना समारोह में बहुश्रुत मुनि उदित कुमारजी ने कहा - चातुर्मास केवल एक निश्चित अवधि में होने वाली धार्मिक गतिविधियों का क्रम नहीं, अपितु आत्मचेतना को जागृत करने और जीवन को धर्ममय दिशा प्रदान करने का अवसर है। बहुश्रुत मुनि उदित कुमारजी का खिलौनी देवी धर्मशाला पीतमपुरा से मंगल प्रस्थान

कर से स्व.आसकरण आंचलिया के निवास स्थान शास्त्री नगर पधारे। बहुश्रुत मुनिश्री को मंगल विदाई देने के लिए समाज के श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही।

शास्त्री नगर में बहुश्रुत मुनिश्री का वहां विराजित साध्वी सुब्रतां जी से आध्यात्मिक मिलन हुआ। इस अवसर पर समाज के गणमान्य एवं विशिष्ट व्यक्तियों ने विचार व्यक्त करते हुए मुनिश्री के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता एवं मंगलभावनाएँ प्रकट कीं।

मुनिश्री ने अपने संदेश में आचार्यश्री की आज्ञा, गुरु-निर्देश एवं गुरु इंगित की आराधना को चातुर्मास की साधना का आधार बताते हुए समाज को सामूहिक आध्यात्मिक पुरुषार्थ के साथ चातुर्मास की सफलता में योगभूत बनने की प्रेरणा दी।

रक्तदान से स्वस्थ राष्ट्र निर्माण - दिखा मानवता का जज्बा

केसिंगा।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव (MBDD) आयाम के अंतर्गत 'रक्तदान कर्तव्यम् - यूनाइटेड कॉरपोरेट्स का विकसित भारत' अभियान का आयोजन देश-विदेश में परिषद की विभिन्न शाखाओं के माध्यम से 17 सितंबर से 23 सितंबर 2026 तक किया जा रहा है।

मानव सेवा एवं सामाजिक सरोकारों को समर्पित इस व्यापक अभियान के अंतर्गत विभिन्न स्थानों पर रक्तदान

शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में तेरापंथ युवक परिषद केसिंगा द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन, केसिंगा में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत भव्य रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

स्वागत वक्तव्य अध्यक्ष अभिषेक जैन ने किया। शिविर में स्थानीय CHC, केसिंगा के चीफ मेडिकल ऑफिसर श्री आर. एन. खतुआ ने अपनी सक्रिय सहभागिता दर्ज करते हुए शिविर की चिकित्सा व्यवस्था में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। कुल 73 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया।

तेरापंथ की शक्ति मर्यादा, अनुशासन, एकता और गुरु समर्पण में निहित

सिकंदराबाद।

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी के सानिध्य में 'मेरा तेरापंथ, मेरा गर्व, मेरी जिम्मेदारी' विषयक विशेष प्रवचन एवं विहार सेवा के संदर्भ में 'सेवार्थी सम्मान' समारोह का आयोजन तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद द्वारा किया गया।

मुनि दीप कुमारजी ने अपने उद्बोधन में कहा— 'दुनिया भर के धर्मसंघों पर नजर डालते हैं तो तेरापंथ धर्मसंघ हमें दुर्लभ नजर आता है।' उन्होंने कहा कि आज का विषय किसी पुरानी बौद्धिक सोच का ज्ञान मात्र नहीं है, बल्कि यह हमारी रोजमर्रा की जिंदगी, हमारी पहचान और हमारी आत्मा से जुड़ा हुआ विषय है— 'मेरा तेरापंथ,

मेरा गर्व, मेरी जिम्मेदारी।' मुनिश्री ने कहा कि मेरा तेरापंथ हमारी पहचान है और हमारी विरासत है। आचार्यश्री भिक्षु की

कार्यशाला आयोजन

क्रांति का सुफल तेरापंथ है। 'मेरा तेरापंथ' कहने में अपनत्व का भाव है। यह हमारी नींव है, हमारी रगों में दौड़ता हुआ जुनून है और हमारी आत्मा की हुंकार है। जब हम तेरापंथी होने पर गर्व करते हैं तो वह अहंकार नहीं, बल्कि हमारे संस्कार हैं। उन्होंने तेरापंथ की संगठनात्मक एकता और अनुशासन की विशेषता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज जहां हर क्षेत्र में पद और प्रतिष्ठा की दौड़ दिखाई देती है, वहीं तेरापंथ में एक आचार्य के नेतृत्व में साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका एक दिशा

में आगे बढ़ने के लिए तत्पर रहते हैं। आचार्यश्री के एक संकेत पर पूरा धर्मसंघ एकजुट होकर कार्य करने की भावना रखता है। यह अद्भुत एकता ही तेरापंथ के गौरव का प्रमुख कारण है।

मुनिश्री ने कहा कि हमारे आचार्यप्रवर संघ के लिए कितना श्रम करते हैं, यह हम सभी के लिए प्रेरणा का विषय है। आचार्यश्री महाश्रमणजी संघ के विकास, प्रभावना और आध्यात्मिक उन्नति के लिए निरंतर श्रमरत हैं। ऐसे गुरु और ऐसा अनुशासित धर्मसंघ मिलना अपने आप में गौरव की बात है। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष सुशील संचेती आदि गणमान्य व्यक्तियों ने सेवार्थियों का सम्मान किया। प्रभावी संचालन तेरापंथी महासभा के प्रभारी लक्ष्मीपतजी बैद ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

इंसान पहले इंसान...

TPF एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर्स कॉन्फ्रेंस व सर्वधर्म सहभागिता:

१. TPF राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस : कार्यक्रम के दौरान तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) द्वारा आयोजित ७वीं एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर्स कॉन्फ्रेंस में राजस्थान सरकार के अतिरिक्त मुख्य

सचिव (IAS) कुलदीप रांका, भारत सरकार के वित्त मंत्रालय की डिप्टी सेक्रेटरी एकता जैन तथा TPF के पुष्प पटावरी ने पूज्यश्री के चरणों में अपने विचार व्यक्त किए।

२. सर्वधर्म प्रतिनिधियों की अभिव्यक्ति : सौहार्द दिवस के अवसर पर लाडनू के शहरकाजी मोहम्मद

मदनी तथा ब्रह्मकुमारी संस्था की सुप्रभा बहन ने भी पूज्य गुरुदेव के दर्शन कर साम्प्रदायिक सौहार्द पर अपने भावपूर्ण विचार प्रस्तुत किए।

३. ज्ञानार्थियों की प्रस्तुति : कार्यक्रम में अहमदाबाद और डोंबिवली ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने पूज्यप्रवर के समक्ष भावपूर्ण प्रस्तुतियाँ दीं।

पृष्ठ 19 का शेष

आचार्य भिक्षु के दृष्टांतों...

आचार्यश्री ने रेखांकित किया कि कोई भी व्यक्ति चाहे वह राजनीति के क्षेत्र में हो, व्यवसाय, नौकरी, अध्यापन कार्य में हो अथवा न्यायाधीश या वकील हो—सभी क्षेत्रों में मनुष्य का व्यवहार धर्म से अनुप्राणित होना चाहिए। ऐसा होने से न केवल आत्मा का परम हित होता है, बल्कि व्यक्ति का आचरण भी अनुकरणीय बनता है। जब हमारा व्यवहार अच्छा होगा तो सामने वाले का व्यवहार भी हमारे प्रति स्वतः श्रेष्ठ हो जाएगा।

अणुव्रत का व्यापक रूप—

१. अणुव्रत की सर्वव्यापी सोच : पूज्यश्री ने फरमाया कि अणुव्रत-प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी ने जैन धर्म के 'अणुव्रत' शब्द को अत्यंत व्यापक रूप प्रदान किया, जिससे केवल जैन ही नहीं, बल्कि गैर-जैन (Non-Jain) भी इसके छोटे-छोटे नियमों को अंगीकार कर सकते हैं।

२. आचार्यों का ऐतिहासिक अवदान : पूज्यश्री ने फरमाया कि आचार्य तुलसी के अथक श्रम से अणुव्रत को विशाल वटवृक्ष का रूप मिला और इसके अनेक अंग, उपांग व शाखाएँ विकसित हुईं।

तत्पश्चात् आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने अहिंसा यात्रा के माध्यम से नैतिक मूल्यों के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। वर्तमान में हमने भी 'सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति' की संकल्प-त्रयी के रूप में अणुव्रत को निरंतर गति प्रदान करने का प्रयास किया है।

जन-जागरण का आह्वान और विद्यार्थियों द्वारा गीत संगान—

१. मानवतावादी आंदोलन और जन-जागरण : पूज्यश्री ने फरमाया कि आज अणुव्रत किसी एक समाज तक सीमित न रहकर व्यापक मानवतावादी आंदोलन बन चुका है। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग—विद्यार्थियों,

शिक्षकों, न्यायालयों और जेलों तक पहुँचना चाहिए। गुरुदेव ने गुरुकुलवास और न्यारा (विहार) सभी स्थानों पर विराजमान साधु-साधवियों व समणियों से इन सात दिनों में अधिकाधिक जन-जागरण करने का आह्वान किया।

२. गीत संगान व संकल्प स्वीकारण : कार्यक्रम में विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। पूज्य गुरुदेव ने अणुव्रत गीत का संगान किया, जिसमें विद्यार्थियों ने भी स्वर से स्वर मिलाया। पूज्यश्री ने उपस्थित जनसमूह और विद्यार्थियों को सद्भावपूर्ण व्यवहार, ईमानदारी का पालन और नशीले पदार्थों से दूर रहने के संकल्प स्वीकार करवाए।

विचार अभिव्यक्ति :

अणुव्रत विश्व भारती का सम्बोधन: कार्यक्रम में अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष प्रताप दूगड़ ने अपने विचार व्यक्त करते हुए अणुव्रत सप्ताह की कार्ययोजना पर प्रकाश डाला।

100% सेवा, रिकॉर्ड तोड़ जज़्बा : 'रक्तदान महा कर्तव्यम्' से पूरे देश में फैली संजीवन की पावन लहर

मेगा ब्लड डोनेशन अभियान में जुटा 450 यूनिट रक्त

तिरुपुर।

तेरापंथ युवक परिषद्, तिरुपुर द्वारा मानव सेवा के उद्देश्य से आयोजित 'मेगा ब्लड डोनेशन अभियान' अत्यंत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अभियान के अंतर्गत कुल पाँच कैप आयोजित किए गए, जिनमें

कुल 450 यूनिट रक्त का संग्रह हुआ। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक कुशल सेठिया एवं सह संयोजक ईशान दुग्गर ने इस पुनीत कार्य में सहयोग देने वाले सभी समिति सदस्यों, रक्तदाताओं एवं सहयोगकर्ताओं का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस: तेयुप इरोड को मिला राजकीय सम्मान

इरोड।

'राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस' के अवसर पर, इरोड के ज़िला कलेक्टर एस. कंदासामी (I.A.S.) ने स्वैच्छिक रक्तदान के क्षेत्र में उत्कृष्ट और निरंतर योगदान के लिए 'तेरापंथ युवक परिषद्, इरोड' को सम्मानित किया। यह दिन पूरे भारत में स्वैच्छिक रक्तदाताओं के सम्मान और नियमित व सुरक्षित रक्तदान की अहमियत पर जोर देने के लिए मनाया जाता है।

ज़िला प्रशासन ने रक्तदान शिविर आयोजित करने और सामुदायिक स्वास्थ्य सेवा के लिए युवाओं को प्रेरित करने में युवक परिषद् की निरंतर सेवा की सराहना की।

दिलीप डागा (अध्यक्ष), ऋषभ नखत (उपाध्यक्ष) और जीतू पारख (सचिव) के नेतृत्व ने प्रशासन का आभार व्यक्त किया और यह सम्मान सभी उदार रक्तदाताओं को समर्पित किया। उपरोक्त जानकारी मीडिया प्रभारी सुरेश चौपडा द्वारा प्राप्त हुई।

बूंद-बूंद में ज़िंदगी: जगराओं तेयुप का 596 यूनिट रक्तदान

जगराओं।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा अपने 62वें स्थापना दिवस के अवसर पर सात दिन रक्तदान अमृत महोत्सव 2026 मनाया गया।

तेरापंथ युवक परिषद्, जगराओं के अध्यक्ष रिपन जैन पाटनी के नेतृत्व में 10 रक्तदान शिविर लगाए गए और यह मानवता के नाम एक ऐतिहासिक

दिन था। युवक परिषद् के रक्तदान महाअभियान - संयोजक वैभव जैन ने बताया कि रक्तदान अमृत महोत्सव के अंतर्गत मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के द्वारा हमारी युवक परिषद् ने पुलिस लाइन्स, सन्मति विमल मुनि हॉल, महाप्रज्ञ स्कूल, मुल्लापुर, किशनपुरा, निहाल सिंह वाला, डल्ला, लम्मा, रूमी तथा रायकोट में वृहद स्तर पर रक्तदान शिविरों का आयोजन किया।

उन्होंने बताया कि शिविरों में ब्लड के लिए बहुत हॉस्पिटलों से टीमें आई हुई हैं। मंत्री रवीन गोयल ने बताया कि सभी 10 कैम्पों से कुल 596 यूनिट रक्त एकत्र किया गया और हर जगह जनसैलाब उमड़ा। मौसम की चुनौतियों में भी कार्यकर्ताओं का उत्साह नहीं टूटा।

सभी युवकों में समर्पण और जुनून साफ दिख रहा था।

शिक्षा-संस्कार के पुरोधा थे कालूगणी

उत्तर हावड़ा।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा - 3 के सान्निध्य में आचार्यश्री कालूगणी का 91वां स्वर्गवास दिवस उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा योगक्षेम विहार के योगक्षेम सभागार में आयोजित हुआ। इस अवसर पर उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य कालूगणी निस्पृह

साधक थे। वे महाप्रतापी, पुण्यशाली, परोपकारी, आत्माश्री, पापभीरु, आचारनिष्ठ व स्वाभिमानी व्यक्तित्व के धनी थे। उनकी सादगी, रहन-सहन, फक्कड़ वृत्ति संतता का बोध कराने वाली थी। उनके शासनकाल में बालसाधु - साध्वियों की वृद्धि हुई। वे शिक्षा और संस्कार पर विशेष ध्यान देते थे। उनका जीवन स्वस्थ एवं स्पष्ट था। उनके शासनकाल के दीक्षित दो मुनि आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ धर्मसंघ के प्रभावशाली आचार्य बने। मुनि

ने आगे कहा - परमपूज्य कालूगणी का जन्म छपर में व दीक्षा मधवागणी के द्वारा हुई। वे मधवागणी के कृपापात्र थे। गुरुदृष्टि की आराधना करते हुए उन्होंने चऊमुखी विकास किया। वे आज के दिन गंगापुर में महाप्रयाण को प्राप्त हुए। उनके 91वें महाप्रयाण दिवस पर श्रद्धासिक्त स्मरण करते हुए अपनी भावांजलि अर्पित करते हैं। मुनि परमानंद ने परमपूज्य कालूगणी को शिक्षाप्रेमी बतलाया। मुनि कुणाल कुमार ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया।

आस्था का नया शिखर, विकास का पावन पथ: 'विकास महोत्सव' पर गुरु-चरणों में समर्पित हुआ संपूर्ण तेरापंथ धर्मसंघ!

परंपरा को समय से जोड़ने वाले युगपुरुष थे आचार्य तुलसी

पीतमपुरा, दिल्ली।

पीतमपुरा में आचार्यश्री तुलसी का 33वां विकास महोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम मुनि उदित कुमार जी के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ, जिसमें पीतमपुरा सहित दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों से श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

आचार्यश्री तुलसी के पट्टोत्सव को आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने 'विकास महोत्सव' नाम दिया था। आचार्यश्री तुलसी की दूरदृष्टि, बहुआयामी व्यक्तित्व और तेरापंथ के विकास में उनके योगदान की स्मृति है विकास महोत्सव।

मुनि उदित कुमार जी ने आचार्यश्री तुलसी की दूरदृष्टि और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा - 'आचार्यश्री तुलसी ने तेरापंथ को सीमित दायरे से बाहर निकालकर व्यापक जनसमाज तक पहुँचाने का कार्य किया। उनकी दृष्टि में

धर्म केवल मान्यताओं तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन को संस्कारित और समाज को नैतिक दिशा देने वाली चेतना है। इसी दृष्टि के साथ उन्होंने तेरापंथ को एक सर्वव्यापी एवं लोकप्रिय धर्म-संघ के रूप में विकसित करने का प्रयास किया।' मुनिश्री ने आगे कहा - आचार्यश्री तुलसी की विशेषता थी कि उन्होंने परंपरा की मूल चेतना को सुरक्षित रखते हुए उसे समय और समाज से जोड़ा।

अणुव्रत आंदोलन इसी व्यापक दृष्टि का उदाहरण है, जिसने नैतिक जीवन-मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने का मार्ग प्रशस्त किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। प्रवीण बैंगानी ने गीत की प्रस्तुति दी दिल्ली सभा अध्यक्ष विमल बैंगानी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री वीरेंद्र जैन ने किया।

क्षमा कुंभ स्नान है, नफरत मिटाने का तप है खमतखामणा

उत्तर हावड़ा।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में क्षमापना दिवस पर सामूहिक खमतखामणा कार्यक्रम का भव्य आयोजन उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा योगक्षेम विहार के योगक्षेम सभागार में आयोजित हुआ। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा— मनुष्य का भूषण रूप है, रूप का आभूषण गुण है, गुण का आभूषण ज्ञान है और ज्ञान का आभूषण क्षमा है। क्षमा चैतन्य की अनुभूति है। क्षमा जागरण की वेला है। क्षमा आभ्यन्तर तप है। दिल में आई दीवारों को सांधने का नाम क्षमापना है। क्षमापना नफरत को दूर करने का

तप है। क्षमा में अद्भुत शक्ति होती है, क्षमा से परीषहों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। क्षमा से प्रसन्नता का भाव

पर्युषण का शिखर दिन है संवत्सरी, और संवत्सरी का हार्ड है— खमतखामणा।

बढ़ता है। उन्होंने आगे कहा— जैन धर्म का सर्वोच्च पर्व पर्युषण है। पर्युषण का शिखर दिन है संवत्सरी, और संवत्सरी का हार्ड है— खमतखामणा। क्षमापना कुंभ स्नान है, यह अंतःकरण शुद्धि का महत्वपूर्ण माध्यम है। यह पर्व मिथ्यात्व से सम्यक्त्व, अज्ञान से ज्ञान व राग से वैराग्य की ओर जाने का पर्व है। क्षमापना का पर्व एकमात्र जैन समाज द्वारा ही मनाया जाता है। क्षमापना का

अर्थ सिर्फ क्षमा मांगना ही नहीं है, क्षमापना के अर्थ में क्षमा मांगने के साथ देना भी निहित है।

आज क्षमापना दिवस है सभी लोग एक-दूसरे से क्षमापना करें यह आवश्यक है। मतभेद हो सकता है पर मनभेद नहीं रखें। मुनिश्री ने गुरु, मुनिवृंद व श्रावक-श्राविकाओं से खमतखामणा किया।

श्रावक श्राविकाओं ने भी मुनिवृंद से खमतखामणा किया। इस अवसर पर मुनि परमानंद ने कहा— जीवन के सफर में कुछ घटनाएं घट जाती हैं और मनमुटाव हो जाता है। क्षमापना दिवस उन घटनाओं को भूलकर पवित्र भावों से खमतखामणा करने का संदेश देता है।

मुनि कुणाल कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए सभी से खमतखामणा किया।

प्रेक्षाध्यान दिवस पर पूज्यप्रवर की पावन देशना; स्वाध्याय और ध्यान को बताया साधना का पूरक युगल

'Technology' से परे 'Atmalogy' का विकास ही आत्म-साक्षात्कार का मार्ग': आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती के नव-मनोनीत अध्यक्ष गौरव मांडोट ने व्यक्त की भावांजलि

लाडनूँ।

30 सितम्बर, 2026

सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के प्रेरक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की मंगल सन्निधि में आज प्रेक्षाध्यान दिवस का भव्य आयोजन हुआ। इस अवसर पर मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में 'उत्तरज्झयणणि' आगम के आलोक में चतुर्विध धर्मसंघ को पावन पाथेय प्रदान करते हुए महातपस्वी आचार्यश्री ने स्वाध्याय, ध्यान और अध्यात्म विद्या की महत्ता पर ओजस्वी मार्गदर्शन फरमाया।

स्वाध्याय-ध्यान का युगल और जयाचार्य का पावन स्मरण—

१. साधना के दो पूरक अंग : पूज्यश्री ने फरमाया कि साधना के क्षेत्र में स्वाध्याय और ध्यान दोनों का एक अद्भुत युगल है। स्वाध्याय का अपना विशेष महत्व है तो ध्यान की भी अपनी अनूठी उपयोगिता है। ये दोनों एक-दूसरे के परिपूरक बनकर साधक की आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

२. जयाचार्य का साधना व प्रशासनिक पक्ष: पूज्यप्रवर ने आश्विन मास का उल्लेख करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ पट्टधर परम पूजनीय प्रज्ञा पुरुष श्रीमद् जयाचार्य का स्मरण किया, जिनका जन्म आश्विन शुक्ल चतुर्दशी को हुआ था। जयाचार्य महान ज्ञानी, तत्त्ववेत्ता और दूरदर्शी महापुरुष थे। उन्होंने संघ की अनुशासन व्यवस्था सम्बंधी अनेक

प्रेक्षाध्यान केवल एक पद्धति नहीं, बल्कि आत्मा का आत्मा के द्वारा साक्षात्कार करने की परम अध्यात्म विद्या है

—आचार्यश्री महाश्रमण

परिष्कार किए और नई मर्यादाओं व व्यवस्थाओं का सूत्रपात किया, इसलिए उन्हें धर्मसंघ का महान विधिवेत्ता भी कहा जा सकता है।

३. जीवन के अंतिम वर्षों की विशेष साधना: जयाचार्य श्री ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में स्वयं को विशेष स्वाध्याय और ध्यान की साधना में नियोजित किया था। इस रूप में प्रेक्षाध्यान दिवस का गहरा सम्बंध जयाचार्य के साधना जीवन से भी जुड़ा हुआ है।

विपुल साहित्य का निर्माण: आचार्य महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान से सम्बंधित जिस विपुल साहित्य की रचना की, वह आज भी दुनिया भर के साधकों के लिए प्रामाणिक संदर्भ और मार्गदर्शन का काम कर रहा है। तीन असांप्रदायिक व लोक कल्याणकारी उपक्रम: पूज्यप्रवर ने रेखांकित किया कि तेरापंथ धर्मसंघ के तीन प्रमुख कार्यक्रम—अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान पूरी तरह असांप्रदायिक, सर्वजनहिताय और लोक कल्याणकारी हैं।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के मुखारविंद से गुंजित हुआ 'प्रेक्षा ध्यान' का अमर संगीतमय संदेश!

आत्म-साक्षात्कार, प्रेक्षाध्यान के द्वारा ॥ स्वप्न हो साकार, इस अभियान के द्वारा ॥

1. आत्मना आत्मावलोकन, है यही दर्शन अन्तरात्मा में सहज हो, सत्य का स्पर्शन क्षीण हो संस्कार, अन्तर्धान के द्वारा ॥
2. मानसिक संतुलन, जागृति और चित समाधि निकट आती दूर जाती, व्याधि आधि उपाधि। प्रेम का विस्तार, निज संधान के द्वारा ॥
3. बदल जाते हैं रसायन, ग्रन्थियों के स्राव बदलते व्यवहार सारे, बदलते हैं भाव। बदलता संसार, आनापन के द्वारा ॥
4. समस्या आवेग की है विकटतम जग में आदतों की विवशता है, व्याप्त रग-रग में। हो रहा उपचार, इस अवदान के द्वारा ॥
5. अनुप्रेक्षा और लेश्या, ध्यान कायोत्सर्ग श्वास-प्रेक्षा से धरा पर, उतर आए स्वर्ग हृदय हो अविकार के वल ज्ञान के द्वारा। हृदय हो अविकार 'तुलसी' ज्ञान के द्वारा।

लय - मेरा जीवन कोरा

'आत्मलॉजी' पर बल, संस्थाओं की भूमिका व गीत संगान—

१. तकनीक बनाम अध्यात्म ('आत्मलॉजी'): पूज्यश्री ने फरमाया कि आज तकनीकी सुविधाओं के माध्यम से प्रेक्षाध्यान का प्रसार वैश्विक स्तर पर हो रहा है, किंतु मूल रूप से यह एक गहन अध्यात्म विद्या है। आधुनिक टेक्नोलॉजी केवल एक सपोर्ट (सहयोग) है, मूल रूप से हमारी अपनी अध्यात्म विद्या यानी 'आत्मलॉजी' बढ़नी चाहिए।

२. प्रेक्षाध्यान विकास में संलग्न संस्थाएँ: पूज्यश्री ने फरमाया कि जैन



जयपुर का वह चतुर्मास, जहाँ रचा गया ध्यान का महा-विज्ञान!

1. आचार्यश्री तुलसी की निश्रा व नवीन उन्मेष : आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि प्रेक्षा ध्यान का शुभारंभ नवम अधिशास्ता आचार्य श्री तुलसी के कालखंड में हुआ। उनके नेतृत्व में धर्मसंघ में अनेक क्रांतिकारी प्रयोग आए, जिनमें प्रेक्षा ध्यान का प्रादुर्भाव एक ऐतिहासिक कड़ी है।
2. ऐतिहासिक नामकरण: जयपुर (वि. सं. 2032) विक्रम संवत् 2032 के चतुर्मास में जयपुर की धरा पर इस पद्धति का नामकरण 'प्रेक्षा ध्यान' हुआ और इसे एक वैज्ञानिक तथा सुव्यवस्थित साधना-पद्धति के रूप में स्थापित किया गया।
3. आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी: मुख्य

आधार स्तंभ: आचार्यश्री महाश्रमण जी ने स्पष्ट किया कि यद्यपि शुभारंभ आचार्य तुलसी की निश्रा में हुआ, किंतु इसे वैज्ञानिक पद्धति के रूप में विकसित करने का संपूर्ण श्रेय आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी को जाता है। पूज्य प्रवर ने उन्हें इस साधना का 'माता-पिता' व मुख्य आधार स्तंभ बताया।

4. प्रायोगिक साधना व 'ध्वनि प्रयोग': आचार्य महाप्रज्ञ जी ने 'ध्वनि प्रयोग' व सूक्ष्म ध्यान-तकनीकों को वैज्ञानिक ढंग से विकसित किया। उनके गहरे शोध, प्रयोगात्मक दृष्टिकोण और सरल भाषा ने ही इस प्राचीन ध्यान पद्धति को जन-जन तक पहुँचाया।

विश्व भारती अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साधना का प्रमुख केंद्र है। वर्तमान में जैन विश्व भारती का प्रेक्षा फाउंडेशन, प्रेक्षा इंटरनेशनल, अध्यात्म साधना केंद्र (दिल्ली) और प्रेक्षा अकादमी जैसी संस्थाएँ प्रेक्षाध्यान के वैश्विक विकास और उन्नयन में अपना निरंतर योगदान दे रही हैं।

३. गीत संगान व संरक्षण का आह्वान: कार्यक्रम के दौरान पूज्य आचार्यश्री ने स्वयं 'आत्म साक्षात्कार प्रेक्षाध्यान...' गीत का संगान किया। पूज्यश्री ने फरमाया कि प्रेक्षाध्यान हमारे

धर्मसंघ का एक उत्कृष्ट उपक्रम है। इससे जुड़े चारित्रात्माएँ और साधक अपने परिश्रम, चिंतन व मंथन का योगदान देते रहें तथा इसके संरक्षण व विस्तार के प्रति हमेशा जागरूक रहें।

नव-मनोनीत अध्यक्ष की भावाभिव्यक्ति: प्रवचन के उपरांत जैन विश्व भारती के नव-मनोनीत अध्यक्ष गौरव मांडोट ने पूज्य आचार्यश्री के चरणों में अपनी भावपूर्ण अभिव्यक्ति प्रस्तुत की और संस्था के दायित्वों को निष्ठापूर्वक निभाने का संकल्प व्यक्त किया।

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी की जन्मस्थली लाडनूँ में 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' का भव्य शुभारंभ

आचार्य भिक्षु के दृष्टान्तों में निहित है अणुव्रत और संयम का महान संदेश : आचार्यश्री महाश्रमण

विद्यार्थियों और जनसमूह को दिलाई संकल्प-त्रयी की धारणा

लाडनूँ।

01 अक्टूबर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' का गरिमापूर्ण शुभारंभ हुआ। अणुव्रत के प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी की ऐतिहासिक जन्मभूमि लाडनूँ के सुधर्मा सभा भवन में आयोजित मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर ने 'अणुव्रत प्रेरणा दिवस' के अवसर पर चतुर्विध धर्मसंघ को ओजस्वी पाथेय प्रदान किया।

व्यवसाय हो या राजनीति— जीवन के हर क्षेत्र में व्यक्ति का व्यवहार धर्म से अनुप्राणित होना चाहिए

—आचार्यश्री महाश्रमण

व्यवहार में धर्म का समावेश और आत्मा का हित—

१. साधु और गृहस्थ का आचरण: पूज्यप्रवर ने आगम के आलोक में सम्बोधित करते हुए फरमाया कि साधु का व्यवहार क्षमा, मार्दव, आर्जव और मुक्ति आदि धर्मों



से परिपूर्ण होना चाहिए। साधु के साथ-साथ गृहस्थों का जीवन और व्यवहार भी धर्म से भावित होना अनिवार्य है।

२. प्रत्येक क्षेत्र में धर्म प्रभावित व्यवहार: (शेष पेज 17 पर)

न जेल, न कानून... फिर किस ताकत ने बदल डाला चोर, कसाई और कुशीली का जीवन?

अणुव्रत आंदोलन का मूल दर्शन किसी व्यक्ति को डराना या उस पर बंदिशें थोपना नहीं, बल्कि उसके भीतर छिपे विवेक को जगाकर उसे 'अधर्म' से धर्म की ओर मोड़ना है। आचार्यश्री ने आचार्य भिक्षु के जीवन से जुड़े तीन ऐतिहासिक दृष्टान्तों के माध्यम से अणुव्रत की इसी युगांतरकारी शक्ति को उजागर किया है—

प्रसंग 1: चोरों का हृदय परिवर्तन : अंधकार से सदाचार की ओर :

प्रसंग : एक शांत रात्रि में मुनिश्री अपनी साधना और स्वाध्याय में लीन थे, तभी पास की एक दुकान में चोरी की नीयत से कुछ चोर घुसे। साधु की करुणा: मुनि ने न तो भय दिखाया और न ही क्रोध किया। उन्होंने निडर होकर अत्यंत शांति से उनसे संवाद किया और चोरी के दुष्परिणामों व कर्म-बंधन का मार्मिक समझाया।

परिणाम : संतों की अमृतमयी वाणी से चोरों के भीतर का विवेक जाग उठा। उन्होंने कुमार्ग छोड़कर आजीवन चोरी न करने का 'अणुव्रत' स्वीकार किया और अपराधी से एक चरित्रवान नागरिक बन गए।

प्रसंग 2: कसाइयों का बोध: हिंसक वृत्ति से अहिंसा का संकल्प:

प्रसंग: यात्रा के दौरान संतों का सामना कुछ कसाइयों से हुआ। उनकी जीविका और हिंसक काम को देखकर मुनियों ने उनसे आत्मीय संवाद स्थापित किया।

अहिंसा का उपदेश : बिना किसी अपमान या डांट-फटकार के, संतों ने उन्हें समझाया कि निरपराध जीवों की हत्या महापाप है और इसका फल आत्मा को भुगतना पड़ता है। परिणाम: वाणी का प्रभाव ऐसा हुआ कि कसाइयों को अपनी मूल का अहसास हो गया। उन्होंने पशु-वध जैसा क्रूर व्यवसाय हमेशा के लिए त्याग कर अहिंसक जीवन अपनाने का संकल्प लिया।

प्रसंग 3 : कुशील का त्याग : संयम और चरित्र की स्थापना—

प्रसंग: इस घटना में संतों ने एक ऐसे व्यक्ति को समार्ग दिखाया, जो कुशील (अनैतिक व असंयमित आचरण) के दलदल में फंसा हुआ था। संयम का संदेश: मुनियों ने उसे कुशील के दुष्परिणामों से परिचित कराया और जीवन में शील व आत्म-नियंत्रण का महत्व समझाया। परिणाम: उस व्यक्ति ने अनैतिकता का त्याग कर संयमी जीवनशैली अपनाई, जो यह साबित करता है कि अणुव्रत केवल बुराई छुड़ाने ही नहीं, बल्कि जीवन में चरित्र की नींव भी रखता है।

आचार्यश्री का संदेश :

'ये तीनों दृष्टान्त—चोर, कसाई और कुशील के त्याग—यह सिद्ध करते हैं कि अणुव्रत आंदोलन का मूल मंत्र किसी संप्रदाय की सीमा में बंधना नहीं, बल्कि हर इंसान को बुराई के मार्ग से हटाकर एक सदाचारी, अहिंसक और नैतिक मानव बनाना है।'

अणुव्रत सप्ताह के दूसरे दिन 'अहिंसा दिवस' पर सुधर्मा सभा में पूज्यप्रवर का ओजस्वी सम्बोधन

व्यापार में ईमानदारी और परिवार में सहिष्णुता ही है व्यावहारिक अहिंसा : आचार्यश्री महाश्रमण

दिल्ली चातुर्मास 2027 के प्रवेश की पावन तिथि : आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी-16 जुलाई 2027 की घोषणा

लाडनू।

02 अक्टूबर, 2026

जन-जन को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का अमर संदेश देने वाले जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' का द्वितीय दिवस 'अहिंसा दिवस' के रूप में गरिमामय माहौल में समायोजित हुआ। सुधर्मा सभा भवन में आयोजित मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर ने चतुर्विध धर्मसंघ को पावन अमृत देशना प्रदान करते हुए अहिंसा, अनेकांत और व्यावहारिक प्रामाणिकता पर व्यापक दिशा-निर्देश फरमाया।

अशांति का निवारण, विकास और आचार्य महाप्रज्ञ का ऐतिहासिक संदर्भ—

१. अहिंसा : शांति और विकास का आधार : पूज्यप्रवर ने फरमाया कि अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत आज का दिवस 'अहिंसा दिवस' है। अहिंसा एक ऐसा शाश्वत तत्त्व है, जिसके बिना समाज में अशांति फैलती है। यदि शांति और प्रगति चाहिए, तो अहिंसा सबसे प्रमुख घटक है। यदि दो राष्ट्रों के बीच युद्ध या अशांति हो तो वे विकास की जगह अवनति की ओर चले जाते हैं।

२. गुजरात की अशांति में आचार्य महाप्रज्ञ की अहिंसा यात्रा : पूज्यश्री ने परम पूजनीय आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा की गई ऐतिहासिक 'अहिंसा यात्रा' का स्मरण करते हुए फरमाया कि गुजरात में जब अशांति का माहौल था, तब आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने वहाँ की धरा पर कदम रखा था। पूज्य महाप्रज्ञ जी ने संदेश दिया था कि यदि शांति से रहना है और विकास की ऊँचाइयों को छूना है तो अहिंसा अनिवार्य है। हिंसा केवल विनाश और पतन लाती है।

३. साधु और गृहस्थ का अहिंसा व्रत : पूज्यश्री ने फरमाया कि साधु का जीवन पूर्णतः अहिंसक होता है। उसे मन, वचन, काया (कृत, कारित,

अनुमोदना) से हिंसा का सर्वथा वर्जन रखना चाहिए। जैन आगमों में अहिंसा का अत्यंत सूक्ष्म व निपुण विवेचन मिलता है। साधु के साथ-साथ गृहस्थों को भी अपने जीवन में अधिकाधिक अहिंसा की भावना रखनी चाहिए।

अनेकांतः विचारों की अहिंसा और अनेकांतवाद का सही मर्म—

१. विचारों में दुराग्रह का त्याग : पूज्यप्रवर ने फरमाया कि जैन दर्शन के 'अनेकांत' में अहिंसा का बहुत गहरा दर्शन छिपा है। हमारे विचारों में दुराग्रह नहीं होना चाहिए। दूसरों के विचारों को भी यथा-औचित्य सुनने और समझने की उदारता होनी चाहिए। किसी भी ग्रंथ, पंथ या संत के पास यदि कोई अच्छी बात मिले तो उसका निसंकोच सम्मान करना चाहिए। यही विचारों की अहिंसा है।

२. अनेकांत संशयवाद नहीं, यथार्थवाद है : आचार्यश्री ने स्पष्ट फरमाया कि अनेकांत का अर्थ यह कदापि नहीं है कि जो कुछ कहा जा रहा है वह सब सही है। अनेकांत संशयवाद (Skepticism) नहीं है, बल्कि यह 'यथार्थवाद' है, जहाँ हर बात को उसकी उचित अपेक्षा (Perspective) से देखा जाता है। मूल अहिंसा आत्मा में विद्यमान है—जो अप्रमत्त (जागरूक) है वह अहिंसक है और जो प्रमत्त है वह हिंसक है।

३. व्यापार व परिवार में सहिष्णुता : पूज्यश्री ने फरमाया कि अणुव्रत व्यवसाय में ईमानदारी और पारिवारिक जीवन में सहिष्णुता की प्रेरणा देता है। अहिंसा का अर्थ केवल शारीरिक कष्ट न देना ही नहीं, बल्कि अपने विचारों, व्यवसाय और व्यवहार में ईमानदारी व समता अपनाना है। अहिंसा कार्यों का नहीं, बल्कि शौर्य और अभय का मार्ग है।

दिल्ली चातुर्मास २०२७ की तिथि घोषित व गीत संगान—

१. १६ जुलाई २०२७ को दिल्ली चातुर्मासिक प्रवेश : आगामी वर्ष २०२७ के दिल्ली चातुर्मास के संदर्भ में दिल्ली से पधारे विशाल श्रावक-श्राविका



”

अहिंसा कायरता नहीं, शौर्य का मार्ग है। जब विचारों में उदारता और व्यापार में ईमानदारी उतरती है, तभी जीवन पावन बनता है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

समाज की उपस्थिति में पूज्य आचार्यश्री ने चातुर्मासिक प्रवेश की पावन तिथि १६ जुलाई २०२७ (आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी) निर्धारित फरमाई। उल्लेखनीय है कि यह पावन तिथि आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु का बोधि दिवस एवं युवाचार्य मनोनयन दिवस भी है।

२. 'जय हे, जय जीवन दाता...' गीत संगान : प्रवचन के दौरान पूज्य आचार्यश्री ने अहिंसा को शक्ति स्वरूपा माता के रूप में सम्बोधित करते हुए 'जय हे, जय जीवन दाता... सम भाव सुधा का सिंचन दो, अमिताभ अहिंसा माता' गीतिका का ओजस्वी संगान किया, जिसने सम्पूर्ण सुधर्मा सभा को अहिंसा के पावन भावों से सराबोर कर दिया।

विचार अभिव्यक्ति एवं श्रद्धा अर्पणः

१. दिल्ली समाज की भावाभिव्यक्ति : आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति (दिल्ली) के अध्यक्ष कन्हैयालाल पटवारी ने दिल्ली के सम्पूर्ण श्रावक-श्राविका समाज की ओर से पूज्यश्री के चरणों में भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। उन्होंने दिल्ली में २०२७ के

क्या 'सच' में 'सच' से प्यार है हमें... या सिर्फ अपनी बात सही साबित करनी है...?

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने वैचारिक अहिंसा और 'अनेकांत' के गूढ़ सिद्धांत को अत्यंत सरल एवं व्यावहारिक धरातल पर प्रस्तुत करते हुए यह पावन प्रेरणा प्रदान की—

१. पूर्वाग्रह से मुक्ति: दुराग्रह का त्याग: हमारे पास अपने विचार होने चाहिए, किंतु उनके प्रति कोई दुराग्रह (ज़िद) नहीं होना चाहिए। विवेकशील व्यक्ति वही है जो अपने दृष्टिकोण के साथ-साथ दूसरों के विचारों को भी यथा-अवसर और सम्यक् दृष्टि से समझने का प्रयास करता है।

२. सत्य का सम्मान: जहाँ से मिले, सहज स्वीकार : यदि किसी के विचार में प्रामाणिकता, तर्क और दम है, तो उसे सहज स्वीकार करने की उदारता होनी चाहिए। यह सोचना कि 'यह विचार मेरा नहीं है, इसलिए नहीं मानूँगा'—अज्ञानता है। सत्य चाहे किसी बच्चे से मिले,

पूज्य प्रवर के उद्बोधन के मुख्य मार्गदर्शक बिंदु: गुरु-विनय और संकल्प का अमर आदर्श:

१. संकल्प की पूर्णता : युवाचार्य श्री ने कहा कि आचार्य प्रवर ने वर्ष 2022 में 'शासन माता' (साध्वीप्रमुखा जी) को दर्शन देने का जो पावन संकल्प लिया था, उसे एक लंबी पदयात्रा कर पूर्ण किया।

२. बड़ों के प्रति अनन्य विनय : इतने सर्वोच्च पद पर होने के बावजूद पूज्य गुरुदेव ने 'शासन माता' के प्रति जिस अगाध विनय और आदर भाव का परिचय दिया, वह पूरे धर्म संघ और मानव जाति के लिए सदियों तक प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

३. ऐतिहासिक दृष्टि : युवाचार्य श्री ने इसे एक 'ऐतिहासिक घटना' बताते हुए संदेश दिया कि बुजुर्गों और बड़ों के प्रति हमारा दृष्टिकोण हमेशा पूर्ण आदर और समर्पण का होना चाहिए।

त्याग, व्रतारोहण और दीक्षा की प्रेरणा:

१. व्रतों का अंगीकार : युवा वर्ग और परिवारों

ग्रंथ से, पंथ से या अन्य संत से, उसे सहज भाव से ग्रहण करना ही प्रज्ञावान होने का लक्षण है।

३. 'कीचड़ में हीरा': स्रोत नहीं, सार देखें: पूज्य प्रवर ने एक मार्मिक उदाहरण देते हुए समझाया कि यदि कीचड़ में हीरा पड़ा हो, तो समझदार व्यक्ति कीचड़ की उपेक्षा कर केवल हीरा उठा लेता है। ठीक वैसे ही, बात कहने वाले का पद या उम्र देखने के बजाय उसके 'तथ्य की महत्ता' को देखकर अच्छाई को अपनाना चाहिए।

४. वैचारिक उदारता ही वास्तविक 'अहिंसा': बिना किसी ठोस कारण के दूसरों के विचारों का खंडन करना या उन पर आक्षेप लगाना अहिंसक व्यवहार नहीं है। वैचारिक अहिंसा का अर्थ है—दूसरों के दृष्टिकोण का सम्मान करना और असहमति होने पर भी बिना अपमान किए शालीनता से अपनी बात रखना।

"शासनमाता" के प्रति वो अगाध विनय... और दिल्ली के नाम युवाचार्य श्री का महा-संदेश...

दिल्ली के श्रावक समाज को संबोधित करते हुए युवाचार्यश्री महावीर कुमार जी ने आगामी चातुर्मास (2027) और मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर संपूर्ण समाज को आध्यात्मिक रूप से सजग रहने की प्रेरणा दी।

पूज्य प्रवर के उद्बोधन के मुख्य मार्गदर्शक बिंदु: गुरु-विनय और संकल्प का अमर आदर्श:

१. संकल्प की पूर्णता : युवाचार्य श्री ने कहा कि आचार्य प्रवर ने वर्ष 2022 में 'शासन माता' (साध्वीप्रमुखा जी) को दर्शन देने का जो पावन संकल्प लिया था, उसे एक लंबी पदयात्रा कर पूर्ण किया।

२. बड़ों के प्रति अनन्य विनय : इतने सर्वोच्च पद पर होने के बावजूद पूज्य गुरुदेव ने 'शासन माता' के प्रति जिस अगाध विनय और आदर भाव का परिचय दिया, वह पूरे धर्म संघ और मानव जाति के लिए सदियों तक प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

३. ऐतिहासिक दृष्टि : युवाचार्य श्री ने इसे एक 'ऐतिहासिक घटना' बताते हुए संदेश दिया कि बुजुर्गों और बड़ों के प्रति हमारा दृष्टिकोण हमेशा पूर्ण आदर और समर्पण का होना चाहिए।

त्याग, व्रतारोहण और दीक्षा की प्रेरणा:

१. व्रतों का अंगीकार : युवा वर्ग और परिवारों

में त्याग की चेतना जागृत कर श्रावक के बारह व्रतों को धारण करना।

२. अनगर धर्म (दीक्षा) का भाव : मुमुक्षु भाव की महिमा बताते हुए उन्होंने प्रेरित किया कि श्रावक अपने भीतर ऐसा उत्कृष्ट भाव विकसित करें कि इस जन्म में—या कम से कम आगामी जन्म में—वे साधु दीक्षा के पथ को अपना सकें।

कषाय-मुक्ति : 'हलुकर्मी' बनने का अमर संदेश:

१. आंतरिक शुद्धि : क्रोध, मान, माया और लोभ (चारों कषायों) का शमन कर स्वयं को 'हलुकर्मी' (कर्मों से हल्का) बनाना।

२. मैत्री और अहिंसा : कषायों को कम करके ही भीतर सच्चा धर्म उतरेगा, जिससे जीवन की विवशता और तनाव समाप्त होंगे।

दिल्ली से सुदूर विश्व तक शांति का प्रसार:

१. अहिंसा के रंग में दिल्ली : आचार्य प्रवर के प्रवास से पूरा दिल्ली तेरापंथ, जैन धर्म, अहिंसा, मानवता और शांति के रंगों में रंग जाएगा।

२. युद्ध के माहौल में शांति वाणी : देश की राजधानी से गुंजने वाली आचार्य श्री की अहिंसक वाणी पूरे विश्व तक पहुंचे, ताकि वैश्विक अशांति और युद्ध के वातावरण में भी शांति और भाईचारे का निर्माण हो सके।

कार्यक्रम में लाडनू नगर पालिका

अध्यक्ष परवीन सिसोदिया ने भी पूज्य गुरुदेव के दर्शन कर अपनी भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी।